इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में भोपाल के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को श्री दिगम्बर जैन तीर्थ स्थल कमेटी, नसीराबाद राजस्थान भारतीय डाक विभाग के भोपाल परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		नवम्बर 2020	
16	सोमवार	द्वितीया	अनुराधा
17	मंगलवार	तृतीया	ज्येष्ठा
18	बुधवार	चतुर्थी	मूल
19	गुरुवार	पंचमी	पूर्वाषाढ़
20	शुक्रवार	षष्ठी	उत्तराषाढ़
21	शनिवार	सप्तमी	श्रवण
22	रविवार	अष्टमी	धनिष्ठा
23	सोमवार	नवमी	शतभिषा
24	मंगलवार	दशमी	पूर्वाभाद्रपद
25	बुधवार	एकादशी	उत्तराभाद्र
26	गुरुवार	द्वादशी	रेवती
27	शुक्रवार	द्वादशी	अश्विनी
28	शनिवार	त्रयोदशी	भरणी
29	रविवार	चतुर्दशी	कृत्तिका
30	सोमवार	पूर्णिमा	रोहिणी दिन-रात
		दिसम्बर 2020	
1	मंगलवार	प्रतिपदा	रोहिणी
2	बुधवार	द्वितीया	मृगशिरा
3	गुरुवार	तृतीया	आर्द्रा
4	शुक्रवार	चतुर्थी	पुनर्वसु
5	शनिवार	पंचमी	पुष्य
6	रविवार	षष्ठी	आश्लेषा
7	सोमवार	सप्तमी	मघा
8	मंगलवार	अष्टमी	पूर्वाफाल्गुनी
9	बुधवार	नवमी	उत्तराफाल्गुनी
10	गुरुवार	दशमी	हस्त
11	शुक्रवार	एकादशी/द्वादशी	चित्रा-स्वाती
12	शनिवार	त्रयोदशी	विशाखा
13	रविवार	चतुर्दशी	अनुराधा
14	सोमवार	अमावस	ज्येष्ठा
15	मंगलवार	प्रतिपदा	मूल

तीर्थंकर कल्याणक

16 नवम्बर : भगवान पुष्पदंत ज्ञान कल्याणक
20 नवम्बर : भगवान नेमिनाथ गर्भ कल्याणक
26 नवम्बर : भगवान अरनाथ ज्ञान कल्याणक
30 नवम्बर : भगवान संभवनाथ ज्ञान कल्याणक
10 दिसम्बर : भगवान महावीर तप कल्याणक
15 दिसम्बर : भगवान पुष्पदंत जन्म-तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 नवम्बर : मुक्तावली
22 नवम्बर : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
25 नवम्बर : मुक्तावली
30 नवम्बर : अष्टान्हिका व्रत पूर्ण, रोहिणी व्रत
01 दिसम्बर: रोहिणी व्रत
11 दिसम्बर: मुक्तावली
15 दिसम्बर: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

16 नवम्बर : 06/44 बजे से 14/37 बजे तक ।
20 नवम्बर : 09/23 बजे से 30/48 बजे तक ।
21 नवम्बर : 06/48 बजे से 09/54 बजे तक ।
24 नवम्बर : 15/32 बजे से 30/50 बजे तक ।
26 नवम्बर : 06/51 बजे से 30/52 बजे तक ।
27 नवम्बर : 06/52 बजे से 24/23 बजे तक ।
30 नवम्बर : 06/54 बजे से 30/54 बजे तक ।
02 दिसम्बर : 06/55 बजे से 30/56 बजे तक ।
03 दिसम्बर : 12/22 बजे से 30/56 बजे तक ।
04 दिसम्बर : 06/56 बजे से 13/39 बजे तक ।
09 दिसम्बर : 12/33 बजे से 31/00 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

विद्यारंभ मुहूर्तः नवम्बर-19, दिसम्बर-2,6,10,11
मशीनरी प्रारंभ :नवम्बर-16,26,27, दिसम्बर-10,11
दुकान प्रारंभः नवम्बर-16,20,25,26,27,30 दिसम्बर-2,10,11
वाहन खरीदनेः नवम्बर-26,27, दिसम्बर-2,5,10,11

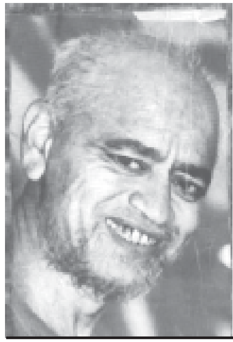

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 254 • नवम्बर 2020
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

लेख

• जन-जन के प्रेरणा स्रोत आचार्य विद्यासागर 08
• सफलता का विश्वासः आत्मविश्वास 11
• चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागरजी की मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष में वार्ता 12
• वीतराग विज्ञान यथार्थ धर्म 14
• खुद को हैप्पीमैन बनाइए, एंग्रीमेन नहीं 15
• आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 17
• मोटापा घटाइये-सुडौल बनिये 20
• बोतल पानी हानिकारक 22
• पाकिस्तान एक घायल सांप 23
• वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं सफदरजंग अस्पताल 37
• नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्ट्य 39
• प्रवचनः कंकड़ डूबता-लकड़ी तैरती क्यों 41
• बाहरी प्रकाश के साथ अंतः करण भी प्रकाशित करें 42
• जैन सेनापति (क्रमशः अगले अंक से) 49
• विश्व डायबिटीज (मधुमेह)दिवस डायबिटीज रोग कारण व निवारण 55

बाल कहानी

• रूठी को मना लेंगे 59

कविता

• ढहते हुए मकां की दीवार जिन्दगी 10
• कर्मों का निर्झरण 19
• ज्ञान दीप 21
• चाँदी सी चंदेरी 25
• बाड़ी के बड़े बाबा 27
• मधुवन में पार्श्व प्रभु राज रे 38
• जिन्दगी में कुछ पल हंस पाते हैं लोग 48
• सब स्वास्थ्य के है साथी 57

कहानी

• हथकरघा 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 10
चलो देखें यात्रा : 25 • आगम दर्शन :26 • कैरियर गाइड : 27 • पुराण प्रेरणा : 29 • माथा पच्ची : 29
दुनिया भर की बातें : 30 •दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 37 • हमारे गौरव : 48 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य

ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत कुछ माह से एल.ए.सी. पर चीन अपनी धमकी की भाषा का प्रयोग कर रहा है। भारत बातचीत की पहल को प्राथमिकता देते हुए युद्ध की स्थिति को टाल रहा है। इस पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था **''भारत हमेशा शांति का प्रतीक रहा है।''** जैसी की रक्षामंत्री ने भी बताया की हम एल.ए.सी पर होने वाले तनाव को पहले बातचीत से ही हल करना चाहते हैं। पर दूसरी तरफ अंदेशा यह भी है कि चीन इस विवाद का हल नहीं चाहता। चीन की नीति सीमा विस्तार की है। भारत न तो अपनी सीमा बढ़ायेगा न घटायेगा। कोरोना काल और आर्थिक मंदी के बाद भी सरकार को खुद पर और अपनी सेना पर भरोसा है कि हम किसी भी दबाव में नहीं है। और हर तरह से सक्षम हैं।

रक्षामंत्री जी ने देश प्रेम की नींव को जहां मजबूत किया है वहीं सेना का भरोसा जताकर सेना का मनोबल बढ़ाया है। चीन का संकट हमें कम दुख देता है उसका भ्रम ज्यादा। अतः हमें चीन की धमकी भरे भ्रम से उभरना होगा और आत्मबल से उसका सामना करना होगा।

अंशु जैन, सागर

• सम्पादक महोदय, अक्टूबर 2020 के संस्कार सागर अंक में आचार्य पूज्यपाद द्वारा रचित जैनेन्द्र व्याकरण का परिचय प्राप्त हुआ संस्कृत व्याकरण की रचना कोई जैनाचार्य ने भी की है। इस तथ्य की जानकारी जब मुझे मिली तब मेरी खुशी में पंख लग गये। संस्कृत व्याकरण के माध्यम से यह पता लगा की आचार्य पूज्यपाद जी ने जैनेन्द्र व्याकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा को व्यवहारिक रूप में और सैद्धांतिक रूप में समृद्ध बनाने का एक सटीक प्रयास किया है। उनके इस प्रयास की जितनी भी सराहना की जावेगी वह कम होगी। समझा तो यह भी जाता है कि आचार्य पूज्यपाद जी ने भाषाज्ञान को दिशा देने को सफल प्रयास किया है। प्रत्यय और उपसर्ग के माध्यम से शब्द निर्माण करने की उनकी एक अनूठी कला रही है। संस्कृत व्याकरण के क्षेत्र में जैनेन्द्र व्याकरण का विशेष स्थान है। इस व्याकरण का परिचय प्रकाशित करके एक महान कार्य किया है। जिसकी हम सबको सराहना करनी चाहिये।

ब्र. लक्ष्मी जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर मासिक पत्रिका के अंक अक्टूबर 2020 में नीति शिक्षा कहानी को पढ़ने का अवसर मिला। कहानी की कथा वस्तु रोचक मार्मिक कल्पना है। सम्मेदशिखर की समस्याओं पर चर्चा की गई वहीं इन समस्याओं का समाधान भी सुझाया गया है। इस कहानी के माध्यम से लेखक चारित्र निर्माण की प्रभावी प्रेरणा दी है। साथ ही हिन्दी भाषा को रोजगार मूलक सिद्ध करने के जिन तर्कों को प्रस्तुत किया गया है वे तर्क बहुत तीखे और सशक्त हैं। इस कहानी में नई शिक्षा नीति के महत्व को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया है कहानी सरल सुबोध प्रांजल शैली में होने से ग्राह्य और पठनीय है।

राजकुमार जैन, इन्दौर

भक्ति तरंग
अज्ञान से पतन

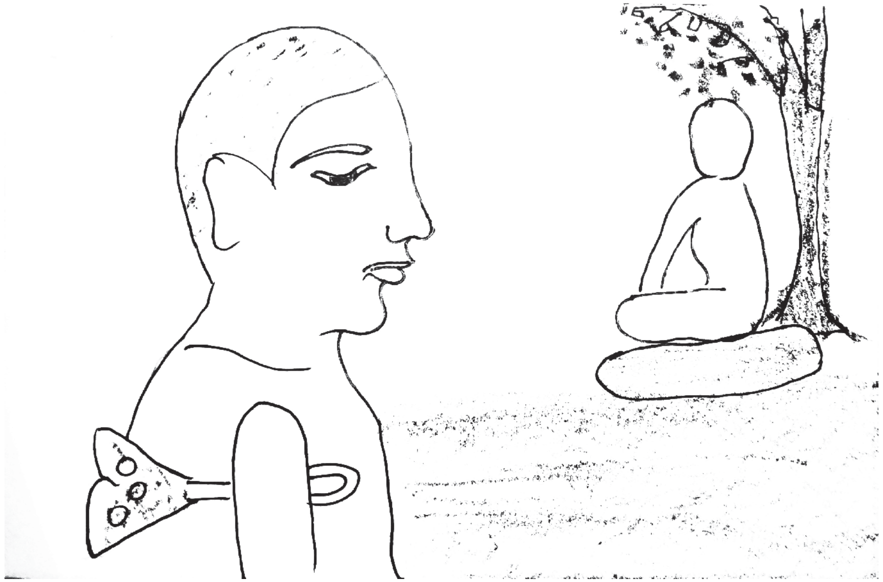

अरे हो अज्ञानी तूने कठिन मनुषभव पायो ।
लोचन रहित मनुष के कर में, ज्यों अमोल मणि आयो ।।
सो तू खोवत विषयनमाहीं, धरम नहीं चित लायो ।
भागचन्द्र उपदेश मन अब, जो श्री गुरु फरमायो ।।

हे अज्ञानी ! यह मनुष्यभव तुझे बहुत कठिनता से मिला है इसका उपयोग कर ले, लाभ ले ले।

जैसे-अनमोल दुर्लभ मणि का मिलना बहुत कठिन होता है, यदि वह किसी अंधे व्यक्ति, जिसे कुछ दिखाई नहीं देता है, कि हाथ में सहज ही, बिना किसी प्रयास के ही आ जाये, उसे सुलभ हो जाये वैसे ही तुझे अचानक, बिना किसी प्रयास के ही यह मनुष्य भव मिल गया है।

तू इस मनुष्य भव को इन्द्रिय-विषयों में रत होकर गँवा रहा है, खो रहा है, व्यर्थ कर रहा है। तूने अपने चित्त को धर्म-साधना में किंचित् भी नहीं लगाया।

भागचन्द्र जी कहते हैं कि हे मनुज ! अब तो तू गुरु की आज्ञा को समझ, गुरु की आज्ञा का पालन कर गुरु की आज्ञा मान और उनके अनुसार आचरण कर।

संस्कार प्रवाह

पुरानी सोला विधि पर आयें रोकें कोरोना

कोरोना वायरस को रोकने में विश्व की सभी शक्तियाँ अपने हाथ खड़े कर चुकी हैं और अंत में वे यही कहती हैं कि कोरोना रोकने के उपाय तीन हैं। एक मास्क, दूसरी सोशल डिस्टेटिंग, तीसरी शुद्धिकरण। शुद्धिकरण पर प्रायः ज्यादा जोर दिया जाता है। इसके अंतर्गत घर में प्रवेश के पहले पैर धोना, बाहर घूम कर आने के बाद कपड़े परिवर्तित करके भोजन आदि कार्य संपन्न करना। हर बीस मिनट में 20 सेकेण्ड के लिये हाथ धोना। अनावश्यक किसी व्यक्ति-वस्तु को न छूना।

तो आयें अब हम देखें जो पहले हमारे घरों में सोला पद्धति चलती थी उसके अंतर्गत क्या होता था। सर्वप्रथम हमारी मातायें बहनें अपनी भोजनशाला में प्रवेश करने से पहले अपने कपड़ों को बदलती थी। अपने हाथ पैरों को शुद्ध करने के बाद धुले हुये कपड़े जो किसी के भी संपर्क में न आये हों उनको धारण करके ही वे भोजनशाला में प्रवेश लेती थी। भोजन बनाने के पहले उपकरणों और बर्तनों का शुद्धिकरण किया जाता था। साथ ही भोजनशाला का शुद्धिकरण भी दो प्रकार से किया जाता है। 1. झाडू लगाकर 2. पोंछा लगाकर पोंछा के पानी में फिटकरी का इस्तेमाल भी किया जाता था। इससे अच्छा शुद्धिकरण सेनिटाइजेशन और कोई हो नहीं सकता हैं। इस प्राचीन पद्धति से यदि आज भी हमारा परिवार चलने लगे तो निश्चित है कोरोना से बचा जा सकता है।

कोरोना एक भयावह बीमारी अवश्य हैं किंतु शुद्धिकरण उसका सबसे बड़ा इलाज है। परंतु शुद्धिकरण अपनाना आज तक युवा वर्ग को अनावश्यक प्रतीत होता रहा है। किंतु इस शुद्धिकरण का महत्व अब समाज और परिवार के सभी वर्ग ने बखूबी स्वीकार किया है। इस शुद्धिकरण की पद्धति में अहिंसा की प्राथमिकता है और करूणा का व्यवहारिक रूप है। साथ ही साथ संक्रमण को रोकने के लिये जैन परिवारों की सोला विधि अमूल शस्त्र का काम करेगी इसका महत्व समझने में देर करने वाले लोग संक्रमक बीमारी कोरोना वायरस को रोकने में तो असफल होंगे साथ ही वे आर्थिक संतुलन बिगड़ने में अपनी भूमिका अदा करेंगे। अब हमें देखना यह है कि हम अपने परिवार की प्राचीन सोला पद्धति को कितनी शीघ्रता से अपनाते हैं और कोरोना जैसी बीमारी को दरवाजे के बाहर से ही भगा देते हैं।

जन-जन के प्रेरणा स्त्रोत आचार्य विद्यासागर

❊ उमेश जैन (नैकोरा), ललितपुर ❊

आचार्य विद्यासागर जी को देश-दुनिया के लोग जानते हैं उनके संघर्ष और तप से पूरी दुनिया प्रभावित है। भारत-भू पर अनेक महापुरुष और संत कवि जन्म ले चुके हैं उनकी साधना और कथनी-करनी की एकता ने सारे विश्व को ज्ञान रूपी आलोक से आलोकित किया है अपने जीवनानुभव की वाणी से त्रस्त और विघटित समाज को एक नवीन संबल प्रदान किया है।

आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 30 अक्टूबर 1946 शरद पूर्णिमा को कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा ग्राम में हुआ था। उनके पिता मल्लप्पा व मां श्रीमति ने उनका नाम विद्याधर रखा। कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद ने 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रम्हचर्य व्रत ले लिया। इसके बाद जो कठिन साधना का दौर शुरु हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। धार्मिक विचारों से ओत प्रोत संवेदन शील सद्गृहस्थ मल्लपा जी नित्य जिनेन्द्र दर्शन एवं पूजन के पश्चात् ही भोजनादि आवश्यक करते थे। साधु-सत्संगति करने से परिवार में संयम अनुशासन रीति-नीति की चर्या का ही परिपालन होता था।

आप माता-पिता की द्वितीय संतान होकर भी अद्वितीय संतान हैं बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद स्वस्थ परम्परा का निर्वहन करते हुए सात्विक पूर्वक सद्गृहस्थ जीवन-यापन कर रहे हैं। माता-पिता, दो छोटे भाई अनंतनाथ तथा शांतिनाथ एवं बहिनें शांता सुवर्णा भी आपसे प्रेरणा पाकर घर-गृहस्थी के जंजाल से मुक्त होकर जीवन-कल्याण हेतु जैनेश्वरी दीक्षा लेकर आत्म-साधनारत हुए। धन्य हैं वह परिवार जिसमें सात सदस्य सांसारिक प्रपंचों को छोड़कर मुक्ति-मार्ग पर चल रहे हैं इतिहास में ऐसी अनोखी घटना का उदाहरण बिरले ही दिखता है।

विद्याधर का बाल्यकाल घर तथा गाँव वालों के मन को जीतने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से युक्त रहा है खेलकूद के स्थान पर स्वयं या माता-पिता के साथ मन्दिर जाना धर्म-प्रवचन सुनना शुद्ध सात्विक आहार करना मुनि आज्ञा से संस्कृत के कठिन सूत्र एवं पदों को कंठस्थ करना आदि अनेक घटनायें मानों भविष्य में अध्यात्म मार्ग पर चलने का संकेत दे रही थी। आप पढ़ाई हो या गृहकार्य सभी को अनुशासित और क्रमबद्ध तौर पर पूर्ण करते बचपन से ही मुनि-चर्या को देखने उसे स्वयं आचरित करने की भावना से ही बावड़ी में स्नान के साथ पानी में तैरने के बहाने आसन ध्यान लगाना, मन्दिर में विराजित मूर्ति के दर्शन के समय उसमें छिपी विराटता को जानने का प्रयास करना, बिच्छू के काटने पर भी असीम दर्द को हँसते हुए पी जाना, परंतु धार्मिक-चर्या में अंतर ना आने देना, उनके संकल्पवान पथ पर आगे बढ़ने के संकेत थे बाल्यकाल में खेलकूद में शतरंज खेलना शिक्षाप्रद फिल्में देखना, मन्दिर के प्रति आस्था रखना, गिल्ली डंडा खेलना, महापुरुषों और शहीद पुरुषों के तैल चित्र बनाना आदि रुचियाँ आप में विद्यमान थी।

ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर प्रस्फुटित हुआ 20 वर्ष की उम्र जो की खाने-पीने भोगोपभोग या सांसारिक आनन्द प्राप्त करने की होती है तब आप साधु-सत्संगति की भावना को हृदय में धारण कर आचार्य श्री देशभूषण महाराज के पास जयपुर (राजस्थान) पहुँचे, वहाँ अब ब्रह्मचारी विद्याधर उपसर्ग और परीषहों को जीतकर ज्ञान तपस्या और सेवा का पिण्ड प्रतीक बनकर जन-जन के मन

का प्रेरणा स्त्रोत बन गया था। आप संसार की असारता जीवन के रहस्य और साधना के महत्व को पहचान गये थे। तभी तो हष्ट-पुष्ट युवा विद्याधर की निष्ठा दृढ़ता और अडिगता के सामने मोहमाया श्रृंगार आदि घुटने टेक चुके थे। वैराग्य भावना दृढ़वती हो चली, पदयात्री और करपात्री बनने की भावना से आप गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास मदनगंज किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान पहुँचे गुरुवर के निकट सम्पर्क में रहकर लगभग 1 वर्ष तक कठोर साधना के परिपक्व होकर मुनिवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के द्वारा राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी अजमेर में आषाढ़ शुक्ल पंचमी वि.सं. 2025 रविवार 30 जून 1968 ईस्वी को लगभग 22 वर्ष की उम्र में संयम का परिपालन हेतु आपने पिच्छि-कमन्डलु धारण कर संसार की समस्त बाह्य वस्तुओं का परित्याग कर दिया। पूज्य मुनि श्री विद्यासागर महाराज के अब धरती ही बिछौना आकाश ही उड़ौना और दिशायें ही वस्त्र बन गये थे दीक्षा उपरांत गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज की सेवा सुश्रुषा करते हुए आपकी साधना उत्तरोत्तर विकसित होती गयी जब से आज तक अपने प्रति वज्र से कठोर परंतु दूसरों के प्रति नवनीत से भी मृदु बनकर शीत-ताप एवं वर्षा के गहन झंझावातों में भी आप साधना हेतु अडिग-अथक रूप में प्रवर्तमान हैं। श्रम और अनुशासन विनय और संयमतप और त्याग की अग्नि में तपी आपकी साधना गुरु आज्ञा पालन सबके प्रति समता की दृष्टि एवं समस्त जीव कल्याण की भावना सतत् प्रवाहित होती रहती हैं।

गुरुवर आचार्यश्री ज्ञानसागर जी की वृद्धावस्था किंतु सल्लेखना के पहले गुरुवर्य ज्ञानसागर जी महाराज ने आचार्य पद का त्याग आवश्यक जानकर आपने आचार्य पद को मुनि विद्यासागर को देने की इच्छा जाहिर की परंतु आप इस गुरुतर भार को धारण करने के लिये किसी भी हालत में तैयार नहीं हुए। तब आचार्य ज्ञानसागर जी ने सम्बोधित कर कहा कि साधक को अंत समय में सभी पद का परित्याग आवश्यक माना गया है इस समय शरीर की ऐसी अवस्था नहीं है कि मैं अन्यत्र जाकर सल्लेखना धारण कर सकूँ तुम्हें आज गुरु दक्षिणा अपर्ण करनी होगी और उसी के प्रतिफल स्वरूप यह पद ग्रहण करना होगा। गुरु-दक्षिणा की बात सुनकर मुनि विद्यासागर निरूत्तर हो गये। तब धन्य हुई नसीराबाद (अजमेर) राजस्थान की वह घड़ी जब मगसिर कृष्ण द्वितीया संवत् 2029 बुधवार 22 नवम्बर 1972 ईस्वी को आचार्यश्री ज्ञानसागर जी ने अपने करकमलों से आचार्य पद द्वारा मुनि श्री विद्यासागर महाराज को संस्कारित कर विराजमान किया।

कठिन तपस्या: ठंड बरसात और गर्मी से विचलित हुये बिना आचार्यश्री ने कठिन तप किया उनका त्याग और तपोबल आज किसी से छिपा नहीं है इसी तपोबल के कारण सारी दुनिया उनके आगे नतमस्तक है। 50 वर्ष से वे एक महान साधक की भूमिका में हैं उनके बताए गये रास्ते पर चलकर हम देश तथा संपूर्ण मानव जाति की भलाई कर सकते हैं।

कई भाषाओं का ज्ञान : आचार्य पद की उपाधि मिलने के बाद आचार्य विद्यासागर ने देश भर में पदयात्रा। की चतुर्मास, गजरथ महोत्सव के माध्यम से अहिंसा व सद्भाव का संदेश दिया समाज को नई दिशा दी आचार्यश्री संस्कृत व प्राकृत भाषा के साथ हिन्दी मराठी और कन्नड़ भाषा का भी विशेष ज्ञान रखते हैं। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में कई रचनायें भी लिखी है। इतना ही नहीं पीएचडी व मास्टर डिग्री के कई शोधार्थियों ने उनके कार्य में निरंजन शतक, भावना शतक, परीषह जाय शतक, सुनीति शतक और मूकमाटी पर अध्ययन व शोध किया है।

संयम स्वास्थ्य योग

दंत-रोग

1. सूखे तेज पत्तों को बारीक पीसकर हर दूसरे दिन एक बार मंजन करने से दांत चमकने लगते हैं।
2. नींबू के छिलकों को सुखाकर सेंककर पीस लें और मंजन के रूप में काम में ले। इससे दांत सांफ होंगे और सांस की बदबू दूर होगी।
3. हल्दी नमक और सरसों का तेल मिलाकर नित्य मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं।
4. थोड़ी सी हींग को पानी में उबालकर कुल्ला करने से दांत का दर्द मिटता हे।
5. पोले दांत हिलते हो और दर्द होता हो तो हींग पोले दांतों में भरने से दर्द में आराम मिलता है।
6. कीड़े लगे हुए दांत पर दालचीनी का तेल लगाने से दांत के कीड़े दूर हो जाते हैं।
7. पोली हुई सड़ी सुई दांत की पोली जगह में लौंग, कपूर, हींग या दालचीनी पीसकर भर देने से आराम मिलता है।
8. दाढ़ के दर्द में कपूर को रूई में लपेटकर दर्द करने वाले स्थान पर रखने से आराम मिलता है।
9. जीरा को सेंककर खाने से पायरिया के कारण मसूढे की दुर्गन्ध दूर होती है।
10. नींबू का रस मसूढ़ों पर घिसने से दांत में से निकलता मवाद एवं रक्त बंद होता है। एवं मसूढ़े सुदृढ़ होते हैं।

कविता

ढहते हुए मकां की दीवार जिन्दगी

❊ ऐलकश्री सम्यक्त्व सागर जी महाराज ❊

ढहते हुए मकां की दीवान जिन्दगी,
उजड़े हुए चमन में बहार जिन्दगी।
गैरों के लिये नफरत भले न क्यों,
मेरे लिये तो सबसे प्यार जिन्दगी।
आँख वालों के लिये रोशनी भले ही हो,
अंधों के लिये तो अन्धकार जिन्दगी।
महफिलों में रोज जामों में भले छलकें,
भूखे आदमी को पेट का आधार जिन्दगी।
वक्त की वीणा के तारों को छोड़ तू
जन्म और मौत की झनकार जिन्दगी।

सफलता का विश्वास : आत्मविश्वास

❊ ब्र.जिनेश मलैया, इन्दौर ❊

सफलता उसी का वरण करती है जिसके मन मस्तिष्क में आत्मविश्वास सुनिश्चित होता है। सफलता के लिये जब व्यक्ति में अपने कार्य के औचित्य के प्रति विश्वास मजबूत हो जाता है तो यही आत्मविश्वास कहलाता है। आत्मविश्वास के बिना लक्ष्य से भटकना सदैव संभव होता है। लगनशीलता और हौंसले की बुलंदी आत्मविश्वास के आधार पर ही परवान चढ़ती है। जहाँ आत्मविश्वास डामाडोल हो जाता है वहाँ सबसे पहले लगन कमजोर पड़ जाती है। लगन कमजोर पढ़ जाने से योजना की कार्यशाला में हड़ताल हो जाती है। लगन मात्र एक ऐसी चीज है जो योजनाओं को जन्म देती है।

हर श्रेष्ठ कार्य करने में मुश्किलें, बाधायें जरूर आती हैं। जिस कार्य में बाधायें न आयें उस काम के करने में चुनौती जन्म नहीं लेती है। जब बाधायें आती हैं जब चुनौती जन्म ले लेती है। तब चुनौतियों को आत्मविश्वास ही स्वीकार करता है। जिनके पास आत्मविश्वास नहीं होता वे चुनौतियों के सामने एक दिन घुटने टेक देते है। नकारात्मकता उन्हें घेरने लगती है। और वे व्यक्ति दोनों घुटनों के बीच सिर छुपा कर आंसू बहाने लगते हैं। छुप-छुप कर आंसू बहाना बहुत सरल काम होता है, लेकिन चुनौतियों के सामने सीना तान कर खड़े हो जाना और अधरों पर मुस्कान लाकर चुनौतियों से जूझ कर मुस्कुराहट बनायें रखना किसी आत्मविश्वासी का ही कार्य होता है।

अभिव्यक्ति की कला और न्याय पाने की ललक मात्र आत्मविश्वासी को ही होती है। बापू ने भारत को आजादी दिलाने की कसम बड़े आत्मविश्वास के साथ खाई थी। अफ्रीका के रेल्वे कर्मचारियों के द्वारा भारतीयों का अपमान जब बापू के सामने हुआ तब बापू ने आत्मविश्वास के साथ हुंकार भरी थी और उनकी हुंकार 15 अगस्त 1947 को आजादी प्राप्त करने के बाद सफल हुई। सुभाषचंद्र बोस ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा था **तुम हमें खून दो हम तुम्हें आजादी देंगे।** उनके आत्मविश्वास का परिणाम यह आया कि भारत की आजादी में सुभाषचंद्र बोस की भूमिका अद्वितीय रही। साथ ही जितने भी अमर शहीद हुये हैं उन्होंने आत्मविश्वास कम करने वाले लोगों को अपने साथ कभी नहीं रखा।

क्योंकि यह बात सच है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदल देता है। डरपोक की मित्रता आत्मविश्वास को एक दिन कम कर देती है। नकारात्मक सोचने वाले व्यक्ति आत्मविश्वास पर सबसे ज्यादा प्रहार करते हैं।

आत्मविश्वासी व्यक्ति वस्तुस्वरूप का चिंतन करता है। और वस्तु स्वरूप का चिंतन करके संपूर्ण दुख और संकटों से दो-दो हाथ करने को सदैव क्षमता रखता है। जैन धर्म की मेरी भावना से इस आत्मविश्वास को सुदृढ़ करने के लिये कहा है। **कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे** तथा इसी मेरी भावना में अंत में लिखा है **वस्तुस्वरूप विचार खुशी से सब दुख संकट सहा करें।** इन दो उदाहरणों से जीवन जीने की कला और आत्मविश्वास पैदा करने का हुनर प्राप्त होता है। और यही आत्मविश्वास व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। व्यक्ति प्रत्येक कार्य करने और अपने निर्णय पर स्थिर होने की जिम्मेदारी पूर्ण करता है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति राष्ट्र और समाज की दिशा को बदल देता है। अहिंसा और सत्य के प्रयोग में सफल होता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति दुनिया का आदर्श बन जाता है। आत्मविश्वासी जीवन के करीब गहरे विचार और सदाचार की पृष्ठभूमि होता है। आत्मविश्वास से बड़ा कोई और संबल नहीं हो सकता।

चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागरजी की मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष में वार्ता

❊ प्रस्तुतिः पं. सुरेश जैन मारौरा, इंदौर ❊

संसार में सन्मार्ग का निर्माण करने वाले विरले प्राणी ही होते हैं, परंतु जब वह सन्मार्ग एक बार बन जाता है तब उस सन्मार्ग पर चलने वाले असंख्य हो जाते हैं। 19-20वीं शताब्दी में जब जैन धर्म की मुनि आचार्य परंपरा प्रायः विलुप्त सी होती जा रही थी, तब आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने पुनः उस परंपरा दिगम्बर आचार्य, उपाध्याय, साधु को जीवंत कर सन्मार्ग का निर्माण किया। श्रावकों को आगमोक्त मुनि चर्या का प्रकाश प्रदान किया। वर्तमान में दिगंबर जैन संत 1650 से अधिक पीछी धारी साधु साध्वी देशभर में जैन धर्म की प्रभावना करते हुए स्वपर कल्याण में लगे हुये हैं।

20वीं शताब्दी के महानतम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती शान्तिसागरजी महारज जिन्हें गुरुणां गुरु की उपाधि प्राप्त थी। उनसे लगभग 100 वर्ष पहले इस धरती पर जैन मुनियों के दर्शन दुर्लभ थे। दक्षिण भारत में कतिपय मुनिराज मिलते थे, जो छोटे-छोटे ग्रामों में भ्रमण कर अपनी चर्या का परिपालन कर रहे थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में सन् 1872 में कर्नाटक प्रांत के भोजग्राम के निकट छोटे से ग्राम येलगुल में सातगौडा नाम के बालक का जन्म हुआ। दूसरा नाम दामोदर था। जिसने अपनी त्याग-तपस्या के द्वारा सैकड़ों वर्ष के अंधकारमय इतिहास को प्रकाशमान कर दिया।

9 वर्ष की उम्र के सातगौडा ने 40 वर्ष की उम्र तक घर में रहकर अपने माता पिता की सेवा करने के पश्चात् ब्रह्मचर्य व्रत पालते हुए त्यागमार्ग की ओर कदम बढ़ा दिये। सन् 1914 में मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा लेकर शांति सागर नाम पाया, गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ भगवान के चरण साक्षी में स्वयं ऐलक पद प्राप्त किया पुनः मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी से यरनाल में फाल्गुन शुक्ल 13 सन् 1920 में मुनि दीक्षा ग्रहण कर शांतिसागर नाम प्राप्त किया। सन् 1924 में मुनिश्री शांतिसागर जी को समडोली में चतुर्विध संघ के द्वारा बीसवीं शताब्दी के प्रथमाचार्य घोषित किया।

आचार्यश्री की रत्नत्रय साधना अत्यंत कठोर थी, वे शरीर को पराया समझ कर कभी-कभी आहार लेते थे, 35 वर्ष के दीक्षित मुनि अवस्था में 25 वर्ष 9 माह उपवास किए। आपके उपवासों की संख्या 9338 है, पूरे जीवन काल 84 वर्ष की आयु में 37 वर्ष अन्न का त्याग रखा, महाराज इतने दिन निराहार रहें। क्या इस कठोर उग्र तपस्या में आचार्यश्री की कोई बराबरी कर सकता है? नहीं। यह तो उनके विशिष्ट आत्म शक्ति का प्रतीक है और 35 वर्ष की मुनि अवस्था में 20000 मील की पदयात्रा की। कई बार उपसर्ग आये एक बार कोगनोली गुफा में ध्यान मुद्रा में बैठे थे की रात्रि को एक पागल आ गया। उसने पहले भोजन मांगा, खूब चिल्लाया और ईंट के भट्टे से ईंट उठाकर मारी, किंतु शांतिसागर के भावों में विकार की एक लहर भी नहीं आई। सर्प के भी कई उदाहरण आते हैं। बाल्यावस्था एवं ग्रहस्थ जीवन में कभी किसी से कोई झगड़ा नहीं हुआ कठोर वार्तालाप भी नहीं हुआ।

आचार्यश्री शांसिागर जी प्रारंभ से ही बलशाली तथा दयालु थे, अनेक उदाहरण ग्रहस्थ जीवन के मिलते हैं। हल में एक बूढ़े बैल को हटाकर हल में जुत जाते थे, मुनिराजों को कंधे पर बैठाकर नदी पार कराते थे। सम्मेद शिखर यात्रा के समय एक वृद्ध महिला को पीठ पर लादकर

वंदना कराई। ग्रहस्थ जीवन में प्रतिदिन दिगंबर साधुओं को आहार कराकर आहार करते थे।

आपके द्वारा दीक्षित शिष्यगण

श्री 108 वीरसागरजी महाराज	श्री 108 नेमीसागर जी महाराज
श्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज	श्री 108 देवसागरजी महाराज
श्री 108 पायसागरजी महाराज	श्री 108 चंद्रसागरजी महाराज
श्री 108 नमिसागरजी महाराज	श्री 108 पद्मसागरजी महाराज
श्री 108 आदिसागरजी महाराज	श्री 108 श्रुतसागरजी महाराज
श्री 108 कुंथुसागरजी महाराज	श्री 108 सुधर्मसागरजी महाराज
श्री 108 नेमीसागरजी महाराज	श्री 108 धर्मसागरजी महाराज
श्री 108 अनंतकीर्तिजी महाराज	श्री 108 पार्श्वकीर्तिजी महाराज
श्री 108 चंद्रसागरजी महाराज	श्री 108 समंतभद्रसागर जी महाराज

वास्तव में संपूर्ण विश्व आपका ऋणी रहेगा। आप जैसे युग प्रवर्तक, आध्यात्मिक, आकाशदीप, मानवोद्धारक ज्ञान रवि की कमी को संसार महसूस करता रहेगा।

35 वर्ष कठोर तपस्या के बाद जब भी जीव रक्षा पूर्वक श्रेष्ठ अहिंसा की साधना करने में असमर्थ हो गये। तब 12 वर्षीय यम सल्लेखना के अंतर्गत अपना आचार्य पद 24 अगस्त 1955 को प्रथम शिष्य वीरसागर जी को देकर 19 सितंबर भादों शुक्ल दौज 1955 में ओम नमः सिद्धेम्यः, णमोकार महामंत्र का उच्चारण करके 36 दिन के लगातार उपवास के बाद भी पूर्ण सावधान और आत्म चिंतन में निमग्न रहकर समाधि ग्रहण की।

विलक्षण विभूति थे चारित्र चक्रवर्ती :- जन्म के पश्चात् ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि वह बालक जगत भर में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा संसार के प्रपंचों में नहीं फसेगा। बचपन से ही वैराग्य परिणति थी। उनकी स्मृति तथा शारीरिक बल विशेष था। कोल्हापुर जिले में उनकी जोड़ का बाहुबल में कोई नहीं था। पिताजी की मृत्यु के पश्चात् सातगोंडा (शांतिसागर महाराज) ने नाहीं आंसू गिराये हैं और नाही उन्होंने शोक व्यक्त किया। उनके निज निवास ग्राम भोज गांव से स्तवनिधि तीर्थ 22 मील दूर है। आचार्य महाराज ने अपने गृहस्थ जीवन में प्रत्येक अमावस्या के दिन रात्रि तीर्थक्षेत्र पर व्यतीत करने का व्रत लिया था। उनके जीवन के प्रत्येक कार्य में शुरु से ही अत्यंत समता परिलक्षित होती थी। 18 वर्ष की उम्र में बिस्तर का त्याग और 25 वर्ष की उम्र में जूता पहनना त्याग दिया था। क्षुल्लक दीक्षा लेने के 10 वर्ष पूर्व से एकाशन और 5 वर्ष पूर्व सेठी एकांतर उपवास करते रहे थे।

परमपूज्य समाधिस्थ आर्यिका विशुद्धमति माताजी :- पूज्य आचार्य चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज के ज्ञान के वैराग्य के संबंध में कहती थी कि मुनि शांतिसागरजी महाराज ज्ञान वैराग्य के संस्कार की संपत्ति पूर्व भव से साथ लेकर आये थे। उसी के मूल स्वरूप घर में साधु समान रहे। आप वर्तमान द्रव्य क्षेत्र काल के अनुरूप गुणों के भंडार थे। नैसर्गिक वैराग्य होने के कारण आपने विषम परिस्थितियों में भी आगम के प्रतिकूल चर्या नहीं की। आप देश कुल और जाति से शुद्ध थे। पंचाचार पालन करने और कराने में सक्षम थे जो धारा कुछ समय से छिन्न-भिन्न हो रही थी उसे पुनः जीवित कर श्रमण संघ का निर्माण इस काल में प्रथम बार किया था।

वीतराग विज्ञान यथार्थ धर्म

❊ श्रमण मुनिश्री सुविज्ञसागरजी महाराज ❊

वागड़ अञ्चल के जैन-अजैन में सद्‌भावना युक्त भीलूड़ा ग्राम में प्रवासरत परम पूज्य स्वाध्याय तपस्वी वैज्ञानिक श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी गुरुवर ससंघ निश्रा में आचार्यश्री के वैज्ञानिक शिष्यों ने विशेष आध्यात्मिक विज्ञान का बोध प्राप्त किया। प्रातः कालीन सत्र में आचार्य ने **क्वाण्टम, स्ट्रींग, प्रकाश, सिद्धान्त, अनन्त सप्तभंगी, ज्ञानचेतना** आदि बहुआयामी विषयों का समीक्षात्मक बोध देते हुए कहा कि विज्ञान सत्य पथ पर होते हुए अभी पूर्ण सत्य को प्राप्त नहीं किया है। गुरुदेव ने शाश्वतिक सत्य का ज्ञान देते हुए कहा कि वीतराग विज्ञान ही यथार्थ धर्म है।

माध्यान्हिक सत्र में उपस्थित ग्राम व अञ्चल के भक्त-शिष्यों व वैज्ञानिकों जनों ने भी गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भक्ति भाव अभिव्यक्ति के माध्यम से गुरुदेव के आध्यात्मिक गुणों की पूजा प्रशंसा अनुमोदना की। **क्वांटम मैकेनिक्स** के वैज्ञानिक **डॉ.पी.एम अग्रवाल** ने कहा कि गुरुदेव श्री संघ की पवित्र लक्ष्य युक्त उत्तम साधना आदर्श है, एवं आपके अभी के साहित्य से अध्यात्म की गहराई मिल रही है। **कृषि वैज्ञानिक डॉ.एस.एल. गोदावत** ने आचार्यश्री को शान्त, उदार, अद्वितीय सन्त प्रवर बताते हुये **आस्ट्रेलिया** के **सिडनी शहर** में **समयसार** के स्वाध्याय का संस्मरण सुनाते हुए प्रभावी स्व रचित आध्यात्मिक कविता सुनाई, जिसे सुनकर आचार्यश्री संघ व श्रोता भाव विभोर हुये। **वैज्ञानिक डॉ. एन.एल.** कछारा ने **विश्व धर्म संसद** के शिखर सम्मेलन का संस्मरण सुनाया। उनकी स्व रचित कृति **Living system in jainism** का विमोचन भी आचार्यश्री संघ के करकमलों से हुआ। आचार्यश्री सृजित साहित्य के ग्रंथालय के कार्यभार कर्त्ता छोटूलाल जी चित्तौड़ा ने भी अपने आभार व्यक्त किये। अन्त में सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने क्रान्तिकारी अध्यात्म बोध देते हुए कहा कि मैं स्वयं अमृत कलश हूँ सम्पूर्ण धर्म पंच परमेष्ठी स्वयं में स्थित है, शक्ति की अभिव्यक्ति होने पर शाश्वत् सुख प्राप्त होता है। गुरुदेव ने बताया जो **स्व-आत्मा** को नहीं जानते ऐसे **न्यायाधीश, दार्शनिक, वैज्ञानिक** का भी आध्यात्मिक आयाम वृक्ष कीट पतंग जैसा ही है। गुरुदेव ने कहा कि स्वउद्धार से पर उद्धार भी सहज होता है। उपस्थित भव्य जीवों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपकी भावना भक्ति-शक्ति उत्तरोत्तर वृद्धि हो, शाश्वत् आनन्द प्राप्त हो ऐसी मंगल भावना करता हूँ।

खुद को हैप्पीमैन बनाइए, एंग्रीमेन नहीं

❊ राष्ट्र संत चन्द्रप्रभ ❊

अनेक बच्चों के मिड ब्रेन एक्टिवेशन मेथड से थर्ड आई हुई एक्टिव

जोधपुर 2 जून ! राष्ट्र-संत चन्द्रप्रभ महाराज ने कहा कि प्रगति के लिये दिमाग में तीन गुण अपनाइए-1. पीसफुल माइंड, 2. पॉजिटिव माइंड और 3. पावरफुल माइंड। शान्त सकारात्मक और शक्तिमान होना हर सफल जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि खुद को हैप्पीमैन बनाइए, एंग्रीमैन नहीं। एंग्रीमैन केवल फिल्मों में ही खलनायक की भूमिका निभाते अच्छे लगते हैं, रीयल लाइफ में तो हैप्पीमैन ही पसंद किये जाते हैं। याद रखें, क्रोध करने वाले लोग घरवालों को भी अच्छे नहीं लगते, फिर दूसरे लोगों को कहाँ से प्रिय होंगे ? क्रोध साँड है, भला कौन इसका सींग खाना चाहेगा ? क्रोध तो माचिस की तीली की तरह है। थोड़ा-सा घर्षण लगते ही आग सुलग उठती है। अरे भाई ! माचिस में तो अक्ल नहीं है। इसलिए सुलग उठती है। आपमें तो अक्ल है, फिर क्रोध पर कंट्रोल क्यों नहीं करते ? उन्होंने कहा कि किसी ने मुझसे पूछा कि क्रोध क्या है ? मैंने उसे सहज जवाब दिया कि दूसरे की गलतियों की सजा खुद को देना। क्रोध तो तात्कालिक पागलपन है। कौन बेवकूफ होगा, जो यह पागलपन दोहराएगा। उम्मीद है आप समझदार हैं। अपनी समझदारी का इस्तेमाल कीजिए और अपने उग्र स्वभाव को सरल स्वभाव में बदलिये।

संतप्रवर संबोधि धाम में आयोजित संस्कार निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन पर बच्चों एवं युवाओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि क्रोध पर इसलिये विजय पाइए, क्योंकि यह हँसी की हत्या करता है और खुशी को खत्म। यह बुद्धि के दरवाजे पर चटकनी लगा देता है और विवेक को घर से बाहर निकाल देता है। क्रोध से सेहत पर कुठाराघात होता है, रिश्ते टूटते हैं और कैरियर चौपट हो सकता है। गुस्से से सावधान रहिए। पलभर का गुस्सा आपका पूरा भविष्य बिगाड़ सकता है। क्रोध में बनाया गया भोजन और बच्चों को पिलाया गया दूध जहर की तरह नुकसानदायक होता है। क्रोध पैदा हो जाए तो पहले 15 मिनट सो जाएँ, तन-मन को रिलेक्स करें, उसके बाद ही कोई कार्य निपटाएँ। क्रोध में एक बार अपना चेहरा आईने में देखने की तकलीफ उठाएँ। आपको अपने आप नफरत होने लगेगी। तब आप अनायास ही अपने क्रोध को वैसा ही थूक देंगे, जैसे कि मुँह से कफ।

मुस्कुराकर करें क्रोध-संतप्रवर ने कहा कि यदि आप क्रोध से परेशान है तो सदा मुस्कुराने की आदत डाले। क्रोध का निमित्त खड़ा हो जाए तो पहले मुस्कुराएँ, फिर क्रोध करें - क्रोध कम आक्रमक होगा। उदाहरण से समझाते हुए उन्होंने कहा कि अगर दूध उफनने लगे तो हम पानी का छींटा डालते हैं। आप इसी नुस्खे का इस्तेमाल कीजिए। जैसे ही लगे कि आप में उफान आ गया है, तत्काल दो गिलास ठंडा पानी पी लीजिए। उधर उफनता दूध शांत, इधर आपका उबाल शांत।

धैर्य अपनायें क्रोध भगाएं-संतश्री ने कहा कि कोशिश कीजिए कि क्रोध को हमेशा धैर्यपूर्वक प्रकट करने की आदत डालिए। थोड़ा सा धैर्य आपके क्रोध को जीतने का मंत्र बन जाएगा। धीरज से सोचने पर कई दफा लगता है कि मैं व्यर्थ ही क्रोधित हुआ। क्रोध के बाद पैदा हुए प्रायश्चित्त से प्रेरणा लीजिए और निर्णय कीजिए कि मैं भविष्य में आगे-पीछे का सोचकर तेजी से खाऊँगा। उन्होंने कहा कि प्लीज ! गुस्से को कहिए गोर। ज्यादा गुस्सा करेंगे तो पत्नी सुबह 9 बजे घड़ी देखेगी और कहेगी-क्या बात है आप अभी तक ऑफिस नहीं गये ? प्रेम से पेश आने वाले व्यक्ति के लिये शाम को घड़ी देखी जाती है- रात के 8 बज गये, क्या बात है, वे अभी तक नहीं आए। आप क्या चाहते हैं, आपकी पत्नी सुबह घड़ी देखे या शाम को ?

हे जीव ! अब तो शांत रहने का बोर्ड लगाएं-उन्होंने कहा कि कृपया बड़े साइन का एक कागज लीजिए और उ**स पर भगवान महावीर की यह वाणी लिख दीजिए- हे जीव ! अब तो शांत रह। कब तक यूँ ही हो-हल्ला करता रहेगा।** बस, इस कागज को घर के आंगन में चिपका दीजिए और जैसे ही गुस्सा आए तो इसे पढ़ डालिए। आपकी अंतरात्मा में तत्काल शांति की रोशनी खिल उठेगी। सप्ताह में एक दिन चार घंटे का अखंड मौनव्रत रखने की आदत डालिए। मौन से जहाँ वचनसिद्धि सधेगी, वहीं क्रोध के तेवर का तीखापन कम होगा। हर महीने की पहली तारीख को उपवास करने की आदत डालिए। यह उपवास भोजन हीं करने का न हो, बल्कि क्रोध न करने का हो। भला, क्रोध न करने से बढ़कर और क्या तपस्या होगी ?

इससे पूर्व द वे ऑफ गुड लाइफ के रूप में संस्कार निर्माण एवं व्यक्तित्व-विकास शिविर का सफल आयोजन कायलाना रोड़ स्थित प्रसिद्ध साधना स्थली संबोधि धाम में हुआ। राष्ट्र-संतों के अलावा राष्ट्रीय स्तर के मैनेजमेन्ट गुरु डॉ . संतोष भारद्वाज दिल्ली, विक्रम सेठिया कोलकाता, पारस हरिया इंदौर, डॉ. सीमा दफ्तरी जयपुर, जागृति अग्रवाल जयपुर एवं जोधपुर के अरविंद भट्ट व राकेश गर्ग ने अपनी सेवाएं समर्पित की जिनका संबोधि धाम द्वारा माला व शॉल पहनाकर अभिनंदन किया गया। शिविर में बच्चों एवं युवा छात्र-छात्राओं को थर्ड आई एक्टिव करने के लिये विशेष प्रयोग सिखाए गए जिसमें अनेक बच्चों के मिड ब्रेन एक्टिव मेथस से थर्ड आई एक्टिव हुई।

शिविर प्रभारी डॉ. शांतिप्रिय सागर एवं योग प्रशिक्षिका योगिता यादव ने बताया कि शिविर में परिवार में जीने के तौर तरीके, स्मरण-शक्ति और बौद्धिक विकास के नुस्खे, जीवन में सफल होने और केरियर बनाने के शर्तिया उपाय, जीवन में ऊँचे सपने और लक्ष्य बनाने का आत्मविश्वास साथ ही स्वस्थ, सफल और मधुर जीवन जीने के प्रयोग, योगा, प्रश्न-पहेलियाँ, बोलने की कला- गीत-गायन, स्वयंसेवा एवं स्वावलम्बी जीवन के बारे में सटीक एवं वैज्ञानिक मार्गदर्शन दिया गया। शिविर में जोधपुर के अलावा देश के अनेक शहरों से लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया।

आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में

✻ विजयराज सुराणा, गाजियाबाद (उ.प्र.) ✻

बीसवीं शदी में ज्ञान-विज्ञान की अभिवृद्धि से लाखों विद्वान सृजित हुए। उनमें कुछ ऐसे भी उद्‌भुत हुए जिन्होंने अपने कर्तृत्व से पूरे विश्व को आलोकित किया है, जिनमें से एक थे- महान जैन आचार्यश्री महाप्रज्ञ। भीषण गर्मी व सर्दी के लिए पूरे भारत में विख्यात् चुरु शहर के नजदीक छोटे से ग्राम टमकोर (झुंझनूं जिला) में जन्म हुआ, जहां रेल तो अब भी नहीं। गर्मी की पराकाष्ठा में 14 जून 1920 को जन्मा नथमल अस्पताल या मकान के किसी कमरे में नहीं, बल्कि खुले आकाश में माता की कुक्षि से प्रकट हुआ। इसका परिणाम यह रहा कि वह हरदम चहुंदिशा से ग्रहण करने हेतु खुले विचारों को एवं सर्वाधिक शीत-गर्मी को सहन करने वाले विचारों का भी वह महात्मा बना।

मुनि नथमल : गांव में आने वाले साधु-संतों के सम्पर्क एवं उनके प्रयास व पोषण से बालक नथमल की आध्यात्मिक चेतना वृद्धिंगत होने लगी। मां-बेटे दोनों ने अपने तत्कालीन गुरु आचार्य कालू से अपनी दीक्षा की भावना व्यक्त की। जिसका प्रतिफल यह हुआ कि 29 जनवरी 1931 को अपनी माता बालूजी के साथ अपने ननिहाल के कस्बे सरदार शहर में , आध्यात्म की दुनिया में प्रवेश करके बन गया मुनि नथमल, एवं गुरु द्वारा प्रथम दिन ही उसे सौंप दिया गया उस काल के शिक्षक संत मुनि तुलसी को-आगामी विकास हेतु। मेधावी गुरु तुलसी के लिए शुरु के 1-2 वर्ष काफी कठिन रहे, परन्तु उन्होंने भी हताश नहीं होकर मुनि नथमल को अध्ययन की ओर प्रवृत्त के लिए अर्थक प्रयास किया। उनका भावी प्रबल था अतः ऐसा होना ही था।

प्रज्ञा का जागरण : सन् 1937 का बीकानेर चातुर्मास में संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान पंडित रघुनन्दनजी का योग मिल गया, उनसे संस्कृत काव्य दर्शन, स्याद्‌वाद आदि का विशेष अध्ययन करके संस्कृत व प्राकृत में विशिष्ट विद्वानों की श्रेणी में आ गये। सन् 1941 में प्राकृत का विशेष अध्ययन करके तुलसी मंजरी नाम से प्राकृत व्याकरण तैयार किया, जो प्राकृत अध्ययन के लिए एक विशेष उपलब्धि थी। सन् 1943 में एक ही दिन में संस्कृत के एक सौ श्लोक लिखकर आशु कवि होने का गौरव प्राप्त किया। जैन शास्त्रों के अलावा उन्होंने लेनिन, मार्क्स, लोओत्से के अन्य अन्य दर्शनों का अध्ययन करके अपनी विद्वता व ज्ञान का अदभुत विकास किया।

वाराणसी में संस्कृत सम्मेलन: मुनि नथमल की विद्वता की रश्मियां चहुं ओर फैल चुकी थी,आयोजकों ने उन्हें उसमें विशेष तौर पर शामिल होने को आमंत्रित किया। उन्होंने एक सारगर्भित संस्कृत **भारतीयता संस्कृतिश्च** विषय पर एक विशिष्ट आलेख वहां भेजा। यथा समय सम्मेलन में इसके वाचन पर लेख के भाव, भाषा, शैली वस्तु निरूपण की दृष्टि से सर्वोत्तम पुरस्कार हेतु चुना गया। उनमें वर्णित श्लोकों को सुनकर अनेकों उदभुत विद्वान भी भाव-विभोर हो गये एवं खूब भूरि-भूरि प्रशंसा अर्जित की।

आशु कविता व विद्वता : महाराष्ट्र का सुप्रसिद्ध संस्कृत शिक्षा केन्द्र तिलक **संस्कृत विद्यापीठ** का सभाकक्ष संस्कृत विद्वानों प्रोफेसरों व लेखक से भरा हुआ था। महाप्रज्ञजी की संस्कृत व प्राकृत विद्वता व उनके अवदानों को सुनकर उन्होंने **संस्कृत का विरोध** व **आज की**

विद्वत सभा दो विषय देते हुए उन पर संस्कृत में आशु कविता सुनाने का आग्रह किया। प्रज्ञा के महाधनी श्री महाप्रज्ञजी ने तत्काल ही एक-एक- करके दोनों ही विषयों पर उत्कृष्ट शब्दों में रची कवितायें सुनाई। सभी विद्वान इतने आश्चर्यचकित व भाव विभोर हुए कि जिसका वर्णन करना शब्दों में संभव नहीं है।

स्याद्वाद पर मंतव्य : भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी से 22 दिसम्बर 1958 को संस्कृत विश्वविद्यालय में विद्वत् परिषद का आयोजन हुआ। स्याद्वाद के बारे में गहन विद्वतापूर्ण चर्चा चल पड़ी एवं अनेक विद्वानों ने इसे संशयवाद के रूप में प्रस्तुति की। इस संस्कृत नगरी में महाप्रज्ञजी ने विद्वता सभा में संस्कृत भाषा में काफी ओजपूर्ण व सटीक भाषा में विषय का प्रतिपादन किया सभी विद्वानों का संशय तो मिट ही गया, उनकी विद्वता के भी कायल हो गए।

महाप्रज्ञ अलंकरण : आचार्यश्री तुलसी ने उनकी विशेष प्रज्ञा को बहुमान देते हुए 12 नवम्बर 1978 को उन्हें **महाप्रज्ञ** अलंकरण से विभूषित किया। 3 फरवरी 1979 राजलदेसर में आचार्यश्री तुलसी ने मुनिश्री नथमल जी को निर्देश देते हुए कहा कि यह होंगे मेरे भावी उत्तराधिकारी, यानि वर्तमान युवाचार्य एवं कालान्तर में तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य। इसके साथ ही उन्होंने भी कहा कि महाप्रज्ञ इनका अलंकरण है, वह अब इनका नाम हो जायेगा-यानि यह अब कहलायेंगे **युवाचार्य महाप्रज्ञ।**

आचार्य पद का दायित्व : सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव के मुख्य दिवस 18 फरवरी 1994 को आचार्य प्रवर ने प्रफुल्ल मुद्रा में कहा कि अब मैं अपने आचार्य पद का भार इन्हें सौंप रहा हूँ। पूर्ववर्ती किसी भी आचार्य ने अपने युवाचार्य को आचार्य रूप में नहीं देखा, मैं इसे देखना चाहता हूँ। अब मैं निर्देश देता हूँ कि युवाचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य पद का दायित्व संभालें। इस विशिष्ट घटना से महाप्रज्ञ जी अब तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य नियुक्त हो गये एवं महाप्रज्ञजी की प्रार्थना पर आचार्य श्री तुलसी गणाधिपति पद पर विभूषित हो गये।

अहिंसा यात्रा : आपकी पश्चिम भारत की यात्रा का कार्यक्रम घोषित था। इस हेतु 5 दिसम्बर 2001 से अहिंसा यात्रा के नाम से प्रस्थान किया। इसके अंतर्गत अनेकों मुख्य-मुख्य स्थानों का स्पर्शन करते हुए सन् 2002 का चातुर्मास अहमदाबाद में किया। गोधरा हत्याकाण्ड की वजह से गुजरात का वातावरण काफी गंभीर था, एवं अनेक प्रमुख्य व्यक्तियों ने अहमदाबाद नहीं पधारने का निवेदन किया। उस समय आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि यही तो समय है, जब वहां जाकर अशान्त वातावरण में शान्ति स्थापित करनी चाहिए। हिंसक वातावरण की वजह से प्रतिवर्ष निकलने वाली रथ यात्रा को भी स्थगित करने का चिंतन चल रहा था। आचार्य महाप्रज्ञ ने दोनों ही सम्प्रदायों से शान्ति की सटीक वार्ता करके रथ यात्रा समन्द सम्पन्न होने का मार्ग प्रशस्त किया। यही प्रभाव था एक अहिंसक योगी का। उस समय वहां के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण अडवाणी तक ने इसे बहुत ही सराहा एवं इस हेतु महाप्रज्ञजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस वजह से जैन धर्म की काफी प्रभावना हुई।

दी फैमिली एंड दी नेशन : सूरत के सम्मेलन में यह तय हुआ कि आचार्य महाप्रज्ञ एवं राष्ट्रपति डॉ. कलाम एक संयुक्त लेखन से एक संयुक्त पुस्तक लिखेंगे-जो उपरोक्त नाम से सामने

आई। इसका लोकार्पण तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल द्वारा 12 दिसम्बर 2008 को अणुविभा जयपुर में किया गया।

जैन एकता के पक्षधर : इस हेतु उन्होंने काफी प्रयास किया एवं आचार्य श्री विद्यानन्द जी, आचार्य श्री विद्यासागर, आचार्य श्री शिवमुनि एवं श्री अमर मुनि व सुशील मुनि से समय-समय पर मिलते रहे एवं आपसी सौहार्द व जैन एकता के लिए प्रयास किया। सभी जैनों का सम्वत्सरी पर्व एक ही दिन मनाया जाये, उसके लिए भी आपका काफी प्रयास रहा, जिसका प्रतिफल यह रहा कि वर्तमान 2-3 श्वेताम्बर सम्प्रदाय तो इस पर सहमत हुए हैं। भविष्य में यह स्वप्न साकार होगा, ऐसा विश्वास है। इसके अलावा श्री दलाईलामा, श्री रविशंकर जी, बाबा रामदेवजी इत्यादि विद्वतजनों व विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क रहा।

महासूर्य अस्तः आप सन् 2010 के चातुर्मास हेतु सरदारशहर पधार गये थे। पढ़ने-लिखने का सब कार्य यथावत् कर रहे थे। 9 मई प्रातः आप पण्डाल में प्रवचन देकर अणुव्रत कार्यकर्ताओं के साथ संगोष्ठी की एवं आहार व विश्राम के बाद दोपहर में वह महासूर्य हमेशा के लिए अस्त हो गया। ऐसे महान आचार्य की जन्मशती पर हमारा शतः शतः वन्दन।

कविता

कर्मों का निर्झरण

तुम हमें छोड़ दो अब प्रभु की शरण, अब हमें पाना प्रभु के पावन चरण
मोह मुझे दुनियां में अब तक भटकता रहा, विषय वासना में अटकता रहा
मिली सिद्ध भूमि सम्मेद शिखर, उड़ जाऊँ मैं अब पर लगाके
बस मैं पहुँच जाऊँ सिद्ध शरण, मुझे छोड़ दो अब प्रभु की शरण
मिला अनुभव मुझको कभी न खुद का,पर-परणति में न माना जुदा
भटकता रहा मैं सरागी के सर, लौटा हूँ मैं विरागी के सर
अमृत को पाकर ये बदले करण, मुझे छोड़ दो अब प्रभु की शरण
गुनगुनता रहूँ मैं मुस्कुराता रहूँ, गीत प्रभु के हरदम मैं गाता रहूँ
लीन हो जाऊँ इतना न सुध बुध रहे, बस प्रभु और मेरा ही संग रहे
कर्मों का हो जायें तब निर्झरण, मुझे.......................

मोटापा घटाइये-सुडौल बनिये

✻ श्रेयांश कुमार जैन ✻

प्रभु ने व्यक्ति को सुडौल, व्यवस्थित, सुगठित व सुन्दर शरीर देकर पृथ्वी पर भेजा, लेकिन अपने गलत खान-पान, आचार-विचार व रहन-सहन के कारण हमने इसे आलसी, रोगी व कुरूप बना दिया। मोटे से पीड़ित व्यक्ति शरीर के भार को ढोने में अलसाता रहता है, मनुष्य जीवन का वास्तविक आनंद उठाने से, वंचित रह जाता है। साधारणतः स्फूर्ति, उमंग, चेतना व चंचलता के आभास से अनभिज्ञ रहता है।

स्वास्थ्य केन्द्रों पर लम्बाई के अनुसार वजन के चार्ट उपलब्ध रहते हैं। जब लम्बाई की अपेक्षा में वजन असामान्य ढंग से बढ़ा हुआ हो, शरीर थुलथुल हो जाए, कुरूप व बेमेल हो जाएं, उसे मोटापा कहा जाता है। अधिक सम्पन्न वर्ग जिन्हें ऐशो-आराम की सुविधायें उपलब्ध हैं, उनमें यह रोग अधिक पाया जाता है। मोटापा अन्य रोगों का कारण भी बन जाता है।

मोटे के कारण, शरीर वमन के अनेक रोग जन्मते हैं, जैसे कब्ज उच्च रक्त चाप, गैस, मधुमेह, गठिया, जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, सांस व दमें के रोग, रीढ़ के दर्द, अपच, गुर्दे व जिगर के रोग तथा मानसिक रोग आदि।

मोटो व्यक्ति सुड़ौल व्यक्तियों की अपेक्षा में कम आयु वाले होते हैं, बीमा कम्पनियां भी मोटे व्यक्तियों से अपेक्षाकृत अधिक प्रीमियम लेते हैं।

मोटापे के कारण :- वास्तविकता यह है कि मोटापे के कारण हम सभी जानते हैं, फिर भी बार-बार सुनने पढ़ने में आनन्द आता है। यदि कुछ पढ़कर प्रेरणा मिले तो लेखक का प्रयास सफल होगा।

मोटापे का मुख्य कारण है आलस्यपूर्ण जीवन बिताना और शारीरिक श्रम के कार्य करने से जी चुराना। यही कारण है पहाड़ी इलाकों के अपेक्षाकृत मैदानी इलाकों में यह रोग अधिक पाया जाता है। पेट में मल होने पर कब्ज बन जाता है और जब यह मल अंग-अंग में भर जाता है तो मोटापे का रोग हो जाता है।

✻ आवश्यकता से अधिक विश्राम करना, शरीर को अधिक से अधिक आराम के साधनों की आदत डालना।

✻ तली-भुनी व मसालेदार खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन करना।

✻ बिना भूख के भोजन करना।

✻ यदा-कदा जब देता खाते-पीते रहना।

✻ जब तक पहला खाया हुआ भोजन न पचे, उससे पहले ही पुनः कुछ न कुछ खाते रहना।

✻ कार्बोहाइड्रेट्स (अनाज, दालें, चावल, आलू, शकरकंदी, सूखे मेवे, चीनी, गुड़, शक्कर, शहद, दूध आदि) का अधिक प्रयोग करना।

✻ कच्ची सब्जियाँ, सलाद या फल आदि का सेवन बिल्कुल कम करना।

✻ उचित शारीरिक व्यायाम के अभाव में भी शरीर मोटा होता जाता है।

✻ थोड़ा सा भी चलने में आलस करना, हर समय वाहन का प्रयोग करना।

✻ स्वाद को प्राथमिकता देकर अधिक भोजन करना भी रोग का कारण है।

✻ अधिक बैठने वाले ही कार्यों को करना, परिणाम स्वरूप चर्बी का अनावश्यक बढ़ना।

मोटापा घटने के कुछ सरल उपाय :- 1. प्रातः आधा पांव पानी उबाले, ठंडा प्राकृतिक रूप में करें (जल्दबाजी के लिये ठंडा पानी न मिलायें)। जब यह शीतगर्म या गुनगुना रह जायें तो इसमें 15 ग्राम नींबू का रस (तीन चाय के चम्मच) और 5 ग्राम शुद्ध सीरा चासनी- दो चम्मच लेवे) मिलाकर अमृतपेय बना ले। खाली पेट, बिना रूके, गट-गट करके पी जाइये। निश्चित रूप से मोटापा दूर होगा। किसी भी प्रकार की अनावश्यक चर्बी बढ़ गई हो, घट जायेंगी। शरीर सुड़ौल बनेगा। शरीर में चुस्ती फुर्ती बनी रहेगी, आलस्य भागेगा तथा जठराग्नि तीव्र रहेगी। आयु के बढ़ने के साथ-साथ हमारे आंतरिक अंग शिथिल होने से जठराग्नि मंद पड़ जाती इससे लाभ होगा।

अवधि- कम से कम दो मास तक लेवें, निरन्तर व अखण्ड लेवें। बीच में यदि व्यवधान आ जायें तो पुनः 61 दिन तक सेवन करें।

2. सात्विक भोजन दोनों समय (प्रातः सायं) करने के पश्चात् एक कप उबलता हुआ पानी लें। जिस प्रकार गर्म-गर्म चाय पीते हैं, घूंट-घूंट करके पिएँ। यदि न पिया जाए तो चम्मच से भी पी सकते हैं। लेकिन जितना अधिक गर्म पिये जाये पीजिए। वैसे तो भोजन के मध्य में पानी पीना हितकर नहीं है, फिर भी यदि आवश्यकता पड़े तो एक आधा घूंट ठंडा पानी (प्राकृतिक) पी सकते हैं। इसके प्रयोग से मोटापा घटकर संतुलन में शरीर आता है व सुड़ौल बनता है। बिना पैसों का इलाज है, श्रद्धा पूर्वक करेंगे तो निश्चित् लाभ होगा।

अवधि- निरन्तर दो माह सेवन करें लेकिन अधिक समय तक प्रयोग करने से लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती।

कविता

ज्ञान दीप

ज्ञानदीपक जला मिथ्या तम मिट गया।
तत्त्व का दर्शन प्रकाशन सच होने लगा।
दुख के बादल हटे सुख का अमृत झरा
द्रव्य गुण पर्याय का बोध अनुपम मिला
मोह की रात अंधयारी
हारी सदा मोक्ष दुलारी चहकने लगी
झूठ का धंधा सारा दफन हो गया।
झूठ रोने लगा सच तो हंसने लगा
मेरी दिल की दिवाली अब मन गई
ज्ञान विश्वास चारित्र सम्यक् बना।

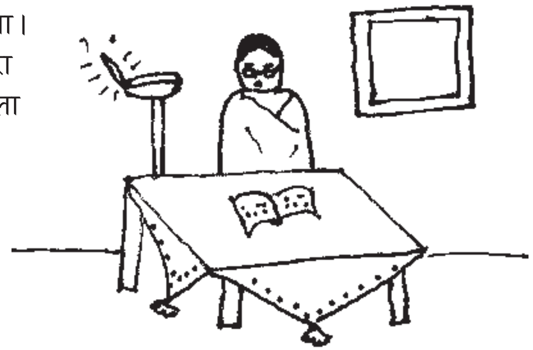

बोतल पानी हानिकारक

❊ विजय कुमार जैन राघौगढ़,म.प्र. ❊

दुनिया में बोतलबंद पानी का उपयोग आम बात हो गई है। कहा है जल ही जीवन है मगर यह स्थिति निर्मित हो गई है हम जिस पानी को शुद्ध मानकर और रूपयों से खरीद कर पी रहे हैं वह पानी खतरनाक एवं जानलेवा है। आज पानी विशेष कर बोतलबंद पानी की जाँच के बाद जो रिपोर्ट आई है वह दिल दहला देने वाली है।

दुनिया भर में बोतलबंद पानी की गुणवत्ता को लेकर वेहद चौंकाने एवं डराने वाला खुलासा हुआ है। जारी विवरण के अनुसार दुनिया भर में 90 प्रतिशत बोतलबंद पानी में प्लास्टिक के वारीक कण घुले हुए हैं। जिन बोतलबंद पानी की परीक्षण किया इनमें दुनिया के 9 देशों में भारत के पानी का भी परीक्षण किया गया। भारत, अमेरिका, ब्राजील, चीन, इंडोनिशया, केन्या, लेबनान, मेक्सिको, थाईलैंड के पानी का परीक्षण किया गया।

इन नौ देशों के 11 ब्रांडस शामिल है, जिनमें भारत की बिस्लरी, एक्वाफिना और ईवियन जैसी प्रतिष्ठित कंपनियाँ हैं। न्यूयॉर्क की स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने इन ब्रांड्स के 27 लॉट में से 259 बोतलों का परीक्षण किया। इसके लिए भारत के दिल्ली, चेन्नई, मुंबई सहित दुनिया के 19 महानगरों के नमूने लिये गये थे। इनमे प्लास्टिक के अवशेष पाये गये। विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के अवसर आई इस रिपोर्ट के अनुसार शोधकर्ताओं को टेस्ट के दौरान एक लीटर की पानी की बोतल में 10.4 माइक्रो प्लास्टिक पार्टिकल्स मिले। बोतलबंद पानी में पाए गये प्लास्टिक के अवशेषों में पॉलीप्रोपाइलिन, नायलॉन और पॉलीइथाईलीन टेरेफ्थालेट सम्मिलित हैं। इन सबका उपयोग बोतल का ढक्कन बनाने में होता है।

विगत दिवस दिल्ली में आयोजित पत्रकार वार्ता में उन सौ से अधिक विशेषज्ञों ने बताया जो साफ स्वच्छ पानी उपलब्ध कराने के लिए काम कर रहे हैं उनका कहना है हम भारत में आजादी के 72 वर्ष बाद भी देश में शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं।

देश की 10 करोड़ से अधिक जनता खतरनाक दूषित पानी पी रहे हैं। उक्त दूषित पानी में केमिकल पाया गया है इनमें आर्सेनिक और यूरेनियम जैसे तत्त्व मिले हैं जो स्वास्थ्य के लिए सर्वथा हानिकारक साबित हो सकते हैं। यह तो हुई प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा बेचे जा रहे मिनरल वाटर की। हम एक और नकली बोतलबंद पानी की बात करते हैं रेल स्टेशनों पर यात्री पानी पीकर बोतल को वही फेंक देते हैं उन बोतलों को बच्चे एवं किशोर थैलों में एकत्रित कर रेल स्टेशनों के नलों से भरकर वाटर के नाम पर वही रेल स्टेशनों पर बेच रहे हैं। यह धन्धा भी पीने के शुद्ध पानी के नाम पर आम जनता से धोखाधड़ी ही है।

जैन दर्शन में उल्लेख है पानी की एक बूंद में 36450 सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। यह वैज्ञानिक रूप से भी प्रमाणित हो गया है। एक बार पानी को कपड़े से छानने के बाद वह पानी मात्र 42 मिनट ही शुद्ध रहता है। 42 मिनट बाद उसमें पुनः सूक्ष्म जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं। आज से लगभग 60 से 70 वर्ष पूर्व तक जैन समाज के व्यक्ति घर से बाहर जाते थे तो साथ में लोटा, पानी छानने का कपड़ा एवं कुंए से पानी खींचने के लिए रस्सी साथ लेकर चलते थे। जैनियों की तीन प्रमुख पहचान आज भी मानी जाती है प्रतिदिन मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करना, पानी छानकर पीना एवं रात्री में भोजन नहीं करना। पानी छानकर पीने के जैन समाज के नियम में तब से शिथिलता आ गई जब से बोतलबंद पानी का प्रचलन मिनरल वाटर के नाम से हुआ है। जैन संत कहते हैं महिनों पहिले बोतलों में पैक पानी अशुद्ध है। अब तो दुनिया के शोधकर्ताओं ने प्रमाणित कर दिया है बोतलबंद पानी अशुद्ध है और स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।

पाकिस्तान एक घायल सांप

❊ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❊

भाई जैसा दोस्त नहीं और भाई जैसा दुश्मन नहीं, पुलवामा काण्ड के बाद पूरा देश बेसब्री से इस बात इंतजार कर रहा था कि भारत देश ऐसा कदम उठाये जिससे दुश्मन के हौसले पस्त हो जाएं। भारत देश की तैयारी बहुत गंभीरता पूर्ण रही जैसे गहरी नदी का पानी ऊपर से शांत और अंदर तेज बहाव रहता है। मोदी जी पूरी चौकीदारी से अपना काम निभा रहे थे। पर उन्होंने स्पष्ट कह दिया था कि सेना को पूरी छूट दे दी गयी है और सही समय का इंतजार रहा और उनहोंने 26 फरवरी को अंजाम दे दिया भारत ने पाकिस्तान के साथ सैन्य कार्यवाही न करके मात्र पाकिस्तान के पनाहगार आतंकवादियों के ठिकाने पर बमबारी की और बिना किसी अपने सैनिकों की हानि किये वापस आ गये, इस पर स्वाभाविक हैं कि पाकिस्तान सरकार को उनका कोप भाजन बनना पड़ा होगा और उन्होंने भी कायराना हमला करने की कोशिश की जो सफल नहीं हो सका।

हमारे देश में इस वक्त बहुत जोश का माहौल है और सब जगह हमारे देश की सेना की वाह-वाही हो रही हैं जो स्वाभाविक है और मोदी जी के द्वारा उठाये गये कदम की प्रशंसा राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर हो रही है और हम सब दुश्मन को अपने मुकाबले कम आंक रहे हैं। और यह स्वाभाविक भी है, पर यह कहीं हमारी नादानी या भूल न बन जाये, कारण नंगा खुदा से बड़ा होता हैं, पाकिस्तान यह सोच ले कि हम तो सनम डूबेंगे और तुम्हें भी ले डूबेंगे।

स्वल्प इत्यन्या बुद्ध्या कार्यावज्ञा न वैरिणी।
छोटा समझकर शत्रु की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।
लब्धरन्ध्रा न तिष्ठेयुरकृत्वापकृति दविषः।
छिद्रान्वेषी शत्रु अपकार बिना नहीं रहता।
खलूपेक्ष्य लाँधियानव्यूच्छेद्यो लघुतादृशाः।
शत्रु यदि छोटा भी हो तो वह उपेक्षणीय नहीं हैं।
नानुबन्धं त्याजतयारिः।
शत्रु अपने संस्कार का त्याग नहीं करता।
मित्रभाव तो शत्रु का, अहो निहाई जान।
पीटेगा वह काल पा, तुमको धातु समान।।

जो मित्रता शत्रु दिखाता है वह केवल निहाई हैं जिसके आश्रय से मौका मिलने पर वह तुम्हें लोहे के समान पीट देगा।

झुक जावे फिर भी कभी, करो न रिपु विश्वास।
कारण धनुषविनम्रता, करे अधिक ही त्रास।।

यदि वैरी विनम्र वचन भी बोले तो उसका विश्वास न करो क्योकि धनुष जितना अधिक झुकेगा उतना ही अधिक अनिष्ट सूचक होगा।

कर जोड़े रोवे अधिक फिर भी क्या इतवार।

छुपा हुआ रिपु के निकट, संभव हो हथियार।।

शत्रु यदि हाथ जोड़े और आंसू भी बहावे तो भी उसकी प्रतीती न करो संभव हो की उसके हाथों में कोई हथियार छुपा हो।

रे रे प्रभु के बैरियों , मत अकड़ो ले वान।

बहुतेरे अरि युध्य कर, पड़े चिता-पाषान।।

अरे ए बैरियों ! मेरे स्वामी के सामने युद्ध में खड़े न होओ क्योंकि पहले भी उसे बहुत से लोगों ने युद्ध के लिये ललकारा था, पर आज वे सब चिता के पाषाणों में पड़े हुए हैं।

वैसे पाकिस्तान से लड़ाई कोई नहीं बात नहीं हैं उसका कारण उनकी कौम हमेशा हिंसा में भरोसा रखती हैं और दूसरा नीच निवास ऊंच करतूति देख सभी न परायी विभूति दरिद्रता इतनी अधिक होने से वह चार्वाक सिद्धांत का पालन करता है उसके प्रत्येक नागरिक पर लाखों रूपया कर्ज हैं, कभी वहां स्थिर सरकार नहीं रही, हमेशा मुल्ला मौलवियों, मिलिवेंट, मिलिट्री और चीन या अमेरिका का उनकी सरकार पर हमेशा हस्तक्षेप रहा गरीबी ने उसको गर्त में डाल दिया और पाकिस्तान ने अपना एक व्यापार दहशतगर्जी बनाया और आतंकवादियों को पनपाया और उनके माध्यम से विश्व में आतंक बढ़ाने कुछ भी करने को तैयार चाहे मुंबई काण्ड हो या अमेरिका में 26/11 हो। इस कारण पाकिस्तान की छवि विश्व स्तर पर धूमिल पड़ गयी भारत सरकार ने भी कूटनीति का सहारा लेकर उसे अलग की थलग कर दिया।

इस समय भारत सरकार को इतनी सावधानी रखनी चाहिए जिससे शत्रु उसकी कमजोरी न जान सके और यदि शत्रु की कमजोरी मालूम पड़ जाए तो उस पर चढाई अवश्य करे। सरकार को चाहिए की जिस प्रकार कच्छप अपने सभी अंगों को छिपाकर रक्षा करता हैं उसी प्रकार राजा भी अपने सभी अंगों (अमात्य, राजा, राष्ट्र, दुर्ग कोष बल और सुहद) की रक्षा करे और अपनी कमजोरी छिपाये।

संसार में समझदारों का कार्यारम्भ प्रायोजन सिद्ध करने के ही उद्देश्य से होता है, जब तक समय बदलकर अनुकूल न हो जाये जब तक दुश्मन को भी कंधे पर बिठा कर ढोना पड़े तो ढोता रहे, पर जब समय अपने अनुकूल हो जाय तब उसे उसी प्रकार नष्ट कर दे जैसे घड़े को पत्थर पर पटककर फोड़ा जाता हैं, दुश्मन बहुत दीनता पूर्वक वचन कहे तो भी उसे जीवित नहीं छोड़ना चाहिए।

इस समय इस बात की बहुत चर्चा होती हैं कि एक बार आरपार की लड़ाई हो जाये, यह कहना सरल हैं पर इसके कितने दुष्परिणाम होंगे यह कहना संभव नहीं है, पर यह व्यक्तिगत लड़ाई न होकर एक समुदाय की लड़ाई है जो जेहाद आदि के नाम से क्या-क्या कर सकती है पर यदि हमें मौका मिले तो उसे अधमरा न छोड़े कारण वह बहुत घातक होता है।

एक बार ऐसा मजा चखाओ उसे कि आने वाली नस्ल बहुत दिनों तक रहे, क्यों नहीं समझते मूढ़ जन ? कितनी बर्बादी होती है ? तन मन धन जन की। यही समय धन लगायें देश के विकास में, मिल बैठकर गायें। फिर चौपाइयां राम और रसखान की। कितना भी लड़ों, पर रहना होगा अमन से, हमसे न टकरायें क्योंकि तुमको हैं गुंजाइश मिट जाने की।

चलो देखें यात्रा

राजगृही

महाराजा श्रेणिक की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि राजगृही रही है। राजगृही का नाम सुनते ही इतिहास के अनेक तथ्य सामने कौंधने लगते है। जिनमें अजातशत्रु बिम्बसार, अभय मंत्री जैसे महापुरुषों का चरित्र सामने आने लगता है। राजगृही के दुर्ग एवं ऐतिहासिक स्मारक तथा पंचपहाड़ी तीर्थ एवं मुनिसुव्रतनाथ भगवान की कल्याणक भूमि एवं भगवान महावीर स्वामी की प्रथम देशना भूमि जैनों का महत्वपूर्ण तीर्थ है। यहाँ स्थित विपुलाचल, रत्नागिरी, उदयगिरी, अरूणगिरी (स्वर्णगिरि) व वैभारगिरी आदि 5 पहाड़ियों से अनेक मुनियों ने निर्वाण प्रापत किया है। इसलिये इसे सिद्धक्षेत्र माना गया है। लाल मंदिर के प्राँगण में गणिनी प्रमुख आचार्य ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा से भगवान मुनिसुव्रतनाथ की 12.25 की प्रतिमा कमलासन पर विराजमान की गई है। राजगृही जैनधर्म की अतिरिक्त हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, सिख, ईसाई, धर्मो का संगम प्रकृति प्रदत्त गर्म जल के झरने यहाँ के विशेष आकर्षण है इस क्षेत्र को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप से मान्यता प्राप्त है।

आवास व्यवस्था - 80 कमरे अटैच वाथरूम, 30 कमरे बिना वाथरूम, 4 हाल यात्री क्षमता 100, गेस्ट हाऊस नहीं है। कुल यात्री क्षमता 1000 है। 20 ए.सी कमरे हैं। औषधालय पुस्तकालय है, भोजनशाला सशुल्क नियमित है। विद्यालय नहीं है।

संपर्क सूत्र - अजय जैन (मंत्री) 9334396990, श्री सुनील जैन :9334008611

कविता

चाँदी सी चंदेरी

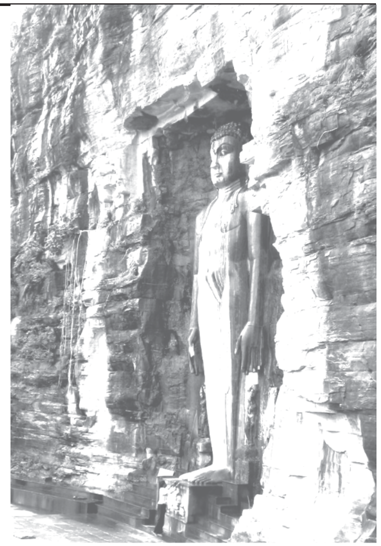

चाँदी सी चंदेरी मेरी प्यारी सी चंदेरी
यहाँ सोना सा सबेरा यहाँ देवों का बसेरा
जरा देखो तो देखो तो...
युग की आदी ईश प्रभु की सुंदर प्रतिमा उच्च है
सकल कुंड खंदारगिरि की महिमा अनुपम सत्य है
अतिशय इतना इस तीर्थ का मुख से कहा न जाये
पुरा सम्पदा ठौर ठौर पर महिमा वरणी न जाये
सप्त जिनालय मंदिर मस्जिद धर्मनगर अभिराम है
चौबीसी का चमत्कार तो बिगड़े बनाते काम है।

आगम दर्शन

चतुर्विंशति जिन स्तवन स्वम्भूस्तोत्र

प्रस्तुत ग्रंथ में 143 काव्य हैं। इस ग्रंथ में ऋषभदेव से लेकर महावीर भगवान का तक चौबीस तीर्थंकरों की क्रमशः स्तुतियाँ हैं। इस स्तोत्र में गम्भीर भक्ति रस की अनुभूति एवं तर्क युक्त चिंतन निबद्ध है। अतः इसे सरस्वती की स्वच्छंद विहार भूमि कहा जाता है। इस ग्रंथ की संस्कृत टीका आचार्य प्रभाचन्द्र जी ने की है। ऋषभदेव से लेकर कुन्थुनाथ तक प्रत्येक स्तवन में 5 काव्य हैं तथा मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नमिनाथ, पार्श्वनाथ कें स्तवन में भी 5-5 काव्य ही हैं। मात्र अरनाथ में 20 काव्य, नेमीनाथ स्तवन 10 काव्य, और वीरनाथ जिनस्तवन में 8 काव्य हैं। इस तरह से कुल 143 काव्य हैं।

इस स्तोत्र में कवि ने प्रबन्ध पद्धति के बीजों को निहित कर इतिवृत्त सम्बन्धी अनेक तथ्यों को प्रस्तुत किया है। प्रथम तीर्थंकर को प्रजापति के रूप में असि, मषि, कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य का उपदेष्टा कहा है। इस स्तोत्र में आये हुए **निर्दय-भस्मसात्क्रियाम्** पद से सम्भवतः आचार्य ने अपनी भस्मक व्याधि का संकेत किया है तथा सम्भवनाथ की स्तुति में सम्भवजिन को वैद्य को रूपक देकर अपनी जीवन घटनाओं की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार **यस्याङ्ग-लक्ष्मी-परिवेश भिन्नं तमस्तमोरेखिरश्मि भिन्नम्** पद से राजा शिवकोटि के शिवालय में घटित हुई घटना का संकेत प्राप्त होता है।

समन्तभद्र ने वाद (शास्त्रार्थ) द्वारा जैन सिद्धांतों का प्रचार किया था। श्रवणबेलगोला के अभिलेखों के अनुसार पाटलिपुत्र, ढक्क, मालव, कांची आदि देशों में उन्होंने शास्त्रार्थ कर जिन सिद्धांतों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की थी। इस ओर भी उनका संकेत **स्वपक्ष-सौस्थित्य-मदावलिप्ता वाकसिंह-नादैर्विमदा वभूवुः** पद्यांश से मिलता है।

शान्तिनाथ तीर्थंकर ने चक्रवर्तित्व पद प्राप्त किया था ओर उन्होंने षटखण्ड की दिग्विजय कर समस्त राजाओं को कैद बनाया था। उनके राज्यकाल में प्रजा अत्यतः सुखी और समृद्ध थी। इस बात की सूचना निम्नलिखित पद्यांशों से प्राप्त होती है।

उदाहरणालंकार- सुखाभिलाषाऽनलदाहमूर्च्छित मनो निजं ज्ञानमयाऽमताम्बुभिः व्यदिध्यपस्त्वं विषदाहमोहितं तथा भिषगमन्त्रगुणैः स्वविग्रहमः।

रूपकालंकार – स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्न दोषाभ्रकलङ्क लेपः।

व्याकोशवाङ्-न्याय-मयूखमालः पूयात्पवित्रो भगवन्मनो मे।

उपमा- पद्मपभः पदमपलाश-लेश्यः पद्मालयाऽऽ लिङ्गित चारूमूर्त्तिः।

बभो भवान् भव्य-पयोरूहाणां, पद्माकराणामिव पद्मबन्धुः। संक्षेप में स्तोत्रकाव्य में एकान्ततत्व की समीक्षा पूवर्क स्याद्वाद नय से अनेकान्तामृत तत्व की स्थापना की है।

केरियर

फूड़ टेक्नोलॉजी में अवसर

फूड़ टेक्नालॉजी साइंस की एक ब्रांच है, जिसमें फूड साइंस का उपयोग फूड प्रोडक्ट की मैन्युफैक्चरिंग और संरक्षण में किया जाता है। फूउ टेक्नोलॉजी में खाद्य उत्पादों को सुरक्षित रखने के लिये नये सिस्टम और तरीके डवलप करना शामिल है। ताकि प्राकृतिक समस्याओं जैसे कीटाणु आदि से बचाव किया जा सके। इसका उपयोग लंबे समय से होता आ रहा है जिसमें लुई पाश्चर द्वारा पाश्चुराइजेशन की प्रक्रिया का विकास किया जाना भी शामिल है। वर्तमान में बढ़ते उपयोग से इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। भारत में खाद्य उत्पादन और संरक्षण बड़े स्तर पर होता है और इस प्रक्रिया में उपयोग होने वाली तकनीक में लगातार बदलाव हो रहा है। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में फूड टेक्नोलॉजी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसमें छोटे और बड़े सभी तरह के खाद्य उत्पाद जैसे गेहूँ, चावल, शक्कर, तेल आदि और इन्हें खाने योग्य बनाना शामिल हैं। फूड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में रिसर्च व डेवलपमेन्ट से ही ज्यादा से ज्यादा सुरक्षित और न्यूट्रिशनिस्ट भोजन बनाना मुमकिन हो सका है। इसको बेहतर बनाने के लिये लगातार रिसर्च हो रही है।और विभिन्न प्रकार के तरीके डवलप किय जो रहे हैं। फूड टेक्नोलॉजिस्ट न्यूट्रिशन युक्त खाद्य पदार्थ से जुड़ी विभिन्न प्रकार की प्रकियाओं में शामिल रहते हैं। ये खाद्य पदार्थों के केमिकल फिजिकल और माइक्रोबायोलॉजिकल ढ़ाचे की स्टडी करते हैं। खाद्य पदार्थों को सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार प्रोसेस्ट प्रिजर्व व पैकेज्ड होता है।

कविता

बाड़ी के बड़े बाबा

बाड़ी के बड़े बाबा तेरी महिमा न्यारी
तूं वीतरागी तेरी मूरत कितनी प्यारी
तू बारना के धार के किनारे बैठा है
सारे जग के काज छोड़ अपने सो, मैं बैठा है
तू जग का ईश स्वामी है युक्ती को समारी
मुक्ती का मार्ग दे गये सारे जगत को,
तून बन गया प्रजापति उपदेश जगत को
सर्वज्ञ देव आदिनाथ भवि बुद्धि सुधारी
हजारो नाम ले के इन्द्र करता है पूजा
तुम जैसा देव न दिखे हमको कोई दूजा
भव सागर से तार दो नाव हमारी।

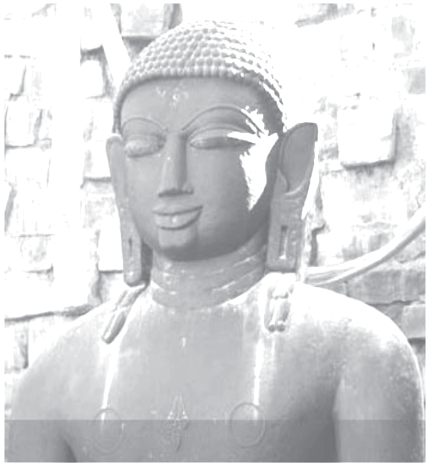

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अक्टूबर 2020
आई दिवाली जग-मग

प्रथम-

घर घर लगा दीप का मेला
वीर प्रभू निर्वाण की बेला
खुशियाँ मिलती हैं पग पग
देखो भाई दिवाली जगमग

- श्रीमती राजुल जैन, इन्दौर

द्वितीय-

धान के फूला और मिठाई
खाके नाचें यादव भाई
चहके खुशी से देखो सब जग
नाचो आई दिवाली जगमग

-श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

वर्षा गई शरद ऋतु आई
निवार्ण दिवस पर खुशियाँ छाई
डूब खुशी में फड़के रग रग
झूमों आई दिवाली जग मग

-श्रीमती उर्मिला जैन, भोपाल

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
सितम्बर 2020 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्र जैन, इन्दौर
द्वितीय : श्रीमती आशा जैन, अहमदाबाद
तृतीय : श्रीमती राजश्री जैन, मुम्बई

वर्ग पहेली क्र. 253
सितम्बर 2020 के विजेता

प्रथम : आयुषी जैन, गंजबासौदा
द्वितीय : राजेश जैन, इन्दौर
तृतीय : श्रीमती कमला जैन, खरगोन

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अक्टूबर 2020 का हल

01. लोहारिया बासवाड़ा-10
02. सोनागिरि-3
03. बसंतकुंज दिल्ली-1
04. श्री दिगम्बर जैन मंदिर -1
05. क्षेत्रपाल जी ललितपुर-8
06. अंधवा इलाहाबाद-3
07. नेमगिरि-3
08. सोनागिरि-1
09. शाजापुर, सुसनेर-2
10. ऐनापुर, कर्नाटक-4
11. फिरोजपुर, हरियाणा-8
12. बिहारी, दिल्ली-1
13. उन्यारा, खुर्द राजस्थान-1
14. बोरीबली, मुंबई-2
15. हलघड़ी, कर्नाटक-1
16. मुरादनगर (उ.प्र.)-1
17. बिजनौर (उ.प्र.)-1
18. मंडौला, गाजियाबाद-7
19. बीसपंथी कोठी, मधुवन-12
20. निश्चयगिरि, कर्नाटक-1
21. मुरादनगर (उ.प्र.)-3
22. सनावद-2
23. टिकैतनगर, बाराबंकी-6
24. शिखरजी-4
25. चंवलतट उदी, इलाहाबाद-8
26. उदी, इटावा-8
27. जियागंज, पश्चिमबंगाल-2
28. अडुल, औरंगाबाद-4
29. लोकुर, कर्नाटक-1
30. बागीदौरा, राजस्थान-1
31. मदनगंज किशनगढ़-2
32. नागल्या, विलवा टोंक-1
33. रैनी-तिजारा-1
34. श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी-5
35. कानपुर (उ.प्र.)-1
36. गोरेगाव, मुंबई-2
37. मजदेवाडी, महाराष्ट्र-1
38. महावीरजी, राजस्थान-1
39. तिजारा, राजस्थान-4
40. सिकन्दराबाद (उ.प्र.)-1
41. कटक, उड़ीसा-2
42. ग्वालियर चंपाबाग-3
43. श्री महावीरजी-1
44. डबरा-1
45. घियागंज, मथुरा-2
46. मवाना, मेरठ (उ.प्र.)-3
47. म्हैसवर्ड सतारा, महाराष्ट्र-1
48. कुगनौली, बेलगांव-3
49. शिखरजी-5
50. हलगा, कर्नाटक-2

पुराण प्रेरणा

विवेक शुन्य कामीजन

समाधये हि सर्वोऽयं परिस्पन्दो हितार्थिनाम्।
परोपकारी पुरुषों की सम्पूर्ण क्रियाएँ दूसरों की भलाई के लिये होती हैं।

भवेत्स्वार्था परार्थता।
परोपकार में स्वोपकार भी निहित है।

परोपकार वृत्तीनां पर तृप्तिः स्वतृप्तये।
परोपकारी के लिये दूसरों की सन्तुष्टि ही अपनी संतुष्टि है।

मुख्यं फलं ननु फलेषु परोपकारः।
सब फलों में परोपकार ही मुख्य फल है।

यशस्तु सत्कथाजन्म यावच्चन्द्रा-कर्तारकम्।
सत्पुरुषों की कथा से उत्पन्न यश जब तक चन्द्र, सूर्य और तारे हैं तब तक रहता है।

दन्तास्त एव ये शान्त कथा संगमरंजिता।
दांत वही है जो शान्त कथाओं के समागम से रंजित रहते हैं।

सा कथा यां समाकर्ण्य हेयोपादेय निर्णयः।
कथा वही है जिसके श्रवण से हेय और उपादेय का निर्णय होता है।

कुटुम्बकल हो यत्र तत्र स्वास्थ्यं कुतस्तनम्।
जिस परिवार में कलह हो वहां स्वास्थ नहीं रह सकता।

कामग्रह गृहीतस्य का मर्यादा क्रमोऽपि कः।
कामी मनुष्य के लिये कोई मयार्दा और नियम नहीं होते।

को विवेको हि कामिनाम्।
कामी जनों को विवेक नहीं रहता।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ य् अ ध् न उ आ क् म् र् आ च् र् अ इ त्र् इ
2. ण इ इ क् च् र् अ इ त्र् इ
3. ए अ म् अ र् स् न् अ च् र् अ इ त्र् इ
4. अ र व् न् अ ध् अ च् र् अ इ त्र् इ
5. आ र् ग् ग् अ च् र् अ इ त्र् इ

परिणाम :
अक्टूबर 2020: (1)जिन स्तुतीयम् (2) जिन सरस्वती (3) जिन संस्कार भारती (4) जिन वंदनम् (5) जिन भारती संग्रह

■ 1 सितम्बर

- उज्जैनः महाकाल के शिवलिंग पर सुप्रीम कोर्ट का अहं फैसला आया ज्योतिर्लिंग को रगड़ने और पंचामृत पर रोक लगाई।

- भारतीय सेना ने चुमार में चीनी सेना को खदेड़ा।

- नौसेना के मटेरियल प्रमुख वाइस एडमिरल एस.आर सरमा बने।

■ 2 सितम्बर

- केन्द्र सरकार ने पबजी सहित 118 चीनी एप पर बैन लगाया।

- भोपालः स्टिंग ऑपरेशन और ब्लेक मेलिंग के मामले में क्राइमब्रांच में न्यूज चैनल लाइव के दफ्तर पर छापा मारा।

-इंदौर : पूर्व शिवसेना प्रमुख रमेश साहू की हत्या हुई अज्ञात लोगों ने गोली मारकर हत्या की, वे 65 वर्ष के थे।

■ 3 सितम्बर

- दिग्गज अभिनेता दिलीप कुमार के छोटे भाई एहसान खान का निधन वे 90 साल के थे।

- सेना प्रमुख जनरल मुकुंद नखणे लेह पहुँचे। चीन ने लद्दाख में तैनात किये 5 मिले शियादस्ते।

- कुवैत से कच्चा तेल लेकर आ रहे एक तेल टैंकर में आग लगी टैंकर श्रीलंका से 70 कि.मी. दूर था।

■ 4 सितम्बर

- चीन में स्कूल कॉलेज सिनेमा हाल खुले सुप्रीम कोर्ट ने जे.ई.ई. एवं नीट परीक्षा रोकने हेतु पुनर्विचार याचिका खारिज की।

- चीन के रक्षामंत्री वेईफेंग से रक्षामंत्री राजनाथ सिंह मिले।

■ 5 सितम्बर

- रूस में रक्षा मंत्रियों की बात-चीत के बाद भी चीनी युद्ध विमानों ने दक्षिण पैगावा में उड़ान भरी।

- इलाहाबाद : हाईकोर्ट ने जे.एन.यू छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष की नागरिकता छीनने की याचिका खारीज की।

- छतरपुर प्रसिद्ध लोकगीत गायक देश-राज पटैरिया का निधन हुआ वे 67 वर्ष के थे।

■ 6 सितम्बर

- संविधान के रक्षक केशवानंद भारती का निधन हुआ वे 79 वर्ष के थे।

- इंदौरः आनंद मोहन माथुर सभागृह में आग लगी।

-ओसमा विन लादेन की भतीजी नूर ने डोनाल्ड ट्रम्प की तारीफ की।

■ 7 सितम्बर

- चीन ने लद्दाख की सीमा युद्धाभ्यास शुरु किया। उसके 100 गाड़ियों में 1000 सैनिक पहुँचे।

- आई.सी.आई.सी.आई बैंक की पूर्व सी.ई.ओ. चंद्राकोचर के पति दीपक कोचर को ई.डी. ने गिरफ्तार किया।

- कुशीनगरः घर में सो रहे व्यक्ति को बदमाश गोली मारकर भाग रहा था वह भीड़ के हत्थे चढ़ गया भीड़ ने पीट पीट कर बदमाश को मार डाला।

■ 8 सितम्बर

- चीन की सेना ने मध्ययुगीय हथियार गुआनदओ से वार किया भारतीय सेना पत्थर से आक्रमण कर खदेड़ा।

- ड्रग्स मामले में रिया चक्रवर्ती को तीन दिन पूछतांछ के बाद गिरफ्तार किया।

- 24 घंटे में भारत में कोरोना के 1लाख मरीज मिले।

■ 9 सितम्बर

- भारत के तेवर से चीन घबराया भारतीय सेना ने फिंगर 4 में अपनी बढ़त कायम की।

- राष्ट्रपति भवन में तैनात टेक बहादुर भाषा (40 वर्ष) ने फाँसी लगाई।

- भारतीय मूल के कारोबारी सुनील चौपडा दूसरी बार लंदन बरो ऑफ साउथवार्क के डिप्टीमेयर चुने गये।

■ 10 सितम्बर

- रफाल लड़ाकू 5 विमान वायुसेना में विधिवत प्रविष्ट हुये।

- भारतीय सेना ने पेंगाना में कटीले तारों से लक्ष्मण रेखा बनाई।

- राजद नेता रघुवंश प्रसाद सिंह ने पार्टी से इस्तीफा दिया आप केन्द्रीय मंत्री रहे।

■ 11 सितम्बर

- चुनाव आयोग ने चुनाव प्रत्याशी के अपराधिक इतिहास प्रकाशित करने हेतु नियम कड़े किये।

- म.प्र. में जे.ई.ई. मेन्स का परिणाम घोषित हुये आकर्ष जैन ने टॉप किया।

- गुलाम नवी आजाद का काँग्रेस महासचिव का पद छीना।

- समाज सुधारक स्वामी अग्निवेश का निधन हुआ वे 80 वर्ष के थे।

■ 12 सितम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 1.75 लाख परिवारों को वर्चअल कार्यक्रम के माध्यम से गृहप्रवेश कराया।

- भरतपुर डींग पूर्व राजा मालसिंह का फर्जी एनकाउंटर करने वाला कानसिंह भाटी का निधन हुआ।

- अनुराधा पौड़वाल के बैटे आदित्य पौड़वाल का निधन हुआ। वे 35 वर्ष के थे।

■ 13 सितम्बर

- हरियाणा : पंजाब हाईकोर्ट ने राजमार्गे के 1 किमी. तक खनन कार्य पर रोक लगाई।

- कोरोना के चलते नीट का परीक्षा हुई 58860 परीक्षार्थी पंजीबृद्ध थे।

-पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. रघुवंश प्रसाद का निधन हुआ। वे 74 वर्ष के एवं गणित के प्रोफेसर थे।

■ 14 सितम्बर

- संसद के दोनों सदनों के मानसून सत्र प्रारंभ हुये। देवेन्द्र विजय दर्डा ए.बी.सी के अध्यक्ष चुने गये।

- दिल्ली हाईकोर्ट में केन्द्र सरकार ने कहा कानून में समलैंगिक शादी को मान्यता नहीं।

- सांसद हनुमान बेनीवाला की कोरोना रिपोर्ट दिल्ली में पॉजिटिव आई और जयपुर में नेगेटिव आई।

■ 15 सितम्बर

- इंदौर-भोपाल को मेट्रोपोलिटन को केबिनेट ने मंजूरी दी।

- म.प्र. के राजगढ़ व्यावरा विधायक गोवर्धन दांगी की कोरोना से निधन हुआ।

- संयुक्त राष्ट्र में भारत ने चीन को शिकस्त दी कमीशन ऑन स्टेट्स वुमन का सदस्य बना।

■ 16 सितम्बर

- भोपालः माखन सिंह चौहान म.प्र. तीर्थस्थान एवं मेला प्राधिकरण के अध्यक्ष बने।

कोटाः जिले के खातौला के पास चंबल नदी में नाव पलटने से 11 लोगों की मौत हुई तथा लापता हुये।

- संसद में केन्द्र सरकार की ओर से आये 3 कृषि विधेयकों का किसने विरोध प्रदर्शन जन्तर मन्तर पर किया।

■ 17 सितम्बर

- केन्द्रीय मंत्री हरसमत कौर ने कृषि अध्यादेश के विरोध में इस्तीफा दिया।

- श्रीनगरः बाटमालू इलाके में सुरक्षाबलों ने 3 आतंकी मार गिराये रजवान घायल हुये 1 महिला की मौत हुई।

- राज्यसभा सांसद अशोकगस्ती का कोरोना वायरस से निधन के 55 वर्ष के थे।

■18 सितम्बर

- 24 घंटे में कोरोना 1 लाख पॉजिटिव हुये।

- लाहौर जेल से छूटा अनिल साकेत अपने घर रीवा पहुँचा।

- चीन ने स्वीकार किया कि गलवान में चीन के सैनिक मारे गये।

■ 19 सितम्बर

- कोरोना काल में आई.पी.एल शुरू हुआ।

- बड़े हमले की साजिश रचते पाकिस्तानी प्रायोजित अलकायदा के 9 आतंकी को एन.आई.ए ने गिरफ्तार किया।

- कई सांसद कोरोना संक्रमित होने सर्वदामीय बैठक में तय हुआ कि मानसून सत्र जल्दी समाप्त किया जायें।

■ 20 सितम्बर

- भारत ने एल.ए.सी 6 अहं स्थान अपने नियंत्रण में लिये यह अहं सफलता मानी गई।

- राज्यसभा में दो कृषि विधेयक पास हुए राज्यसभा विपक्ष के सांसदों हंगामा किया विपक्ष उपसभापति के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाया।

- पाकिस्तान में एक सिख लड़की को अगवा किया गया और धर्म परिवर्तन कराकर निकाह एक लड़के से करा दिया गया।

■ 21 सितम्बर

- इतिहास में पहली बार कोरोना के साये में विधानसभा वर्चुअल सत्र सम्पन्न हुआ।

- राज्यसभा में उपसभापति के विरूद्ध आये अविश्वास प्रस्ताव गिर गया 8 सांसद निलम्बित हुये।

- म.प्र. में 9-12 तक के स्कूल खुले।

-अमेरिकी एयरफोर्स में प्रज्ञा शेखावत लेफ्टिनेंट बनी।

■ 22 सितम्बर

- म.प्र. हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस संजय यादव को नियुक्त किया गया।

- ड्रग्स मामले में बॉलीवुड की अभिनेत्री दीपिका पादुकोण का नाम आया एनसीबी समन भेजेगी।

■ 23 सितम्बर

- केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री सुरेश अंगड़ी का निधन कोरोना से हुआ वे 65 वर्ष के थे।

- एन.सी.बी ने ड्रग्स मामले में दीपिका पादुकोण फिल्म अभिनेत्री श्रद्धा कपूर, सारा अलीखान , रकुल प्रीत सिंह को समन भेजा।

- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने टैंक रोंर्धा मिसाईल का सफल परीक्षण किया।

■ 24 सितम्बर

- परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्वाध्यक्ष पद्मश्री परमाणु वैज्ञानिक डॉ. शेखर वसु का कोरोना संक्रमण से निधन हुआ वे 68 वर्ष के थे।

- 55वां ज्ञानपीठ पुरुस्कार के लिये मलयालम कवि अच्युतन नंबूदरी का चयन हुआ।

- आस्ट्रेलिया क्रिकेटर डीन जोन्स का हृदयाघात से निधन हुआ वे 59 वर्ष के थे।

■ 25 सितम्बर

- प्रसिद्ध संगी सितारा एस.पी. बाला सुब्रमण्यम् का निधन हुआ वे 74 वर्ष के थे।

- चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव की तिथि घोषित की तीन चरण में मतदान होगा, मतगणना 10 नवम्बर को होगी।

- किसानों ने कृषि विल को विरोध में भारत बंद का आह्वान किया था जिसका प्रभाव पंजाब हरियाणा में दिखा।

■ 26 सितम्बर

- अकालीदल ने एन.डी.ए. नातातोड़ दिया सिखों की उपेक्षा का आरोप लगाया।

- एन.सी.वी के सामने दीपिका पादुकोण स्वीकार किया ड्रग्स चैट उनका ही है।

- मथुरा में भगवान कृष्ण ने अपनी जन्मभूमि पर दावा ठोक रंजना अग्निहोत्री ने दाखिल किया।

■ 27 सितम्बर

- पूर्व केन्द्रिय मंत्री जसवंत सिंह का निधन हुआ वे 82 वर्ष के थे।

- चीन की सीमा एल.ए.सी पर भारत ने विध्वंसक टैंक तैनात किये।

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विरोध के बाद भी 3 कृषि विधेयक पर हस्ताक्षर मंजूरी दी।

■ 28 सितम्बर

- प्रसिद्ध गीतकार ओमप्रकाश कटारिया अभिलाष का निधन हुआ वे 74 वर्ष के थे। उन्होंने **इतनी शक्ति हमें देना दाता गीत** लिखा।

-आई.ए.एस. अधिकारी पी.डी. बाघेला दूर संचार नियामक प्राधिकरण के अध्यक्ष बने।

- कृषि बिल के खिल के विरोध में केरल कॉंग्रेस ने अदालत का दरवाजा खटखटाया।

■ 29 सितम्बर

- म.प्र. की 28 विधानसभा उपचुनाव की घोषणा हुई। मतदान 3 नवम्बर को होगा।

- हाथरसः 20 वर्षीय दलित बेटी की गेंगरेप के बाद दिल्ली सफदर जंग अस्पताल मौत हुई।

- उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू कोरोना पॉजिटिव हुये।

■ 30 सितम्बर

- बांवरी मस्जिद मामले में 28 साल बाद फैसला आया और 32 आरोपी बरी हुये।

- मथुरा कोर्ट ने कृष्ण जन्म भूमि सटी मस्जिद हटाने की मांग करने वाली याचिका को खारिज किया।

- कॉग्रेस के प्रदेश महामंत्री अशोक शर्मा ने पार्टी पद से इस्तीफा दिया।

दिशा बोध

प्रेम

1. ऐसी अर्गला अथवा डंडा(वेंड़ा) कहाँ है, जो प्रेम के दरवाजे को बन्द कर सके ? प्रेमियों की आंखो के मन्द-मन्द अश्रुबिन्दु अवश्य ही उपस्थित की घोषणा किये बिना न रहेंगे।
2. जो प्रेम नहीं करते, वे केवल अपने लिये ही जीत हैं और जो दूसरों से प्रेम करते हैं, उनकी हड्डियाँ भी दूसरों के काम आती है।
3. कहते हैं कि प्रेम का आनन्द लेने के लिये ही आत्मा एक बार फिर अस्थि-पिंजर में बन्द होने कोरा जी हुआ है।
4 प्रेम हृदय स्निग्ध हो उठता है और उसे स्नेहशीलता से ही मित्रतारुपी बहुमूल्य रत्न पैदा होता है।
5. लोगों का कहना है कि ''इस लोक और परलोक दोनों स्थानों में ही भाग्यशाली का सौभाग्य उनके निरन्तर प्रेम का ही पारितोषिक है।''
6. वे मूर्ख हैं जो कहते हैं कि 'प्रेम केवल सदगुणी मनुष्य के लिये ही है'' क्योंकि दुष्टों के विरुद्ध खड़े होने के लिये भी प्रेम ही एकमात्र साथी है।
7. देखो, अस्थिहीन कीड़े को सूर्य किस तरह जला देता है। ठीक उसी तरह धर्मशाला उस मनुष्य को जला डालती है, जो प्रेम नहीं करता।
8. जो मनुष्य प्रेम नहीं करता, वह तभी फूलेगा,जब मरुभूमि के सुखे वृक्ष के ठूँठ में कोपलें निकलेंगी।
9. वह बाह्य सौंदर्य किस काम का, जब तक कि हृदय में प्रेम न हो, जो आत्मा का भूषण है।
10. प्रेम मनुष्य का प्राण है। जिसमें प्रेम नहीं, वह केवल मांस में लिपटी हुई हड्डियों का ढेर है।

इसे भी जानिये

प्राच्य भाषा में भारत

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
01.	इण्डिया विन्स फ्रीडम	मौलाना अबुल कलाम आजाद (अंग्रेजी)
02.	इण्डिया	इंदिरागांधी (अंग्रेजी)
03.	इण्डिया	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (अंग्रेजी)
04.	आई फोलो दि महात्मा	के.एम. मुन्शी (अंग्रेजी)
05.	इण्डियन मुस्लिम	प्रो. मुहम्मद मुजीब
06.	इण्डिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू	दुर्गादास (अंग्रेजी)
07.	इण्डियन वार ऑफ इनडिपेडेंस	वीर सावरकर (अंग्रेजी)
08.	इन जेल आई.एम.नाट इन आइलैण्ड	के.ए. अब्बास (अंग्रेजी)
09.	इण्डिया आफ्टर नेहरू	कुलदीप नैयर (अंग्रेजी)
10.	इंदिराज इण्डिया	एस.निहाल सिंहा (अंग्रेजी)
11.	इंदिरा गांधी एण्ड दि एमरजेन्सी	वेद मेहता (अंग्रेजी)
12.	इन दि काज ऑफ दि प्यूपिल	ए.के. गोपालन (अंग्रेजी)
13.	इंदिरा गांधी रिटर्नस	खुशवंत सिंह (अंग्रेजी)
14.	इंदिरा गांधी एण्ड हर पॉवर गेम	जनार्दन ठाकुर (अंग्रेजी)

आओ सीखे : जैन न्याय

त्रिलक्षण हेतु रूपवाद की समीक्षा (बौद्ध)

बौद्धदर्शन के अनुयायियों ने हेतु के लक्षण साध्याविनाभावी स्वीकार नहीं करते हुये, हेतु के तीन लक्षण मान्य किये हैं, 1. पक्षधर्मत्व, 2. सपक्ष सत्व, 3. विपक्ष असत्व। ये तीन लक्षण जिसमें पाये जाये वही सम्यक् हेतु हैं।

जहाँ साधन के सद्भाव में साध्य का सद्भाव दिखाया जाये उसे सपक्ष कहते हैं, जैसे- रसोईघर।

जहाँ साध्य के अभाव में साधन का अभाव दिखाया जाये उसे विपक्ष कहते हैं ,जैसे- तालाब।

तर्क 1. - पक्ष में हेतु रहने से असिद्धता का दोष नहीं रहता, सपक्षता में हेतु के रहने पर विरुद्धता दोष नहीं रहता एवं विपक्ष में हेतु नहीं रहने से अनेकांतिक दोष नहीं रहता।

निष्कर्ष - अतः त्रिदोष से दूर त्रिलक्षणयुक्त हेतु ही ठीक होता है।

जैनाचार्य को यह त्रिलक्षण युक्त हेतु मान्य नहीं रहा, उन्होंनें त्रिलक्षण हेतु के विरोध में अपने तर्क इस प्रकार दिये-

तर्क 1 - ये त्रिरुप्य लक्षण सदोष हेतु में भी पाये जाते हैं जैसे- अग्नि का लक्षण सत् -ठीक नहीं हैं, क्योंकि सत् प्रत्येक पदार्थ में पाया जाता है। पक्षधर्म आदि हेत्वाभास में भी रह जाता है। अतः वह हेतु का लक्षण नहीं हो सकता है।

तर्क 2 - त्रिरूप्य की कल्पना व्यर्थ है, क्योंकि त्रैरूप्य के बिना भी अविनाभाव रूप नियम के होने से ही हेतु अपने साध्य की सिद्धि करने में समर्थ सिद्ध होता है। जैसे- रोहिणी नक्षत्र का उदय होगा, क्योंकि कृतिका का उदय हो चुका है, इस अनुमान में पक्षधर्मता नहीं है

तर्क 3 - आकाश में रोहणी का उदय होगा क्योंकि वह कृतिका उदय से युक्त है, ऐसा कहने पर पक्षधर्मता बौद्ध भले ही कहे, किन्तु ऐसा कहने पर तो सभी हेतु के पक्षधर्मता बन जायेगी, जगत को पक्ष बनाकर मकान को सफेद सिद्ध करने के लिये कौवेके कालेपन को भी हेतु बनाकर उसमें पक्षधर्मता की कल्पना की जा सकती है, जैसे- यह जगत् सफेद मकान वाला है। अतः पक्षधर्मता हेतु का लक्षण नहीं हो सकता है।

तर्क 4 - सपक्षधर्मता हेतु का लक्षण नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे बहुत से हेतु है जो सपक्ष में नहीं रहते फिर भी साध्य की सिद्धि करने में समर्थ हैं जैसे शब्द अनित्य है, क्योंकि वह सुनाई देता है। विपक्ष असत्व लक्षण भी हेतु का कारण नहीं हो सकता है।

तर्क 5 - साध्य के साथ अविनाभाव नियम में बद्ध होने के कारण ही गमक होते हैं तो अविनाभाव को ही हेतु का लक्षण मानना चाहिये।

तर्क 6 - अन्यथानुपपत्ति नियम के होने से ही हेतु में असिद्धता दोष आदि नहीं रहते।

तर्क 7 - विपक्ष असत्व हेतु का मुख्य लक्षण है, उसे ही अन्यथानुपपत्ति कहते हैं।

तर्क 8 - जहाँ अन्यथानुपपत्ति है वहाँ त्रिरूप्यलक्षण का क्या प्रयोजन। जहाँ अन्यथानुपपत्ति नहीं है, वहाँ त्रिरूप्यलक्षण का क्या प्रयोजन ?

निष्कर्ष - त्रिरूप्य लक्षण हेतु के स्थान पर एक मात्र अन्यथानुपपत्ति लक्षण ही उचित है।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

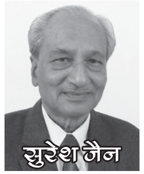

वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं सफदरजंग अस्पताल

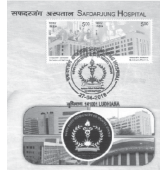

भारतवर्ष का लोकप्रिय मेडिकल कॉलेज और अस्पताल जो कि आधुनिक चिकित्सा, शिक्षा और उपचार का केन्द्र है, जिसमें इमरजेंसी, ओ.आी.आइ.सी.यु, ओ.पी.डी, केथलेब, फार्मेसी इत्यादि सब प्रकार की साहूलियत उपल्बद्ध हैं, यह दिल्ली के केन्द्र में 47 एकड़ से भी अधिक भू-भाग क्षेत्र में फैला हुआ है।

जब द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा हुआ था, उस समय जख्मी सैनिकों की बढ़ती संख्या तथा घायल यू.एस. सैनिकों की तत्काल उपचार की जरूरतों को देखते हुए यू.एस. आर्मी के कमान्डर जनरल, जोसेफ स्टिबेल ने दिल्ली में 100वें स्टेशन अस्पताल का निर्माण कराने का त्वरित निर्णय लिया। शीघ्र ही आर्मी बैरक में, अमेरिकन अस्पताल के नाम से लोकप्रिय एक नया अस्पताल शुरु हो गया। इस अस्पताल को शहर की एक मात्र हवाई पट्टी विलिंगडन एयर फील्ड के समीप बनाया गया था। इससे युद्ध में घायल सैनिकों को जो हवाई जहाज द्वारा दिल्ली पहुचाँये जाते थे उनको शीघ्र ही अस्पताल भेजने में सुविधा रहती थी। यह अस्पताल ई. सन् 1942 में 150 बैड, एक्स-रे मशीन तथा ऑपरेशन थियेटर के साथ शुरु कर दिया गया था। उस समय यू.एस. आर्मी मेडिकल कोर की नर्सों तथा डाक्टरों ने घायल सैनिकों को बचाने के लिये अस्पताल में रात-दिन अपनी सेवाएँ देनी शुरु कर दी थी।

युद्ध की समाप्ती के बाद 1947 में भारतवर्ष स्वतंत्र हो गया। भारत सरकार ने युद्धकालीन अमेरिकन अस्पताल को अपनी जनता को समर्पित करने का निर्णय लिया। जब इस अस्पताल को जनता के लिये खोला गया उस समय इसमें 204 बैड थे, तथा इस अस्पताल को अमेरिकन अस्पताल की जगह स्थाई नाम सफदरजंग अस्पताल दिया गया।

समय के साथ-साथ इस अस्पताल में नये विभाग, नई सुविधाएं तथा नई इमारते जुड़ती चली गई। यह अस्पताल मरीजों के लिए आशा का एक केन्द्र बन गया यहाँ उपचार से मरीजो को स्वास्थ्य लाभ होने लगा।

ई. सन् 1950 में यह अस्पताल देश में चिकित्सा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया, इसके चिकित्सा वार्डो तथा प्रयोगशालाओं में हजारों पैरामेडिको, नर्सों तथा एम.बी.बी.एस, एम.डी-एम एस तथा पोस्ट डॉक्टोरल छात्रों ने अपने चिकित्सा ज्ञान को बढ़ाया। यहाँ के वार्ड अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के छात्रों के प्रथम कुछ बेचों के लिये क्लिनिकल प्रशिक्षण के केन्द्र थे। ई. सन् 1972 से 1989 के बीच यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल सांइसेस के छात्रों के लिये यह मातृ संस्था था।

वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज :- वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज-सफदर जंग अस्पताल के साथ जुड़ा है। यह कॉलेज किलनिकल शिक्षण के लिये प्रसिद्ध हैं। कॉलेज गुरु गोविंद सिंह, इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के साथ परीक्षा के लिये जुड़ा हुआ है। इसकी स्थापना

नवम्बर 2001 में सफदरजंग अस्पताल में हुई थी तथा इसका उद्धाटन 17 दिसम्बर 2001 को श्री अटल बिहारी बाजपेयी तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। इस कॉलेज में उपचार सम्बन्धि 32 कोर्स पढ़ाये जाते हैं जिन में एम.बी.बी.एस, एम.डी, एम.एस, एम.सी.एल, डी.एन.बी, तथा डिप्लोमा शामिज हैं। वर्धमान् महावीर से मेडिकल कॉलेज, मेडिकल कौंसिल ऑफ इंडिया से मान्य प्राप्त है। कॉलेज के मुख्य द्वार के समीप भगवान महावीर स्वामी की एक बहुत सुन्दर प्रतिमा बनी हुई हैं।

सफदरजंग अस्पताल पर डाक टिकटः- यू.एस.आर्मी सिग्नल कॉर्प्स, नेशनल अर्काइव्य एंड रिकार्डस एडमिनिस्ट्रेशन, यूनाईटेड स्टेट्स से प्राप्त फोटोग्राफ्स पर आधारित जुड़वा (Pair) डाक टिकटों का सेट छापा गया है। प्रति डाक टिकट का मुल्य 50 पैसे हैं। इनमें प्रत्येक डाक टिकट को 603500 संख्या में प्रतिभूति मुद्रणालय हैदराबाद से छपवाया गया था तथा डाक टिकट व प्रथम दिवस आवरण 27 अप्रैल 2018 को जारी किया गया था।

प्रथम दिवस आवरण :- प्रथम दिवस आवरण पर ऊपर सफदरगंज अस्पताल लिखा है। नीचे सफदरजंग अस्पताल तथा भगवान महावीर मेडिकल कॉलेज के चित्र बने हुए हैं। चित्रों के सेन्टर में कॉलेज तथा अस्पताल को लोगो बना हुआ है जिस पर हिन्दी भाषा (देवनागरी) में भगवान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं सफदरगंज अस्पताल लिखा हुआ है।

कविता

मधुवन में पार्श्व प्रभु राजे रे

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु की महिमा अपरम्पार है।
जो भी इनके गुण को गाता उसका बेढा पार है
ऋषभ देव, अरू अजितनाथ की, संभव प्रभु अभिनंदन जी की
सुमति प्रभु को मन ध्याय के, भव से बेड़ा पार
पद्म सुपार्श्व जिनवर वंदा सुविधिनाथ शीतल पद वन्दा
श्रेयांसनाथ वासुपूज्य जी का सुमरण ही सुखकार
विमल अनंत धर्म शान्ति प्रभु जी, कुंथुनाथ अर मल्लि प्रभु जी
मुनिसुव्रत नमि नेमी प्रभु के गुण गाते उद्धार है।
पार्श्व प्रभु स्वामी महावीरा देते सबको भव का तीरा
धर्म तीर्थ प्रवर्तक सुमरण मन होता अविकार है।

नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्ट्य

* शोधछात्रा : श्रीमती अर्पिता रंजन, आष्टा भोजपुर *

जैन धर्म प्राकृतिक धर्म है, इसका आदिअंत नहीं है, इसका सिद्धांत है वत्थु सहावो धम्मो वस्तु का स्वभाव ही धर्म है, जैसे अग्नि में उष्णता, गन्ने की मिठास, नीम का कड़वापन उनका स्वाभाव है, यही उसका धर्म है जो हमेशा रहेगा। उसी तरह जीव आत्मा का स्वभाज्ञान एवं चेतना है।

जैन सिद्धान्तानुसार प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है, पेड़-पौधे से चीटी, छिपकली, बन्दर, मनुष्य सभी जीव सत्कर्म करके आत्मोन्नति करते हुए संसार के जन्म-मरण एवं दुखों से छुटकारा पा सकते हैं।

विलक्षण धर्म- जैन धर्म में भक्ति के लिये मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करके उनकी स्थापना की जाती है परन्तु उस मूर्ति की पूजा नहीं की जाती है, मूर्ति के माध्यम से उस मूर्ति में जिनके गुणों का गुणारोपण किया गया है उनकी पूजा की जाती है अर्थात् मूर्ति नहीं मूर्तिमान की पूजा की जाती है। जैसे मूर्ति में ऋषभदेव के गुणों की स्थापना की जाती है उससे ऋषभ देव की आराधना की जायेगी तथा जिसमें महावीर के गुणों की स्थापना की गई है, उससे महावीर की आराधना की जायेगी।

जैनधर्म में भगवान (केवली) अनंत हो सकते हैं परन्तु तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं। काल क्रमानुसार प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी में 24-24 ही तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान काल में तीर्थंकरों का सदभाव न होने के कारण उनकी प्रतिकृति (मूर्ति) में उनके गुणों का आरोपण करके पूजा की जाती है।

कला वैशिष्ट्य- तीर्थंकरों के जन्मस्थान, शरीर, दीक्षा स्थान, आयु एवं निर्वाण में भिन्नता होते हुए भी उनके गुणों में भिन्नता नहीं होती सभी में 1008 शुभलक्षण एवं उन पर आधारित नाम एक समान होते हैं। उसका वैशिष्ट्य प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में संग्रहीत मूर्तियों में मिलता है। मुझे कई जैन तीर्थों पर अन्वेषण का सौभाग्य मिला, पर जो वैशिष्ट्य नवागढ़ में मिला अन्य कही नहीं मिला।

जब क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार निशांत जी पहली बार लाल किला स्थित कार्यालय में आये और अपने डॉ संजय मंजुल डायरेक्टर एवं इंजी पी.सी. जैन को नवागढ़ के फोल्डर एवं पुरा सम्पदा के चित्र दिखायें, तो मेरी जिज्ञासा बढ़ी। श्री निशांत जी के जाने के बाद मैंने श्री पी.सी.जैन से इस क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की तो मुझे लगा यहां का भ्रमण अवश्य करना चाहिए।

मैं अपनी बहिन के साथ नवागढ़ पहुंची। वहाँ कोई मूर्तियों के साथ पुरा पाषाण कालीन 2 लाख 5 लाख वर्ष प्राचीन औजार, हजारों वर्ष प्राचीन संत साधना शैलाश्रय, पैट्रोलिक कपमार्क, शैलचित्र, शैलोत्कीर्ण मुद्रा, धातु काष्ट-उपकरण प्राचीन राजाओं एवं रानियों के मुकुट सहित शीर्ष अत्यंत विलक्षण हैं।

मैंने नवागढ़ में प्राप्त अभिलेखें के आधार पर शोध प्रबंध का कार्य श्रद्धेय डॉ. प्रकाशराम के निर्देशन में ब्र. निशांत जी एवं सरिता जी दिल्ली के सहयोग से आरंभ किया है।

मूर्ति वैशिष्ट्य - पार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन विशाल प्रतिमा लोग कुंए पर पाट के रूप में उपयोग करते थे, जिसके अंगोपांग तोड़कर जिसे पं. नीरज जी सतना संग्रहालय में लेकर आये थे।

अन्य मूर्ति जो कुए पर पड़ी श्री ग्रामीण उस पर लोहे के औजारों की धार बनाते थे तथा

महिलायें उस पर जल भरने के घड़े रखती थी। वर्षों वर्ष पश्चात् उस पाषाण को जब देखा गया तो उसमें तो उसमें सातवीं शदी की प्रतिहार कालीन ऋषभदेव की मूर्ति उत्कीर्ण थी।

भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति में जहाँ सर्प कुण्डली का आसन है ऊपर की ओर दो चंबरधारी हैं तथा नीचे की ओर धरणेन्द्र-पद्मावती भी चंवर धारण किये हैं। इस प्रकार एक प्रतिमा में 4 चंवरधारी अन्यमूर्ति में देखने को नही मिले।

डॉ. मारूतिनंदन तिवारी एमिटेट्स प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी के अनुसार इस पार्श्वनाथ बिम्ब में नीचे कुवेर यक्ष एवं अम्बिका यक्षी अंकित है जो नेमिनाथ के यक्ष-यक्षी है।

तीर्थंकर गुणों में समानता को मूर्ति में कैसे दर्शाया जाये तो शिलाकार ने इसमें धरणेन्द्र पद्मावती के साथ कुवेर एवं अम्बिका का अंकनकर के अद्वैतवाद को दर्शाने का प्रयास किया है।

जैन मूर्ति शिल्प वैशिष्ट्य- जैन प्रतिमा विज्ञान के अनुसार प्रतिमा के सभी अंगोपांगों का माप निश्चित है, उनमें हीनाधिकता नहीं होती है अन्यथा प्रतिमा दोषपूर्ण मानी जाती है। जैन मूर्ति शिल्प की विशेषता है कि उसका कोई भी अंग यथा शीर्ष, वक्षस्थल, स्कंध, हस्त, अंगुली, उदर एवं कटि भाग, जंघा, घुटना, चरण, परिकर या पादपीठ मिले तो उससे जैन मूर्ति का अस्तित्व सिद्ध होता है तथा उससे मूर्ति के आकार का ज्ञात भी किया जा सकता है।

नवागढ़ प्रवास में मैंने पाया कि शिल्पकार ने अपनी कल्पना शक्ति से दिगम्बरत्व में भी कला वैशिष्ट्य एवं कौशल का प्रदर्शन किया है। मूर्ति परिकर सज्जा, गजरात, मृदंगधारी, त्रिछत्र, माल्याधर, चंवरधारी, यक्ष, यक्षी, समर्पित श्रावक, पादपीठ आसन, लांघन, श्रीवत्स, केशविन्यास, लम्बकर्ण, नाभि सौन्दर्य मिलकर वीतरागता को उभारते हैं। उसका सौन्दर्य, मनोज्ञता, एवं वैराग्य का चुम्बकीय आकर्षण होता है। नवागढ़ में इसके कई मूर्ति शिल्प संगृहीत हैं।

मूलनायक का वैशिष्ट्य - मूलनायक आदिनाथ स्वामी का गम्भीर, नैत्राकृति, नसिका, ओस्ठ, लम्बकर्ण, वक्षस्थल, श्रीवत्स के साथ मानवाकार उदरावलि, पेडू, सुड़ोल जंघा, अत्यंत विलक्षण है जिसका शिल्प सभी को आकर्षित करता है।

हथेली और अंगुलियों का वैशिष्ट्य है कि मध्यमा हथेली की ओर है शेष तीन अंगुलियों अंगुस्ठ से भिन्न है। इस मुद्रा का वैशिष्ट्य अन्वेषण का विषय है। डॉ. वृषभ प्रसाद लखनऊ, डॉ. यशवंत मलैया कॉलोरोडो अमेरिका ने भी इसको इंगित किया है।

अन्य प्रतिमाओं का वैशिष्ट्य - मानस्तंभ में प्रायः चारों और तीर्थंकर बिम्ब होते हैं परन्तु यहाँ प्राप्त चारों मानस्तंभों में तीन और तीर्थंकर एवं एक ओर उपाध्याय बिम्ब अंकित हैं।

एक खण्डितर उपाध्याय बिम्ब में पादपीठ में चिन्ह के रूप में मयूर पिच्छी का अंकन है जो अन्य कहीं दृष्टव्य नहीं है।

अन्य खण्डित उपाध्याय बिम्ब में लम्ब शास्त्र को अंगुलियों की विशेष मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है।

राजकुमार अकलंक एवं निकलंक एक ही पाषाण फलक में उत्कीर्ण है, अग्रज के हाथ में लम्ब शास्त्र एवं कलम है। नवागढ़ में संगृहीत 9 उपाध्याय बिम्ब यहाँ गुरुकुल परम्परा के साक्ष्य हैं।

यहाँ प्राप्त धातु एवं काष्ठ उपकरण, विविधता लिये हैं मैं चाहती हूँ देश के विख्यात प्रतिमा विज्ञानी, पुरातत्त्वविद्, एवं इतिहासविद प्रागैतिहासिक नवागढ़ क्षेत्र में आकर पुरारहस्यों का अन्वेषण करके भारतीय संस्कृति के विशिष्ट आयामों को उद्घाटित करें। जो हमारी नवोदित पीढ़ी को विरासत के रूप में प्राप्त हो।

प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

कंकड़ डूबता-लकड़ी तैरती क्यों

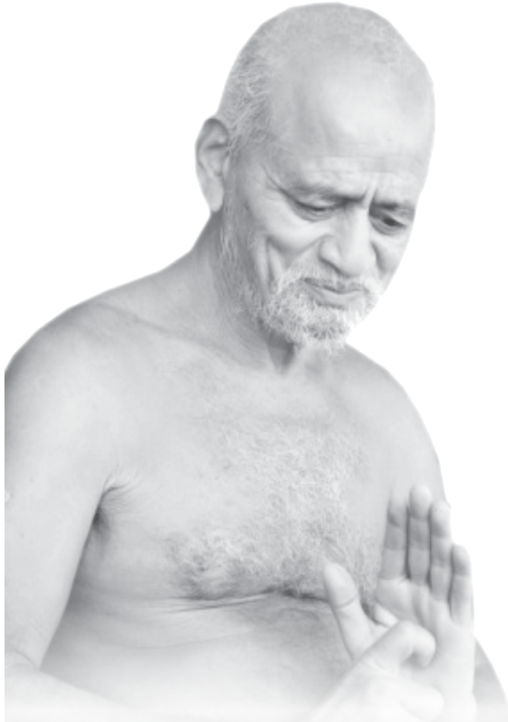

आप लोग घुमने जाते है, उसी बीच उनमें से किसी ने तालाब में एक छोटा सा कंकड़ फेंक दिया। शांत तालाब स्पंदित हो गया, वह छोटा सा कंकड़ भी डूब गया। अबकी बार एक बहुत बड़ी लकड़ी उसी तालाब में फेंक दी, उससे भी लहरे आदि उठ गयी किन्तु वह लकड़ी डूबी नहीं। अब सोचना हैं, पुछना है और बताना है यह कैसे हुआ। बताना पहले नहीं पहले सोचना है, यदि नहीं समझ में आये तो पुछना है क्या कारण है कि एक छोटा सा कंकड़ डूब गया एवं बड़ी भारी लकड़ी भी तैर रही है।

उत्तर सीधा सादा है चुंकि घनत्व की अपेक्षा कंकड़ में घनत्व ज्यादा है, विस्तार नहीं और लकड़ी में विस्तार अधिक है, घनत्व कम हैं इसलिये ऐसा हुआ। कषाय को बंध का कारण कहते है। घनत्व है यह कषाय। कषाय ज्यादा होगी डूब जायेगा, कषाय कम होगी, तो लकड़ी की भांति तैरेगा। अब आप पर निर्भर है कि आपको डूबना है या तैरना है। हमारे आचार्यों ने कषाय के माध्यम से स्थिति-अनुभाग बंध का प्ररूपण किया है। योग (मनवचन काय की प्रवृत्ति) की ओर भी हमारी दृष्टि हो। कषाय को सघन न बनाकर हल्का-हल्का बनाने से इस संसार सागर में विस्तार हो सकता है।

आप लगातार पुरुषार्थ करें तो हम भी गारन्टी लेंगे अन्यथा हम भी कुछ न हीं कर सकते हैं। ये पक्का है। परिणाम पर आधारित है। लघुत्व-धनत्व, स्थुलता-सूक्ष्मता आदि का ध्यान रखकर हम भी उन तीर्थंकर महापुरुषों की तरह अपने संसार चक्र को कम कर सकते हैं। रास्ता तो बिल्कुल सीधा है। मोक्षमार्ग में कही घुमाव नहीं हां कुछ लोग उसमें भटका देते हैं हम आगम के अनुरूप आगे बढ़ते जाना है। अपने योग एवं कषायों की मंदता से अपने कर्मो को घटाते जाना है। सभी की ऐसी भावना हो हम भगवान से प्रार्थना करते हैं।

बाहरी प्रकाश के साथ अंतःकरण भी प्रकाशित करें

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

(दीप और रोशनी के पर्व दिवाली को जैन धर्म में भी धूमधाम और श्रद्धा से मनाया जाता है। जैन परंपरा में दीपावली के महत्व को बता रहे जैन दर्शन के अध्येता, चिंतक डॉ. सुनील जैन संचय)

भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर हैं। महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन स्वाति नक्षत्र में कैवल्य ज्ञान प्राप्त करके निर्वाण प्राप्त किया था। जैन परंपरा में दीपावली महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाई जाती है। महावीर स्वामी को इसी दिन कार्तिक अमावस्या को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इसी दिन संध्याकाल में उनके प्रथम शिष्य गौतम गणधर को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। जैन धर्म में मोक्ष लक्ष्मी का अर्थ होता है निर्वाण और सरस्वती का अर्थ होता है केवलज्ञान इसलिये प्रातः काल जैन मंदिरों में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण उत्सव मानते समय भगवान की पूजा में लड्डू चढ़ायें जाते हैं।

इसी दिवस शुभ बेला में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के प्रथम प्रमुख गणधर गौतम स्वामी को केवल लक्ष्मी की प्राप्ति हुई जिसके उल्लास में ज्ञान के प्रतीक निर्मल प्रकाश से समस्त लोक को प्रकाशित करती हुई दीप मालिकायें प्रज्वलित कर भव्य दिवस उत्सव मनाया गया। दीप और रोशनी के पर्व दिवाली को जैन धर्म में भी धूमधाम से मनाया जाता है।

भगवान के मोक्ष में जाने के बाद वहां मौजूद जैन धर्मावलंबियों ने दीपक जलाकर रोशनी की और खुशियां मनाईं। जैन धर्म में धन यश तथा वैभव लक्ष्मी के बजाय वैराग्य लक्ष्मी प्राप्ति पर बल दिया गया है। जैन धर्म के लिये यह पर्व विशेष रूप से त्याग और तपस्या के पर्व के तौर पर मनाया जाता है। इसलिये इस दिन जैन धर्मावलम्बी भगवान महावीर की विशेष पूजा करके उसके त्याग तपस्या को याद करते हैं। दिवाली यानी वीर निर्वाणोत्सव वाले दिन सभी जैन मंदिरों में विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है।

मोक्ष जाने से पूर्व भगवान महावीर द्वारा अपनी समवसरण सभा में कहे गये सिद्धांत इस युग के लिये सर्वथा प्रासंगिक हैं। महावीर स्वामी ने कहा था पेड़ पौधे, जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी सभी में जीवन है अतः इनकी व्यर्थ ने कहा था पेड़ पौधे, जल अग्नि, वायु पृथ्वी सभी में जीवन है अतः इनकी व्यर्थ में हिंसा नहीं करनी चाहिये। यदि प्रत्येक व्यक्ति उनके इस सिद्धांत को आत्मसात कर ले तो पर्यावरण बचाने के लिये किसी भी मुहिम की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। महावीर स्वामी का कहना था कि प्रत्येक प्राणीमात्र की आतमा शक्तिरूप में भगवान परमात्मा है। अतः सबको अपने समान समझो। जो व्यवहार तुम्हें दूसरों के द्वारा प्रतिकूल लगता है वैसा व्यवहार तुम दूसरों के प्रति मत करोर। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांचों पापों का त्याग करों। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए प्राणियों के लिये मात्र धर्म ही सहारा है। आवश्यकता से अधिक परिग्रह संचय मत करो। जैसे शरीर के लिये भोजन आवश्यक है। वैसे ही आत्मा के लिये प्रभुभक्ति आवश्यक है। आज महावीर की अहिंसा कोजीवन की मूलधारा से

जोड़ने की आवश्यकता है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि यदि संसार को तबाही से बचाना है। और कल्याण के मार्ग पर चलाना है तो भगवान महावीर के अहिंसा के महान सन्देश और उनके बतायें हुए रास्ते को ग्रहण किये बिना और कोई रास्ता नहीं है। महात्मा गांधी ने भी अहिंसा के बल पर देश को आजादी दिलाई थी।

आज हाईटेक युग में व्यक्ति लोभ, हिंसा, परिग्रह तनाव विषमता, भ्रष्टाचार, दहेज, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या आदि शारीरिक पीड़ाओं और सामाजिक समस्याओं से ग्रस्त और त्रस्त है। इन तमाम समस्याओं के समाधान में भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन की महती भूमिका है। समाज में विभिन्नता एवं साम्प्रदायिकता का विवाद भी अनेकांत से मिटाया जा सकता है। उनकी शिक्षायें अत्यन्त प्रेरणादायक ओर सर्व कल्याणकारी हैं सर्वोदयी हैं।

एक दीपक हम जलाएं, एक दीपक तुम जलाओ।
कुछ अंधेरा हम भगांए, कुछ अंधेरा तुम भगाओ।

दीप मालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक हैं। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अन्धकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालायें जलानी चाहिये। दीपावली के पूर्व कार्तिक त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर ने बाह्य समवसरण लक्ष्मी का त्याग कर मन, वचन और काय का निरोध किया। वीर प्रभु के योगों के निरोध से त्रयोदशी धन्य हो उठी इसीलिए यह तिथि धन्यतेरस के नाम से विख्यात हुई।

आज भी इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमें भगवान महावीर के उपदेशों पर चलते हुए भष्टाचार मिटाने की कोशिश करनी चाहिये तथा सत्य व अहिंसा का मार्ग चुनकर दीपावली पर पटाखों का त्याग करके जीव-जंतुओं, प्राणियों तथा पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिये। तभी सही मायनों में भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाने की सार्थकता होगी।

हम सभी रूढ़ियों कुरीतियों और भ्रम से उस पार जाकर सत्य की पहचान करें और सत्य के प्रकाश से अपने को प्रकाशित करें। तभी प्रभु का निर्वाण महोत्सव गौतम स्वामी का केवलज्ञान कल्याणक सार्थक और हम सभी के द्वारा की जाने वाली पूजन भक्ति, अर्चना भी सफल होगी। इन पर्वों महोत्सवों पर मीठा खाकर मात्र मुँह को ही मीठा न करें अपितु बाहरी प्रकाश से अंतः करण भी प्रकाशित करें और मिठाई के साथ अपने आचरण, व्यवहार, वात्सल्य, सहकार, सौहार्द को परस्पर में बाँटकर स्व पर जीवन को भी मधुर बनायें। प्रेम, करूणा के दीपक जलाकर सभी में अपनत्व का संचार करें।

दीपावली अहिंसा का पर्व है, इसे हिंसा का रूप न दें। पटाखें फोड़कर अहिंसा धर्म, धन का दुरुपयोग न करें। साथ ही प्राणी मात्र को अभयदान देकर अपने वात्सल्य संवेदनशीलता के परिचय द्वारा सभी जीवों से अपनत्व एवं मैत्री स्थापित करें। आओ संकल्प लें इस दीपावली एक अंतः करण का दीप भी जलाने का।

है घोर अंधेरा पर दीपक जलाना कब मना है।
घनघोर अंधेरे में दीपक सा जलना होगा।।

कहानी

हथकरघा

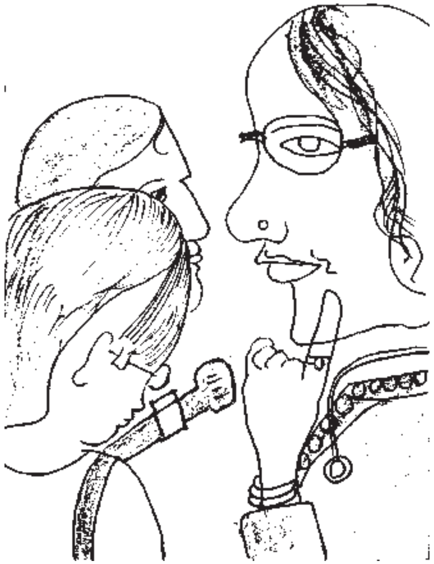

18 अगस्त का दिन था। आसमान पर घनघोर काली घटाएँ छाई हुई थी। चारों तरफ वारिश और पानी अपना वैभव बेखेर रहा था। कई जगह पानी आपदा का रूप धारण कर रही थी। वे लोग परेशान थे जिनके घरों में पानी घुस रहा था। बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज (बी.एम.सी) में पानी का बहुत असर था। डाक्टरों की उपस्थिती बहुत कम थी किंतु डॉक्टर कामिनी अपने काम पर जाने के लिये खूब उत्साहित थी। वह पानी के बरसते हुए भी जैसे तैसे अपने काम पर पहुँच ही गई थी। कामिनी को देखकर सभी लोग हैरत में थे। और बी.एम.सी के डीन को देखकर सभी लोग हैरत में थे। और बी.एम.सी. के डीन डॉ. पटेल, डॉ कामिनी का सबसे परिचय करा रहे थे।

वे कह रहे थे कि डॉ. कामिनी एक गरीब परिवार से संबंध रखती हैं। तथा बहुत संघर्ष के बाद उन्होंने यह मुकाम पाया है। इस पर सभी उपस्थित पत्रकारों में कामिनी के जीवन चारित्र को जानने की खूब जिज्ञासा हुई। जब पत्रकारों ने डॉ. कामिनी के जीवन चरित्र को जानने के लिये अपने कुछ सवाल दागे, तो कामिनी ने कहा मैं अभी के लिये थोड़ी सी क्षमा चाहूंगी। एक घंटे बाद मैं जरूर चर्चा कर सकती हूँ। किन्तु आज मेरा पहला दिन है, इसलिये मैं कुछ एक मानव सेवा का कार्य कर लूँ ताकि मेरा यह प्रारंभ का दिन मेरी दैनिक में उल्लेखनीय रूप से अंकित हो सके। उपस्थित पत्रकारों ने प्रतिक्षा कक्ष में बैठकर उस समय का इंतजार किया। जब तक डॉ. कामिनी अपने ओ.पी.डी से नहीं लौटी तब तक बेसब्री से पत्रकार प्रतीक्षा कक्ष में डटे रहे।

डॉ. कामिनी के आते ही पत्रकारों में चेतना आ गई। उन्होंने अपना-अपना मोबाईल कैमरा संभाला और फोकस कामिनी पर बनाया। कामिनी से पहला प्रश्न पत्रकार दीनदयाल ने किया और उन्होंने पहला प्रश्न पूछा कि आप बी.एम.सी में आकर कैसा महसूस कर रही है। तब कामिनी ने अपनी आंखों से आंसू पोछते हुए

कहा कि मुझे बहुत संघर्ष के बाद यह मुकाम मिला है। इस संघर्ष की कहानी बहुत लंबी है। अगर आप लोगों के पास समय हो तो मैं पूरी कहानी सुना सकती हूँ। सभी पत्रकारों ने कहानी सुनाने की इच्छा व्यक्त की और कहा आप समय की चिंता न करें कहानी पूरी सुनायें ताकि हम भी समझ सकें कि एक गरीब की बेटी कैसे संघर्ष के बाद सफलता को प्राप्त कर चुकी है। कामिनी ने कुर्सी खींचकर अपना आपस ग्रहण किया साथ ही पत्रकारों को भी बैठने का संकेत किया और अपनी कहानी बयां करना शुरु किया।

कामिनी ने कहा मैं जब मुश्किल से 4 साल की थी तभी मेरे पिता किशनलाल गांव के अच्छे युवा माने जाते थे। ऊंचा कद, शरीर का रंग गोरा, दमकदार चेहरा, धनी किसान जैसे मूंछे और बहादुरी के लिये विख्यात थे। वे किसी से डरते नही थे और न ही किसी डरवाते थे। उन्हें तो न्यास पसंद था। किसी के साथ भी अन्याय होता था तो वे बीच में कूद पड़ते थे। और किसी भी गरीब के पक्ष में खड़े हो जाते। इसलिये उनको गांव से हटाने की एक तरफा साजिश रची गई। और गाँव के तत्कालीन सरपंच ने उनकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को अपने रास्ते की बड़ी बाधा माना। सरपंच ने गांव के कुछ आसाजिक तत्वों को मेरे पिता किशनलाल के विरोध में खड़ा कर दिया और एक जमीन जायदाद का मामला भी उठ खड़ा हुआ। वह झगड़ा एक दिन इतना बढ़ गया कि मेरे पिताजी को चारों तरफ से घेर लिया गया। शायद वह दिन उनका आखिरी दिन होता यदि वे अपना पैतरा नहीं दिखाते। जब उनकी हथियारों से लड़ाई शुरु हो गई तब मेरे निहत्थे पिताजी ने अपना कौशल दिखाया और उन्होंने दुश्मनों के हथियार छीन कर उन पर घावा बोल दिया और उसी में एक छुटई कोरी नाम का व्यक्ति मारा गया। उसके ढेर होते ही लोग बचाओ! बचाओ! चिल्लाते हुए भागे।

उसी रात सरपंच ने केसली जाकर पुलिस में एफ.आई. आर दर्ज कराई तथा दूसरे दिन सुबह छुटई को पोस्टमार्टम हुआ तथा मेरे पिताजी को पुलिस ने गिरफ्तार क र लिया और उन पर धारा 302 लगाकर हत्या का आरोप लगा दिया। मेरे पिताजी ने भी एफ.आई.आर करना चाहा किंतु थाना प्रभारी ने उनकी कोई बात नहीं सुनी। वे कहते रहे कि मैंने अपनी आत्मरक्षा की है उस आत्मरक्षा के चलते छुटई का खून हो गया। परंतु सरपंच की रसूखदारी के चलते मेरे पिताजी को काउंटर एफ.आई.आर दर्ज नहीं हुई और उन्हें 30 अक्टूबर 2002 में सत्र न्यायालय में आजीवन कारावास की सजा सुना दी।

मेरे पिताजी तो जेल चले गये पर हम छोटे-छोटे बच्चे अभाव की जिंदगी जीने को मजबूर हो गये। क्योंकि यह एक बहुत बड़ा सच है, जिसकी हत्या हो जाती है वह तो स्वर्ग चला जाता है, परंतु जेल जाने वाले का परिवार अस्थिर पड़ जाता है। उसके घर में खाने के लाले पड़ जाते हैं। और चारों तरफ से धमकियां मिलती रहती हैं और लोग बदले की भावना में घूमते रहते हैं। इससे परिवार की सुरक्षा का सवाल भी खड़ा हो जाता है। वह

मैंने कष्ट भोगा है जिसकी आप लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। अपराध की दुनिया से दूर रहने वाला भी कुछ लोगों की साजिश से अपराधी बन जाता है। किन्तु समाज किसी के भी परिवार को धक्का तो लगा सकता है पर संभाल नहीं सकता। समाज को अपनी स्वयं को खबर नहीं होती है और न ही समाज के बच्चे किस ओर बढ़ जायेंगे इस बात की खबर होती है। व्यसनों को जन्म देना, पालना और पोसना समाज के कुछ उन लोगों का काम होता है जो बहुत गैर जिम्मेदार होते हैं। परंतु कुछ लोग अवश्य समाज में ऐसे होते हैं जो गिरतों को शाम लेते हैं। उनमें से मेरे एक पड़ोसी थे जिनका नाम गोकुल प्रसाद था। वो छिप कर मेरे परिवार का सहयोग करते थे और गांव के लोगों की भली बुरी बातें सुना करते थे। मैं उन्हें कभी नहीं भुलूंगी जिन्होंने पूरे गांव की फब्तियों को सुना फिर भी सहयोग करना नहीं छोड़ा। पर एक दिन ऐसा आया वो गांव के लोगो के सामने तो हार नहीं माने पर अपने बेटे के सामने हार गये।

गोकुल चंद का बेटा अशोक कॉलेज में पढ़ता था और अशोक महीने दो महीने में गांव आया करता था लेकिन जब वह लौटा करता था तब गांव के लोगों ने उसको इतना भड़का दिया कि वह अपने पिता से कह बैठा कि एक परिवार का भला करने की अपेक्षा पूरे गांव से बुरा बनना क्या महंगा सौदा नहीं है। और यदि आप अब किशन के परिवार की मदद करने गये तो मैं गांव आना बंद कर दूंगा। अपने बेटे अशोक के सामने मदद न करने का वचन देकर गोकुल ने मेरे परिवार से मुख मोड़ लिया। मेरी मां मजदूरी करके परिवार का पालन पोषण कर रही थी और अपने बच्चां को पढ़ा रही थी। ऐसा करते-करते 2018 आ गया।

मेरे पिता किशनलाल जेल की यात्रा करते हुए लौटे तो उन्होंने मेरी पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और कहा बेटा पैसे की चिंता मत करो। तेरे पढ़ाने में पैसा कभी आड़े नहीं आयेगा। जब वे जेल में थे तो उन्होंने जेल में सबके साथ अच्छा व्यवहार किया था। उनके अच्छे व्यवहार के कारण जेल के अधिकारी उन्हें बहुत प्रोत्साहित करते थे। मेरे पिताजी ने जेल में काम करके पैसा कमाया। उन्होंने जैन संत आचार्य विद्यासागर जी के आशीर्वाद से लगे हथकरघा पर बैठ कर अच्छा कार्य किया। उनके हाथ से बनी साड़ियाँ, नैपकिन, मार्केट में खूब चले। इसका लाभ मेरे पिताजी को तो मिला ही साथ में हम लोगों को पिताजी का जेल जाने का गम भी सताना कम हो गया। क्योंकि वे जेल में रहकर भी हनाश सहयोग करते थे। उनके सहयोग से मैने मोबाईल ओर लेपटॉप भी खरीदा। उसके माध्यम से मैंने गूगल का खूब प्रयोग किया और पिताजी एक ही बात मुझसे कहते रहे, बेटा चिंता मत करो, उसका परिणाम सामने आया। जेल में संतों के उपदेश तो होते ही रहते है उनमें आचार्य विद्यासागर जी महाराज की बातों का प्रभाव मेरे पिताजी के दिलों दिमाग पर बहुत पड़ा जेल के अंदर मेरे पिताजी के मित्र नन्हें भाई उनको सदैव अपराध की दुनिया में ले जाने की कोशिश करता था। और पिताजी पर भी

उसकी संगत का प्रभाव पड़ता था। वो भी नन्हें भाई से सहमत हो जाते थे। किन्तु जब जैन संत ने यह कहा कि बेरोजगारी खाली दिमाग कर देती है, और खाली दिमाग हो जाने से व्यक्ति व्यसनों को ओर चला जाता है और व्यसन अपराध की दुनिया को प्रोत्साहित करते रहते हैं पर जिनके हाथों में हुनर होता है वे कभी भूखे नहीं रहते लोग भी हुनर दिखायें , पैसा कमायें और हिंसा से अहिंसा की ओर आयें। इन्हीं जैन संत के उपदेशों का परिणाम यह हुआ के पिताजी ने कथकरधा को अपना कर्म माना। मेरे पिताजी के कर्म और ऊपर वाले के रहम ने पिताजी को हथकरघा का मास्टर बना दिया। जेल से घुटने के बाद पिताजी ने अपने घर का हथकरघा लगा दिया और मैं डॉक्टर के रूप में आज वहां खड़ी हूँ। मेरी जिंदगी का एक ही देवता बना है जिसका एहसास मैं कभी नहीं भूल सकती हूँ वह है हथकरघा।

जिस हथकरघा ने मेरे पिताजी को अपराध की दुनिया से बाहर निकाला और मुणे इस योग्य बना दिया कि मैं दुनिया के सामने सिर ऊँचा करके स्वाभिमान के साथ खड़ी हो सकती हूँ । इसी हथकरघा ने स्वदेशीकरण का विगुल बजाया और गांधी के चरखे के आगे अंग्रेजों की सारी ताकत बोनी पड़ गई। बापू ने उस समय अंग्रेजों से कहा था कि मेरा चरखा वह शस्त्र है जिससे करूणा और प्रेम की बुनावट होती है। यह करूणा और प्रेम की बुनावट व्यक्ति को अपराध की दुनिया से बाहर निकाल देती है। इसी को आगे चलकर हथकरघा का रूप दिया गया। इसी हथकरघा का अभियान आचार्य विद्यासागर जी ने चला रखा है। मैं आचार्य श्री का ताउम्र एहसानमंद रहूँगी और रोज पूजा करूँगी हथकरघा की।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।

2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।

3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि नि:शुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

हमारे गौरव

श्री गुलझारीलाल जगाती

नेताजी उपनाम से प्रसिद्ध श्री गुलझारीलाल जगाती का जन्म वैशाख सुदी पंचमी संवत् 1972 (1915 ई.) को टड़ा तहसील देवरी जिला सागर (म.प्र.) में हुआ आपके पिता का नाम श्री सुन्दरलाल जैन था। जो अत्यंत निर्धन थे। फलतः जगाती की शिक्षा अत्यल्प कक्षा 4 तक ही हो सकी 1941 से आप रचनात्मक कार्यो में संलग्न हो गये। पूज्य बापू के करो या मरो के अगस्त 42 के आन्दोलन में आपने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। जगह-जगह भाषणबाजी के कारण आप नेताजी कहे जाने लगे। गिरफ्तार हुए और 9 माह की कड़ी जेल यातना भुगती जेल से आने बाद भी आप अपनी ओजस्वी बाजी से स्वतंत्रता का प्रचार करते रहे व आजादी के दीवानों को उद्वेलित करते रहे।

देश की आजादी के बाद स्वाधीनता सेनानियों का सम्मान देखते ही लगा, सही हुआ। नेताजी को माननीय सेठ गोविन्द दास जी सांसद (जबलपुर)ने ताम्र पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

कविता

जिन्दगी में कुछ पल हंस पाते हैं लोग

जिन्दगी में कुछ ही पल हंस पाते हैं लोग
जिन्दगी को जिन्दगी की तरह
कब जी पाते हैं लोग
गैरों को जानने की तमन्ना में
खुद आपको कब पहचान पाते हैं लोग
दूसरा भी जी रहा था दुनिया में मुझसा
भरते दम ये खलूस जान पाते हैं लोग
आस्तीन में पालकर काले विषधरों को
डसने से पहले कब समझ पाते हैं लोग ॥

जैन सेनापति

❊ हुकुमचंद्र जी सांवला, विश्व हिन्दु परिषद उपाध्यक्ष ❊

क्रमशः पिछले अंक से

• **नरेश गण्डरादित्य (1110-1140ई.)-** भोज के उपरान्त उनका अनुज चन्द्रादित्य अपरनाम गण्डरादित्य राजा हुआ। वह इस वंश का प्रतापी नरेश था। कुछ समय चालुक्यों के अधीन रहा, अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की। भारी दानी जैन धर्म पोषक होते हुये भी सर्वधर्म समदर्शी था। ब्राह्मणों को भोजन कराना, अर्जुरिला (अजरेना) नामक स्थान पर सुन्दर जिनालय बनवाया। सुन्दर सरोवर बनवाकर उसके तट पर देवालय बनवायी। मंदिर में जिनेन्द्र, शिव, बुद्ध तीनों की प्रतिमायें स्थापित करायी गयी।

• **विजयादित्य शिलाहार (1140-1175ई.)-** गण्डरादित्य का पुत्र, उत्तराधिकारी बड़ा पराक्रमी वीर था। पिता के समय में ही गोवा के जयकेशिन को हराया था। चालुक्यों की पराधीनता भी उतार फेंकी, कलचुरियों को भी पराजित किया। विजयादित्य को शत्रुओं का यमराज कहा जाता है। कलिकाल विक्रमादित्य एवं रूपनारायण उसके प्रसिद्ध विरूद थे। अपने धार्मिक उत्साह के कारण धर्मैक बुद्धि कहा जाता था। वह परम जैन था श्रावक के व्रतों का पालन करता था। अपने गुरु माणिक्यनन्दि-पण्डित देव की बड़ी विनय करता था। कोल्हापुर तथा अन्य स्थानों पर जिन मंदिरों का निर्माण किया, दान दिये। मंत्री, सेनापति, सामन्त जैन धर्म का पालन करते थे।

• **नरेश भोज द्वितीय शिलाहार (1175-1215 ई.)-** विजयादित्य का पुत्र, उत्तराधिकारी भोज द्वितीय इस वंश का अन्तम नरेश था। बड़ा प्रतापी उदार और धर्मात्मा था। सम्राट पद विरूद जल्दी ही प्राप्त करा लिया था। पूर्वजों की भांति जैन धर्म का पोषक और भक्त था। विशालकीर्ति-पण्डितदेव उसके गुरु थे। राजा ने अनेक जैन मंदिरों का निर्माण कराया था। गुरुओं को भूमि, ग्राम व एक वाटिका तथा एक मकान दान किया था।

• **राजा गोंकिरस-**तेरिदाल का शिलाहार राजा गोंकिरस परम-जिनभक्त था। इनकी माता बाचलदेवी, पिता मल्लमहीप गुरु कोल्हापुर की रूपनारायण-बसदि को आचार्य माघनन्दि सिद्धान्ति और इष्टदेव भगवान नेमिनाथ थे। इनका ध्वजचिन्ह मयूर पिच्छ था एवं इष्टदेवी व कुलदेवी पद्मावती थी। राजधानी में नेमिनाथ जिनालय का निर्माण कराया। 1123 ई. को बड़ी प्रतिष्ठा की थी। राजा गुणवान धर्मात्मा जिन व्रतों के पालन में भी दृढ थे।

• **राजा राजेन्द्र चोल कोंगाल्व-** इस राजा का कार्यकाल 1026-1050 ई.। यह राजा परम जैन था उनके गुरु नन्दिसंघ-द्रविणगण-अरूंगलान्वय के गुणसेन पण्डित देव थे। राजा ने मुल्लुर में जिनालय का निर्माण कराया था। इनकी रानी पोचब्बरसि भी बड़ी धर्मात्मा थी तथा पुत्र राजेन्द्र कोगाल्व भी परम जैन था।

• **राजा राजेन्द्र कोंगाल्व-** राजेन्द्र चोल कोंगाल्व और रानी पोचब्बरसि का सुपुत्र यह राजा बड़ा प्रतापी और धर्मात्मा था। उसने राजधानी मुल्लुर में अपने पिता द्वारा निर्मित्त जिनालय के लिये स्वगुरु गुणसेन पण्डितदेव को 1058ई . में कई ग्रामों में भूमियाँ प्रदान की थी। माता के

अनेक धार्मिक कार्यक्रमों को सम्पन्न करायें। पुष्पसेन व्रतीन्द्र के शिष्य थे, उन्होंने मोक्षलक्ष्मी का निवास प्राप्त किया अर्थात समाधिमरण किया था। अपनी माता की स्मृति में राजा ने जिनालय बनवाया था और उसके लिये पर्याप्त दान दियें। 300 वर्ष पश्चात् धर्मात्मा रानी सुगणी देवी से जीर्णोद्धार कराया।

• **राजा राजेन्द्र पृथ्वी कोंगाल्व-अटरादित्य (1066-1100 ई.)-** राजेन्द्र कोंगाल्व का पुत्र एवं उत्तराधिकारी भी बड़ा प्रतापी और धर्मात्मा नरेश था। उसकी धर्मात्मा रानी ने 1070 ई. के लगभग स्वगुरु की स्मृति मे स्मारक बनवाया था। राजा ने 1079 ई. में कोंगाल्व जैनगृह-अटरादित्य चैत्यालय नाम का भव्य जैन मंदिर बनवाया था। उसकी पूजादि के लिये भूमिदान दिया था।

• **नरेश राजेन्द्र चोल-नन्दि चंगाल्व-** इस वंश का सर्व प्रसिद्ध जैन नरेश था। इसी वीर राजेन्द्र नन्नि चंगाल्वदेव ने 1060 ई. के लगभग चिक्कहनसोगे में देशी गण पुस्तक-गच्छ की एक बसदि निर्माण करायी थी। उसी स्थल में प्राचीन काल में दशरथी राम ने जो जिनालय मूलतः बनवाया था और उसके लिये भूमि समर्पित की थी। राजा ने अनेक जिनालय बनवाये थे। परम तेजस्वी जयकीर्ति मुनि थे। जो अनेक उपवास और चान्द्रायण व्रत करने के लिये विख्यात थे। इस तीर्थ पर भगवान राम द्वारा प्रतिष्ठापित 64 बसदियाँ चली आ रही है। इन्हीं में एक प्रसिद्ध जिनालय बन्द तीर्थ-बसदि था। मुनियों के आहारादि के प्रबन्धन के लिये भूमि दान मंदिरों की व्यवस्था के लिये ग्राम दान दिये गये।

• **राजा भुजबल-अलुपेन्द्र (1114-1155ई.)-** अलुपवंश का उदय 10वीं शती में हुआ मुलुवनाड प्रदेश जैन धर्म का गढ़ था। मूडबिद्री गेरूसप्पे, भट्टकल, कार्कल, बिलिंग, सोदे, केरेवासे, हाहुहल्लि, होन्नावार आदि जैन धर्म के केन्द्र थेर। भुजबल-अलुपेन्द्र इस वंश का प्रसिद्ध राजा था। राजकुमार कुमारराय 1161 ई. में जैन केन्द्र केरेवासे में जिनालय बनाया। राजा ने मलधारिदेव, माधवचन्द्र, प्रभाचन्द्र आदि तत्कालीन जैन गुरुओं का सम्मान किया।

• **ककातीय नरेश-** 11वीं शती में ककातीय वंश का उदय हुआ, वारंगल राजधानी थी, शीघ्र ही स्वतंत्र अच्छा राज्य हो गया था। वारंगल जैन केन्द्र था, रामतीर्थ का जैन संस्थान दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। जैन मंदिर निर्माण भूमिदान राजा सहर्ष करते थे। अन्तिम राजा मुहम्मद मुगलुक ने इस राज्य को समाप्त कर दिया।

• **राजा सुएन तृतीय-** इस वंश का 13वां राजा था। 1142 ई. में अंजनेरी के चन्द्रप्रभ जिनालय के लिये नगर की तीन दुकानें दान दी।

• **महाराजाधिराज रामगुप्त-** द्वारा प्रतिष्ठापित कई जिनमूर्तियाँ विदिशा के निकट दुर्जनपुर से प्राप्त हुई, दो चन्द्रप्रभु (8वें तीर्थंकर) की है और एक पुष्पदन्त (9वें तीर्थंकर) की है। गुप्त सम्राट ने पाणिपात्र (दिगम्बर) मुनि चन्द्र क्षमाचार्य श्रमण के शिष्य, आचार्य सर्वसेन श्रमण के शिष्य और गोलक्यान्त्य के सुपुत्र चेलु श्रमण के उपदेश से प्रतिष्ठापित किया था।

• **राजर्षि देवगुप्त-** गुप्तनरेश महासेन गुप्त के पुत्र कुमारमात्य देव गुप्त ने मालवा पर अधिकार करके छठी शताब्दी के मध्य के लगभग अपना स्वतंत्र शासन स्थापित किया। वह जैन धर्म

अनुयायी था और श्रेष्ठ युद्धवीर एवं राजनीतिज्ञ था। थानेश्वर के राज्यवर्धन से पराजित होने पर संसार से विरक्त हो जैन मुनि हरिगुप्त से दीक्षा लेकर जैन मुनि बना गया।

• **गुर्जर-प्रतिहार नरेश नागभट प्रथम (740-756 ई.)-** प्राग्मुस्लिम कालीन राजपूत वंशों में प्रमुख गुर्जर प्रतिहार स्वयं को राम के प्रतिहार लक्ष्मण का वंशज कहते थे। मारवाड़ के भिन्नमाल (श्रीमालनगर) को राजधानी बनाया था। उस काल में यह स्थान जैन धर्म का प्रसिद्ध गढ़ था। श्रीमाल (श्रीमाली) जाति का विकास इसी नगर से हुआ। इस वंश के संस्थापक हरिशचन्द्र थे। किन्तु राज्य का अभ्युदय नागभट प्रथम के समय हुआ। जैन परम्परा को मानने थे भिन्नमाल में विशाल जैन मंदिर बनवाया था।

• **वत्सराज (775-800 ई.)-** कुक्कुक के अनुज एवं उत्तराधिकारी देवराज का पुत्र वत्सराज कन्नोज के गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। राजा प्रतापी, पराक्रमी विजेता था। प्रथम राजधानी भिन्नमाल को बनाया। समस्त पूर्वी राजस्थान, मालवा, मध्य भारत, गुजरात और उत्तरप्रदेश के भाग राज्य के अन्तर्गत थे। जैनाचार्य उद्योननसूरि, जिनसेनसूरि ने अपने ग्रंथों में राजा के सर्वमान्य होने के प्रमाण हैं। हरिवंश - पुराण में भी उल्लेख हैं। जालोर में ऋषभदेव जिनालय की रचना की थी। राजा जैन धर्म के बड़े समर्थक और पौषक थे। जैन यति बप्पभट्टि का बड़ा सम्मान करते थे। उसी समय मथुरा में श्वेताम्बर और दिगम्बर मन्दिर सर्वप्रथम पृथक-पृथक बने थे। दोनों ही सम्प्रदायों से समान व्यवहार करता था राजा। **कन्नौज में उन्होंने 100 फूट ऊंचा भव्य जिन मंदिर बनवाया था। जिसमें भगवान महावीर की स्वर्णमयी प्रतिमा स्थापित की थी और ग्वालियर में 23 हाथ ऊंची तीर्थंकर प्रतिमा स्थापित की थी।**

• **राजा नागभट्ट द्वितीय नागावलोक आम (800-833 ई.)-** वत्सराज का पुत्र, उत्तराधिकारी उसके समान ही प्रतापी विजेता और जैन धर्म का पोषक था। कन्नौज को गुर्जर प्रतिहारों की स्थायी राजधानी बनाई। आचार्य बप्पभट्टि सूरि जी का परम भक्त था। प्रभावक-चरित्र के अनुसार इस नरेश की मृत्यु 833 ई. में गंगा में समाधि लेकर हुई। मथुरा के प्राचीन जैन स्तूप का जीर्णोद्धार भी इसी समय में हुआ। यह धर्मात्मा राजा जिनेन्द्र देव की भांति विष्णु, शिव, सूर्य और भगवती का भी भक्त था।

• **नरेश मिहिर भोज (836-885 ई.)-** नागभट्ट द्वितीय का पौत्र और रामभद्र या रामदेव का पुत्र उत्तराधिकारी कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं सर्वमहान नरेश था। उसके समय में इस साम्राज्य की शक्ति एवं समृद्धि परमोत्कर्ष को प्राप्त हो गयी थी। वह अपनी कुलदेवी भगवती का वह उपासक था, किन्तु बड़ा उदार और सहिष्णु था तथा जैन धर्म का भी प्रश्रयदाता था। नरेश के पूर्वज कक्कुक द्वारा निर्मापित जिनालय में कुछ संवर्धन हुआ था। शिलालेख के अनुसार सौराष्ट्र के जैन तीर्थ गिरनार के नेमिनाथ मंदिर के दक्षिणी प्रवेश द्वार के निकट एक छोटे मंदिर की दीवार पर अंकित भग्नशिलालेख में भगवान नेमिनाथ को नमस्कार करके लिखा है।

• **सोमेश्वर चौहान-** अर्णोराज का पुत्र, विग्रहराज चतुर्थ एवं पृथ्वीराज का अनुज और उत्तराधिकारी गुजरात के सोलंकी नरेश जयसिंह सिद्धराज का दौहित्र एवं दत्तक पुत्र, कुमार पाल

सोलंकी का प्रतिद्विन्दी, दिल्ली के अनंगपाल तोमर का जामाता और प्रसिद्ध रायपिथौरा (पृथ्वीराज तृतीय) का पिता, सोमेश्वर चौहान, अजमेर के चौहानों में जैनधर्म का सर्वाधिक पोषक एवं भक्त नरेश था और 12वीं शती के मध्य के लगभग विद्यमान था। वह बड़ा वीर और पराक्रमी था, अतः प्रतापलंकेश्वर कहलाता था। स्वर्ग प्राप्ति की आकांक्षा से इसने रेवाटट स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनालय के लिये रेवण नाम का ग्राम दान किया था। बिजौलिया (कोटा, राजस्थान)-पार्श्वनाथ प्रसिद्ध मन्दिर भी उसके द्वारा अथवा उसके आश्रय में निर्मित्त हुआ था।

• **नरेश अनंगपाल तृतीय–** दिल्ली का तोमर नरेश 1132 ई. में विद्यमान था। उसके समय में दिल्ली में कई जिनमंदिर बने। उसका राज्यमंत्री नट्टल साहु बड़ा धर्मात्मा श्रावक था। और उसके आश्रय में कवि श्रीधर ने अपना अपभ्रंश भाषा का पासणाह चरिक रचा गया था।

• **धारा के राजा मुंज परमार–** उपेन्द्र अपरनाम कृष्णराज या गजराज ने 9वीं शती के उत्तरार्ध में मालवा देश की धारा नगरी में परमार राज्य की स्थापना की थी। उसका उत्तराधिकारी सीमक द्वितीय उपनाम हर्ष प्रतापी नरेश और स्वतंत्र राज्य का स्वामी था। अपने पोषितपुत्र मुंज को राज्य देखकर 974 ई. के लगभग सीयक परमार ने जैनाचार्य से मुनि दीक्षा लेकर शेष जीवन एक जैन साधु के रूप में व्यतीत किया था। वाक्यपतिराज मुंज- उत्पलराज बड़ा वीर, पराक्रमी , कवि और विद्या प्रेमी था। प्रबन्ध चिन्तामणी आदि जैन ग्रंथों में मुंज के सम्बन्ध में अनेक कथायें मिलती है। राजामुंज जैनधर्म का पोषक अवश्य था। सन् 995 ई. के लगभग उनकी मृत्यु हुई।

• **राजा भोजदेव परमार (1010–1053 ई.)–** सिन्धुराज (996-1009 ई.) का पुत्र, उत्तराधिकारी भोजदेव प्राचीन वीर विक्रमादित्य की ही भांति भारतीय लोक-कथाओं का प्रसिद्ध नायक है। वह वीर, प्रतापी और पराक्रमी होने के साथ ही साथ परम विद्वान सुकवि, कलामर्मज्ञ विद्वानों का प्रश्रम दाता और जैन धर्म का पोषक था। उनके समय में धारा नगरी दिगम्बर जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी और राजा जैन मुनियों का बड़ा आदर करता था। अमितगति, माणिक्यनन्दि, नयनन्दि, महापण्डित प्रभाचन्द्र आदि अनेक ग्रंथों के रचयिता दिग्गज जैनाचार्यों ने परमार भोजदेव से आश्रय एवं सम्मान प्राप्त किया था। आचार्य शान्तिसेन ने तो उनकी राज्यसभा में अनेक अजैन विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। उनका सेनापति कुलचन्द्र भी जैन था। इस राजा ने जैन मंदिरों का भी निर्माण कराया था। राजधानी धारा नगरी को भोजदेव ने अनेक सुन्दर भवनों से अलंकृत किया था। **वहाँ सरस्वती–मंदिर या शारदा सदन नामक एक महान् विद्यापीठ की स्थापना की थी और बेतवा नदी से पानी काटकर भोजसागर (भोपाल–ताल) का निर्माण कराया था।**

• **राजा विक्रमसिंह कच्छपसिंहघात–** अर्जुन भूपति के प्रपौत्र, भोज परमार से प्रशंसित राजा अभिमन्यु के पौत्र और विजय पाल के पुत्र महाराजाधिराज विक्रम सिंह के कच्छपघात ने 1088 ई. में चण्डोभ (दूबकुण्ड) में , जो उनकी राजधानी थी, अपने राज्य के धनी श्रेष्ठियों द्वारा बनायें गये जिनमंदिर के लिये गांव की भूमि, एक पुष्पोद्यान, अनाज पर लगने वाले राज्यकर का एक अंश, तेल इत्यादि का दान दिया था। राजा स्वयं परम जैन था।

• **राजा त्रिभुवनपाल यादव–** राजस्थान के भरतपुर जिलें में बयाना नगर जिसका मूल नाम श्रीपथ था। यहाँ के राजा परम प्रतापी एवं पराक्रमी थे, जिन्हें परम भट्टारक महाराजाधिराज-

परमेश्वर उपाधि धारण की और बयाना से 15 मील पश्चिम-दक्षिण में त्रिभुवनगिरिदुर्ग नामक सुदृढ़ किला पहाड़ के ऊपर निर्माण किया। यह राजा जैन धर्म का परम पौषक था। उसी के समय में जायसवाल वंशीय जैनों के एक बड़े दल ने राज्य में आश्रय लिया। दुर्ग के अन्दर रहने वाले उपरोतिया कहलाते जो दुर्ग के बाहर रह गये वे निरोतिया कहलायें। राजा ने एक युवा जैन के साथ राजकन्या का विवाह किया। ये जैसवाल बड़े पुरुषार्थी और प्रभावशाली थे।

• **राजा बाधसिंह बड़गुजर–** 10वीं से 12 वीं शताब्दी के मध्य किसी समय बडगुजर राजा हुआ करते थे। राजगढ़ नाम का नगर बसाकर राजधानी बनाया। राजधानी के बाहर बघोला-बांध का निर्माण कराया। यह राजा जैन धर्मानुयायी था।

• **सुहिल ध्वज/सुहेलदेव–** श्रावस्ती (उ.प्र. के बहराइच जिलेक के सहेट-महेट) में 9वीं-11वीं शताब्दी में एक जैन धर्मानुयायी वंश का राज्य था। जिसमें सुधन्वध्वज, मकर ध्वज, हंसध्वज, मोरध्वज, सुहिल ध्वज और हरिसिंहदेव नाम के राजा क्रमशः हुये हैं । इनमें अधिकांश राजा जैन धर्म की प्रवृत्ति के थे। मोर ध्वज का उत्तराधिकारी सुहिल ध्वज या सुहेलदेव बड़ा वीर और पराक्रमी होने के साथ जिनभक्त था। उसने **1033 ई. के लगभग महमूद गजनवी के पुत्र के सिपहसालार सैयद–मसऊद गाजी को बहराईच के भीषण युद्ध में बुरी तरह पराजित करके ससैन्य समाप्त कर दिया था।**

• **राजा हिमशीतल–** जैनाचार्य अकलंकदेव के समय (7वीं शती ई.) में कलिंग नरेश महाराजाधिराज हिमशीतल थे। वे बौद्धों के महायानी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। किन्तु महारानी परम जिनभक्त थी। महारानी के जैन मतानुसार कार्तिकी-अष्टान्हिका पर्व को विशाल रथोत्सव द्वारा समारोहपूर्वक मनाने का विचार किया, किन्तु राजा के बौद्ध गुरु इस कार्य में बाधक हुये। अन्ततः राजा ने निर्णय दिया कि यदि कोई जैन विद्वान बौद्ध विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर देंगे तो उत्सव व रथ निकालने की अनुमति दे दी जायेंगी। रानी जैन जन चिन्तित हुये। सौभाग्य से दिगम्बर जैनाचार्य भट्टाकलंक देव महाराष्ट्र से पधारे थे। रानी और जैनी श्रावकों ने निवेदन किया, चुनौती स्वीकार की। राजसभा में शास्त्रार्थ जोर-शोर से चला करते थे। यह छह माह तक चला। बौद्धाचार्य घट में स्थापित तारादेवी की सहायता से शास्त्रार्थ कर रहे थे। अन्त में अकलंकदेव तारा का विस्फोट करके बोद्धों को शास्त्रार्थ में पूर्णतया पराजित किया। राजा बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने तथा उनके अनेक प्रजाजनों ने जैन धर्म अंगीकार कर लिया। आचार्य अकलंकदेव ने विक्रमादित्य प्रथम (643-680 ई.) कोा जैन धर्म की रक्षार्थ क्यों और कैसे उन्होंने यह वाद विजय की थी। उसका वर्णन सुनाया था।

• **कलिंग नरेश उद्योत्त केसरी ललाटेन्दु–** 11वीं शताब्दी में कलिंग का प्रसिद्ध जैन नरेश उद्योतकेसरी था जो देशीगणाचार्य भट्टारक कुलचन्द्र के शिष्य खल्ल शुभचन्द्र का भक्त एवं गृहस्थ शिष्य था। उड़ीसा की उदयगिरि खण्डगिरि की गुफाओं में इस नरेश के राज्यकाल के 5वें वर्ष से 18 वें वर्ष तक के कई शिलालेख मिले हैं। राजा ने प्रसिद्ध कुमारी पर्वत पर नष्ट सरोवरों एवं जिन मंदिरों का पुननिर्माण कराके वहां 24 तीर्थंकरों की प्रतिमायें प्रतिष्ठित करायी थी। उन्होंने खण्डगिरि की नवमुनि गुफा में अपनी- अपनी यक्षियों (शासन-देवियों) सहित दस तीर्थंकरों की प्रतिमायें उत्कीर्ण करायी और बारमुजी गुफा में चौबीसों तीर्थंकरों की उनकी पृथकर यक्षियों सहित मूर्तियाँ अंकित करायी।

• **राजा वनराज चावड़ा–** जयशेखर चापोत्कट का पुत्र वनराज गुजरात के चावड़ा वंश एवं राज्य का संस्थापक था। उन्होंने स्वगुरु जैनाचार्य शीलगुणसूरि के उपदेश, आशीर्वाद और सहायता से मैत्रकों का उच्छेद करके 745 ई. में अपने राज्य की स्थापना की थी और अन्हिलपुर पाटन नाम का नवीन नगर बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया। गुरुदक्षिणा के रूप में जब वनराज ने शीलगुणसूरि को अपना राज्य समर्पित करना चाहा तो उन्होंने उसके बदलें में एक सुन्दर जिनमंदिर बनवानें के लिये राजा को कहा। पंचासार-पार्श्वनाथ नामक-प्रसिद्ध जिनालय बनवाया। राजधानी में भगवान् ऋषभदेव का मंदिर बनवाया था। राज्य के कर्मचारी, उच्च पदस्थ, सेनापति, व्यापारी जैन थे।

• **जयसिंह सिद्धराज (1094-1143 ई)–** भीम प्रथम का पौत्र और कर्ण सोलंकी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी गुजरात का चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज बड़ा शक्तिशाली प्रतापी, धार्मिक, विद्यारसिक, उदार नरेश था। वह महादेव का उपासक था, वो महावीर का भी भक्त था। उन्होंने रूद्रमाल शिवालय तो महावीर जिनालय भी बनवायें सोमनाथ (शैवतीर्थ) का रक्षक तो जैन तीर्थ शत्रुंजय में आदिनाथ जिनालय को बारहग्राम समर्पित किये थे। सिद्धपुर में रामबिहार नामक सुन्दर आदिनाथ जिनालय तथा गिरनार तीर्थ पर भगवान नेमिनाथ का मुख्य मंदिर बनवाने का श्रेय इसी राजा को जाता। राजधानी में ज्ञान और कला का अनुपम केन्द्र बनाने का निश्चय किया वहाँ विशाल विद्यापीठ की स्थापना की। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य कलिकाल सर्वज्ञ उपाधिधारी हेमचन्द्रसूरि को वहाँ का भार सौंपा।

• **सम्राट् कुमार पाल सोलंकी (1143-1173 ई.)–** जयसिंह सिद्धराज के कोई पुत्र नहीं था। पुत्री के पुत्र सोमेश्वर चाहड़ को दत्तक पुत्र एवं उत्तराधिकारी घोषित किया। किन्तु राजमंत्रियों का बहुमत, आचार्य हेमचन्द्र और राजपुरोहित देव श्री कुमारपाल के समर्थक थे, राज्यसिंहासन इन्हें ही प्राप्त हुआ। षड्यंत्रों का शिकार राजा को कई स्थानों पर भटकना पड़ा बहुत कष्ट उठायें, हत्या के प्रयत्न भी हुये। चित्तौड़ में दिगम्बर जैन मुनि, रामकीर्ति जी से भेंट हुई, उनके ज्ञान और उपदेश ग्रहण किये। स्वगुरु हेमचन्द्रसूरि की भविष्यवाणी और आश्वासन तथा अपने सहायकों एवं समर्थकों की सद्-इच्छा में विश्वास करते थे। अन्ततः लगभग 50 वर्ष की आयु में 1143 ई. में कुमार पाल सोलंकी गुजरात के सिंहासन पर बैठा। राज्य का विस्तार पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण तक खूब फैला, दूर-दूर तक ताम्रचूड़ विजय ध्वज फहराया। गुर्जर साम्राज्य में 18 देश सम्मिलित थे। इन सबका श्रेय जैन मंत्रियों एवं प्रचण्ड जैन सेनापतियों को था। लोग कहते थे कि राज्य प्राप्ति के समय कुमारपाल अकबर की भांति निरक्षर था किन्तु अपने अध्यवसाय से थोड़े समय में ही सुविज्ञ हो गया। राजा का कुल धर्म शैव और इष्टदेव सोमनाथ-शिव थे। पशुबलि में भी विश्वास था। किन्तु आचार्य हेमचन्द्रसूरि के संसर्ग से उसमें शनैः शनै सद्धर्म की भावना जाग्रत होने लगी। वह जैन धर्म का पक्का अनुयायी था। यहाँ तक कि 1159 ई. में उन्होंने प्रकट रूप में जिनधर्म अंगीकार कर लिया। **वे चरित्रवान एवं एक पत्नी व्रत के पालक थे तथा श्रावक के व्रत धारण किये थे। युद्धों से विराम लिया, राज्य में पशु-हिंसा, पशुबलि, शिकार, मद्यपान, जुआ आदि का राजाज्ञा से निषेध किया, साथ ही मृत्यु दंण्ड बंद कर दिया।** राजा ने 1440 नवीन जैन मंदिरों का निर्माण और 1600 पुरानें मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया था।

क्रमशः अगले अंक में

विश्व डायबिटीज (मधुमेह) दिवस डायबिटीज रोग कारण व निवारण

✲ जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) मो. 9977051810 ✲

डायबिटीज नामक बीमारी का शब्द ग्रीफ भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है साइफन अर्थात् जलनिकास। सन् 1889 में जर्मनी आस्कर मिंकोबस्की ने खोज की थी कि कुत्ता के शरीर से पैंक्रियाज हटा दिया जाये तो उसे डायबिटिज होती है। पैंक्रियाज से निकल रहे इंसुलिन के बारे में सन् 1922 में इस रसायन को अलग कर डायबिटीज की चिकित्सा का श्रेय वैज्ञानिक सरवेटिंग एवं वेस्ट को जाता है। उनके जन्म दिवस 14 नवम्बर सन् 1891 को विश्व डायबिटीज दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सन् 1995 में विश्व की डायबिटीज आबादी में 7वाँ व्यक्ति भारतीय था जबकि सन् 2025 में हर पांचवा डायबिटीज रोगी भारतीय होने का अनुमान है। डायबिटीज हार्मोंन की बीमारी है। शरीर में अतिरिक्त कैलोरी वसा के रूप में जमा होती रहती है जो शरीर को चयापचय (मेटाबोलिज्म) की कार्यप्रणाली को बिगाड़ता है, ऐसे में ग्लूकोज के स्तर को संतुलित रखने के लिये पैंक्रियाज में कम मात्रा में इंसुलिन बनती है या शरीर की कोशिकायें इंसुलिन के प्रति संवेदनशील नहीं रह जाती हैं जिससे मांसपेशियाँ ग्लूकोज को सोकने में असमर्थ रहती हैं। ग्लूकोज की बढ़ी मात्रा रक्त में मिल जाती हैं जिससे शरीर में कई तरह की परेशानियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

डायबिटीज मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

टाइप-1 मेलिटिस- इसमें पेशाब अधिक आती है व शुगर आती हे। यह इतनी तेजी से पसर रही है। जिसमें 1 से 20 वर्ष के बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं। यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करती है जिसमें पैंक्रियाज द्वारा इंसुलिन बनाना बंद हो जाता है। यह वंशानुगत होती है। इसके बारे में जागरूकता बहुत ही कम है।

टाइप-2 इंसिपिडस-इसमें पेशाब अधिक आती है किन्तु शुगर नहीं आती है जो गलत जीवन शैली, खानपान से होती है, करीब 95% रोगियों में यह डायबिटीज होती है।

टाइप-3- जेस्टेशनल- यह गर्भावस्था के दौरान होती है, जो डिलीवरी के कुछ समय बाद स्वतः ठीक हो जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ अकस्मात् डायबिटीज होती है जो समय पर ध्यान देने व जीवनशैली में बदलाव से ठीक हो जाती है।

आंत्रिक- यह अधिक मीठा खाने से पेशाब में शुगर आने लगती है क्योंकि रक्त में शुगर की मात्रा अधिक होने से किडनी प्रभावित होकर कार्यशीलता में कमी हो जाती है। यह मीठा नियंत्रण व जीवन शैली बदलाव से कुछ समय में ठीक हो जाती है।

मानसिक- कुछ व्यक्तियों में आघात, मय, क्रोध या पीड़ा के कारण पेशाब में शुगर आने लगती है जो- उपचार से स्वतः ठीक हो जाती है।

किडनी जन्य- यह लीवर, कब्ज व किड़नी में इन्फेक्शन के कारण होती है। नियंत्रण उपायों से ठीक हो जाती है।

डायबिटीज में 3 से 5 वर्ष में आंखें, हृदय, पैरों की नसें, पाचनतंत्र (आंते) किड़नी प्रभावित होती हैं। हड्डियों का घनत्व कम होने से जोड़ों की समस्या, फेक्चर, हाटअटेक, ब्रेन स्ट्रोक, ठीक न होने वाले फोडे, ग्रेंग्रीन, कार्बल, घाव शीघ्र न भरने, भूख प्यास अधिक लगना, कब्ज होना, वजन में कमी, शरीर में खुजली, पिंडलियों में दर्द वाएठा आना, हाथ पैरों में झुन झुनाहट, सुन्नपन या जलन

होना। पेट दर्द, चिकनाई युक्त स्टूल भोजन करने के बाद शौच की इच्छा होना, अनिद्रा बैठे-बैठे पसीना आना बैचेनी होना। प्रोस्टेट, कोलान, लीवर, ब्लड केंसर होना आदि। ध्यान रखें जरूरी नही है कि सारे लक्षण एक ही रोगी में पाये जावे। बीमारी की शुरुआत में लक्षण कम ही दिखते हैं।

डायबिटीज होने के प्रमुख कारण बहुत अधिक मीठा खाना, चाय काफी पीना, सेक्रीन का अधिक उपयोग, शराब, बियर, मानसिक तनाव, शारीरिक मेहनत कम करना,खेती में अन्धाधुन्ध रासायनिक खादों, खरपतवारी नाशी, पौध संरक्षण दवाईयों का उपयोग से खाद्य प्रदूषण, जल व वायु प्रदूषण भी जिम्मेदार है। छोटी-छोटी बीमारियों में घर के उपचार की जगह ऐलोपैथी दवाईयों का अधिक उपयोग।

डायबिटीज होने के दो प्रमुख कारण माने जाते हैं जेने टिक और मोडिफाइबल, जेनेटिक बदलाव नहीं बदल सकते हैं। 1. मोडिफाइबल बदलाव का आशय है खानपान व जीवन शैली जिन्हें बदलाव लाकर डायबिटीज से बचाव किया जा सकता है।

1. खानपान -संतुलित आहार- जल्दी पचने वाला आहार लेना, खूब पानी पीना, हरी रेशेदार सब्जियाँ, सरसों, सूरजमुखी, सोयाबीन तेल का उपयोग करना, गाय का दूध, देशी घी।

भोजन में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामिन व मिनरल का संतुलन रखना, गेहूँ की रोटी के साथ ज्वार, बाजरा, मक्का जौ आदि अनाज को मिलाकर आटा में फाइबर अधिक होता है, जिसमें वायु कम होती है व पचने में आसान होता है। दाल, दही, दलिया, छाछ पनीर लाभदायक है। शक्कर की जगह गुड़ का उपयोग करना चाहिये।

मौसमी फल 250ग्राम तक ले सकते हैं, जिसमें पके केले, अंगूर, चीकू, सीताफल को छोड़कर फल व सलाद भोजन से एक घंटा पूर्व लेना चाहिये। रात्रि में भोजन करने से व प्रोटीन लेने से बचना लाभदायक हैं क्योंकि शुगर लेबल बढ़ता है।

स्वाल्पाहार सुबह का, शाम का भोजन तय समय करना चाहिये देरी करने से हार्मोन्स संतुलन बिगड़ता है। इस तरह से शरीर में ऊर्जा का स्तर बढ़ा होने के साथ ही वजन नियंत्रित रहता है। भोजन अधिक नहीं खाना बल्कि दो-तीन घंटे के अंतराल में खाना चाहिये।

जीवन शैली- तनाव से मुक्त रहने हेतु ध्यान योग करना, समय पर सोना व उठना, अगले दिन की कार्यो की सूचि बनाकर समयबद्ध कार्य को गति देना चाहिये। बिना डॉक्टर की परामर्श लिये किसी भी प्रकार की ऐलोपैथी औषधि नहीं लेवें।

शारीरिक गतिविधि- प्रतिदिन 30-45 मिनट तक क्षमता अनुसार सैर करना, घूमना, साइकिल चलाना। दिनभर आउटडोर गतिविधियाँ करें छोटे छोटे कार्यो को पैदल चलकर करना। परिवार के कार्यों में सहयोग देना।

गुनगुने पानी से नहाना भी लाभदायक है। कुर्सी पर ज्यादा समय तक नहीं बैठना चाहिये।

यदि डायबिटीज की पुष्टि हो जाती है, इसके अतिरिक्त कोई बीमारी नही है तो 7-10 दिन में शुगर की जांच करना चाहिये। डायबिटीज नियंत्रण में नहीं है तो 4 दिन, यदि डायबिटीज के साथ दूसरी बीमारी है तो हर दूसरे दिन जांच कराना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर किडनी, पैक्रियाज क्षमता टेस्ट करना भी उचित है।

शंकायें- 1. डायबिटीज संक्रमक रोग नही है। 2. दुबले पतले लोगों को भी डायबिटीज हो सकती है। 3. आवश्यकता पड़ने पर इंसुलिन लेने के बाद इसकी लत लगना जरूरी नहीं है। 4. लम्बे समय तक डायबिटीज को अनदेशा करने से पाचनतंत्र, आंतों का संकुचन व फैलाव प्रभावित

होता है जिससे आँखों के रोग, किडनी, हृदय रोग संबधित दिक्कतें हो सकती है।

सावधानी-चीनी, नमक का कम मात्रा में उपयोग, ऊपर से दाल सब्जी में चीनी व नमक का उपयोग किडनी का क्षमता के अनुरूप करना चाहिये। देर रात्रि में भोजन नहीं करना, रात्रि में प्रोटीन युक्त चीजों का उपयोग नहीं करना। भोजन करने के बाद तत्काल नहीं सोना चाहिये। यदि महिला के प्रेग्नेंसी 30 वर्ष के बाद, वजन ज्यादा हो तो डायबिटीज की संभावना बढ़ जाती है। फैमेली में हिस्ट्री होने पर भी संभावना बढ़ जाती है जिन्हें ध्यान रखकर प्लानिंग करें। भोजन में अधिक कैलोरी ओर फास्टफूड़, प्रोटीन, तैयार बाहर का भोजन, सेक्रीन युक्त ठंडे पेय, चाकलेट, तेल मसाले की चीजें नहीं खायें।

डायबिटीज जीवनभर चलने वाला मीठा जहर है जो जड़ से खत्म नहीं होता है। शुरुआती अवस्था में ध्यान देने से संतुलित आहार, व्यायाम योग से नियंत्रित किया जा सकता है। डायबिटीज नियंत्रण हेतु आयुर्वेदिक, होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से समय पर उपचार से भी नियंत्रण पाया जा सकता है। अकस्मात् शुगर बढ़ने या घटने पर ऐलोपैथी पद्धति से उपचार कराना आवश्यक होता है।

स्वस्थ मन में स्वस्थ शरीर निवास करता है। चेहरे के साथ-साथ एक्सरा भी सुन्दर होना आवश्यक है। इस विश्व डायबिटीज दिवस पर इसी मंगल भावना के साथ सभी प्राणी निरोगी व सुखमय जीवन जियें।

कविता

सब स्वास्थ्य के है साथी

रचयिताः कांति कुमार जैन, करूण खिमलासा

सब स्वास्थ्य के हैं साथी, कोई नहीं है अपना।
जीवन जिये हैं अब तक, हम देख रहे हैं सपना ।।
किस को बनाये साथी, दिखते नहीं है कोई।
क्यों मोह से जुड़े हैं, औं आत्म हमारी रोयी ।।
क्या साथ में हैं लाये, इतना हमें है कहना।
सब स्वास्थ्य के हैं साथी, कोई नहीं हैं अपना ।।
था मेरे पास पैसा, तब पूछ थी हमारी।
जब था नहीं यह पैसा, तब छूट गयी है यारी ।।
दुख दर्द की कहानी, फिर किससे कहे है अपना।
सब स्वास्थ्य के हैं साथी, कोई नही हैं अपना ।।
है धर्म सच्चा साथी, इसकी शरण में आओं।
यह ही भला करेगा, महिमा इसी की गाओं ।।
परिणाम तब सफल हो, प्रभु नाम को ही जपना।
सब स्वास्थ्य के हैं साथी, कोई नही हैं अपना ।।
जीवन सफल तब होगा, सुख का ही मार्ग मिलेगा।
निज आत्म यह विभूति, अंतर से यह जगेगा ।।
फिर न करूण रहोगे, सुख शांति में ही रहना।
सब स्वास्थ्य के हैं साथी, कोई नही हैं अपना ।।

हास्य तरंग

1. एक प्रसिद्ध लेखक से पत्रकार ने पूंछा-आपको दिनचर्या किस प्रकार की रहती है। लेखक ने बताया-सुबह 4.30 पर उठता हूँ, नित्य क्रिया से निर्वत होकर घूमने निकल जाता हूँ फिर आकर योग आदि के बाद स्नान करके प्रभु पूजा करता हूँ फिर नाश्ता करके अखबार पढ़ता हूँ। दोपहर भोजन करने के बाद परिवार की जिम्मेदारी निभाने हेतु परिवार की आवश्यकता की पूर्ति सामान बाजार से खरीद कर घर पर सो जाता हूँ। पत्रकार यह जो आपके इतने बड़े लेख छपते हैं, इन्हें किस समय लिखते हैं। पत्रकार वह तो मैं अगले दिन लिखता हूँ।

2. दामाद ने विदेश से अपने कंजूस ससुर सेठी जी के लिये एक कोट भेजा जिसकी कीमत दो हजार थी किंतु कहीं उसकी फिजूल खर्ची से ससुर नाराज न हो जाये उसने कोट की कीमत पांच सौ रूपये लिखी। कुछ दिनों में दामाद को वाट्सप भेजकर-दस कोट और भेज दो मैंने उस कोट को एक हजार में बेच दिया है।

3. प्रियंका से उसकी सहेली से पूंछा कि तुम्हें भारत में कोई लड़का पसंद नहीं आया जो विदेश में शादी की। प्रियंका क्या करती मेरे मम्मी पापा ने बताया था कि हम सभी भारतीय भाई बहिन तो मैं क्या कर सकती थी।

4. भावित-बाजार सब्जी मंडी में टमाटर खरीदने जाता है। दुकानदार-टमाटर 40 रू. किलो में मिलेगा। भावित-भाव ज्यादा है, 30 रू किलो देना है तो दो किलो खरीदूगा। दुकानदार-इस भाव पर घर पर पड़ते हैं। भावित-मोबाइल निकालते हुए कहता है अपना मोबाइल व घर का पता बता दो वही से ले लूंगा।

5. नेताजी (डाक्टर से) मेरी टेस्ट रिर्पोट जरा मेरी भाषा में समझाने की कृपा करें। डॉक्टर-तो सुनिये रिपोर्ट अनुसार आपका बी.पी. घोटालों की तरह बढ़ रहा है, फेफड़े, झूठे आश्वासन दे रहे हैं, हृदय त्याग पत्र देने वाला है, कोरोना ने सी.बी.आई की तरह से घेरने वाला है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ गुरुदर्शन

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- 1. इसमें ब तथा स शेष खिलाड़ियों को पकड़कर रखेंगे। गुरु ही जाकर उन्हे आशीर्वाद देंगे। 2. सब खिलाड़ी मंडल में लंगड़ी स्थिति में रहेंगे। 3. अ गुरु बनकर एक ओर खड़ा रहेगा। उसके दो सहायक ब तथा स शेष को पकड़-पकड़कर गुरु के पास लायेंगे। गुरु उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें अपना शिष्य बना लेगा। अर्थात् वे खेल से बाहर हो जायेंगे। अ,ब तथा स भी लंगड़ी अवस्था में ही रहेंगे।

✻ अंधा चौकीदार

खिलाड़ियों की संख्या- 15-30

खेल वर्ग- मंडल/गोला वर्ग का खेल

खेल विधि- 50-60 से.मी. व्यास का एक मंडल बनाकर उसमें 10-15 पत्थर के टुकड़े। उसमें बचते हुए वे पत्थर उठाने हे जो स्वयंसेवक छुआ जायेगा या जो सबसे कम पत्थर उठायेगा। अब उसे चौकीदार बनना होगा।

✻ जय महावीर

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल में बैठकर सब 1,2,3 गिनती बोलेंगे। तीन से कटने वाले अंक (3,6,9,12) पर जय महावीर पांच से कटने वाले (5,10,15) पर जय महावीर तथा इन दोनों में से कटने वाले अंक (15,30,45) पर जय महावीर जय महावीर बोलना है। गलती करने वाले बाहर होते रहेंगे। एक चक्र पूरा होने पर अब उल्टी गिनती (100,99,98) बोलते हुए यही खेल होगा।

बाल कहानी

रूठी को मना लेंगे

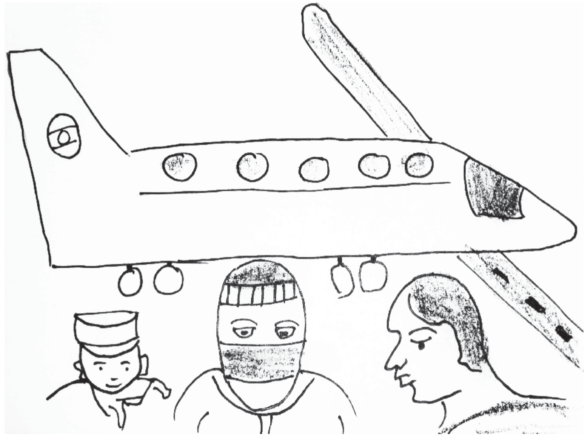

बिहार के सासाराम में एक नसीरूद्दीन नाम का व्यक्ति रहता था नसरू द्दीन कम पढ़ा लिखा था। किन्तु शादी उसकी एक विदेशी लड़की से हुई थी उसका नाम राफिया था कुछ दिन तक नसीरूद्दीन और राफिया का वैवाहिक जीवन बहुत अच्छे से चला किन्तु बीच में छोटी-छोटी सी बातों को लेकर दोनों के बीच नोक-झोंक शुरु हो गई। नसीरूद्दीन भी राफिया से ऊबने लगा। राफिया विदेशी महिला होने के कारण नसीरूद्दीन से जिस प्यार की अपेक्षा करती थी वह प्यार धीरे-धीरे कम होने लगा। तो राफिया ने भी मन अपने घर जाने का मन बना लिया रोज-रोज की नौंक झोंक से परेशान होकर एक दिन राफिया ने अपना बैग जमाया और निकल गयी। जब तक यह बात नसीरूद्दीन को पता लगी तब तक राफिया दिल्ली पहुँच चुकी थी। ओर वह इंदिरागांधी अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपने दुबई जाने की यात्रा की पूरा प्रबंध कर चुकी थी नसरूद्दीन ने मोबाईल सासाराम से लगाया तो राफिया को लग गया परन्तु राफिया ने अपनी नाराजगी जताते हुए कहा कि मैं दुबई जा रही हूँ अब वापस नहीं आ सकती मुझे मनाने का ढोंग न करो।

नसीरूद्दीन ने अपना दिमाग चलाया और दिल्ली पुलिस की स्पेशल पुलिस के लिये मोबाईल कर दिया कि मेरी पत्नी किदायनी आतंकी है और उसका नाम राफिया है उसके पास बम है आप चेक करें वह शायद दुबई या सऊदी अरब की फ्लाईट में मिलेगी पुलिस हरकत में आई कुछ ही मिनटों में राफिया के पास पहुंच गई। राफिया के पास कोई बम नहीं मिला इसके बाद पुलिस ने सासाराम पुलिस से संपर्क किया और नसरूद्दीन को गिरफ्तार कराया। जब पुलिस ने नसीरूद्दीन से पूछताछ की और पूछाकि तुमने ये झूठी सूचना क्यों दी तो उसने पुलिस से कहा मैं अपनी पत्नी राफिया को विदेश जाने से रोकना चाहता था इसलिए यह हथकण्डा अपनाया। मैं एक बार और राफिया को मनाने का प्रयास करूँगा। पुलिस अधिकारी जोर से ठहाका लगाकर हँसने लगा।

संस्कार गीत

वन्दे मातरम

वन्दे मातरम सब गानों में,
बड़ा गान हो सकता है
जिसने इसको छोटा आंका
वो कुर्सी खो सकता है
1.
क्रांतिकारी अरू बलिदानी ने
वन्दे मातरम बोला था
अंग्रेजों के लिये सदा ही
यह तो जलता शोला
वन्दे मातरम गाने वाला
देश भक्त हो सकता है
2.
तुष्टीकरण की नीतिचाल ने राष्ट्रगान को रोका
वोट बैंक की कुटिलचाल छह राष्ट्र भक्ति से धोका
राष्ट्रगान से द्रोह करें जो गद्दार कोई हो सकता
3.
भारत माँ सन्तानों ने वन्दे मातरम गाया है
इसी गीत के बल पर ही तो अंग्रेजों को भगाया
कोटी कोटी कंठो का यह मधुर गान हो सकता है।

बाल कविता

सुन्दर भाषा

हिन्दी सुन्दर भाषा है
जीवन की परिभाषा है
माध्यम हिन्दी से पढ़ते
जीवन वे सुन्दर गढ़ते
संस्कार अच्छे होते
पाप पंक अपना धोते
सरल सहज सुंदर भाषा
सत्य अहिंसा की आशा
करूण और प्रेम की भाषा
हिन्दी में है सुख का वासा
उन्नति का है एक आधार
हिन्दी भाषा शाकाहार

समाचार

समाधिमरण

बिलवा जयपुर-आचार्य श्री सुधर्मसागरजी महाराज का समाधिमरण 28 सितम्बर 2020 को सुधर्मनंग परिसर बिलवा जयपुर राजस्थान में हुआ।

णमोकार तीर्थ-आचार्यश्री देवनंदी जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्री स्वयंमति माताजी का समाधिमरण 11.10.20 रविवार को णमोकार तीर्थ में हुआ।

कुंभोज-मुनिश्री सुप्रभवसागरजी महाराज का समाधिमरण 29 सितम्बर 2020 को 08 बजकर 36 मिनट पर मुनिश्री सुयशसागर, मुनि श्री सुहितसागर, मुनिश्री पार्श्वसागर, मुनिश्री अजितसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कुंभोज में हुआ।

जावरा-आचार्यश्री प्रमुखसागर महाराज की शिष्या क्षुल्लिका समाधिमति माताजी का समाधिमरण 01 अक्टूबर 2020 प्रातः 6 बजे जावरा (म.प्र.) में हुआ।

मवाना-आचार्यश्री धर्मभूषण महाराज जी के शिष्य एलाचार्य श्री क्षमासागर महाराज जी का समाधिमरण 27 अक्टूबर 2020 को प्रातः 6.20 पर आचार्यश्री भारतभूषण महाराज के ससंघ सान्निध्य में मवाना (उ.प्र.) में हुआ।

विदिशा-मुनिश्री समतासागर महाराज जी के एवं एलकश्री निश्चयसागर महाराज जी के सान्निध्य में सात प्रतिमाधारी श्री उत्तमचंद्र जैन जैसीनगर वालो का समाधिमरण 25 अक्टूबर 2020 रविवार विजयदशमी के दिन प्रातः 11.40 पर शीतलधाम विदिशा में हुआ। आप एलक श्री निश्चयसागर महाराज जी के गृहस्थ अवस्था के पिताश्री थे।

ललितपुर-आचार्यश्री आर्जवसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दशम प्रतिमाधारी व्रतमति माताजी का समाधिमरण 10 अक्टूबर 2020 को क्षेत्रपाल ललितपुर में हुआ । आप ब्रह्मचारिणी मीना दीदी की मातेश्वरी थी।

दीक्षायें सम्पन्न

जावरा- आचार्यश्री प्रमुखसागरजी महाराज ने 70 वर्षीय शांति बाई गंगवाल जावरा को क्षुल्लिका दीक्षा 28 सितम्बर 2020 को दी जिनका नाम समाधिमति माताजी रखा गया।

बेलगांव- आचार्यश्री वर्धमानसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका दिव्यमति माताजी का समाधिमरण उनके ही ससंघ सान्निध्य में 06.10.20 रात्री 8.57 पर बेलगांव कर्नाटक में हुआ।

कुंभोज- मुनिश्री सुयशसागर जी तथा मुनिश्री सुहितसागरजी महाराज ने भूपाल बाबू चिपरे को 25 सितम्बर 20 को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कुंभोज में मुनि दीक्षा दी। जिनका नाम मुनिश्री सुप्रभवसागरजी महाराज रखा गया।

गांधीनगर, गुजरात- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से मंजूला बेन 16 अहमदाबाद को 10 अक्टूबर 2020 को

क्षुल्लिका दीक्षा दी जिनका नाम क्षुल्लिका सुविशुद्धमति माताजी रखा गया।

गांधीनगर, गुजरात- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से धीरज बेन शाह गांधीनगर एवं अरूणा बेन गांधी नगर को 25.10.20 को क्षुल्लिका दीक्षा दी जिनका नाम क्रमशः क्षुल्लिका सुपवित्रमति माताजी एवं क्षुल्लिका सुपावनमति माताजी रखा गया।

बोलखेड़ा- आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज के करकमलों से सुमन जैन मेरठ को 25.10.20 को क्षुल्लिका दीक्षा दी गयी जिनका नाम क्षुल्लिका पद्मनंदनी जी रखा गया।

ग्रंथ प्रकाशन में सहभागी बनें

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाश्रमण के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व को समाविष्ठ कर वृहत ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य चल रहा है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज के प्रवचनों के चयनित अंश, उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से संचालित मानव कल्याणकारी कार्यों, तीर्थोद्धार, मंदिर निर्माण व जीर्णोद्धार, राष्ट्र, संस्कृति, शिक्षा, स्वभाषा, संस्कार, शुद्ध आहार-विहार, सिद्धांतों आदि पर उनके विचार, विभिन्न अवसरों पर प्रकट किये गये उद्गारों, दिव्य-देशना के संबंधि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों की कटिंग, छायाचित्र, आचार्यश्री की पूजन, गीत, कविताएं, संस्मरण आदि जो भी प्रकाशित-अप्रकाशित सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे हम तक पहुँचाकर ग्रन्थ प्रकाशन के सहयोगी बने।

आचार्यश्री पर गीतकारों, भजन गायकों द्वारा रचित रचनाएँ, आडियो-विडियों की जानकारी देकर सहयोग करें।

यदि आपको या परिचितों को आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के संघस्थ क्षुल्लक, एलक, आर्यिका एवं मुनि महाराजों की पुरानी पिच्छी प्राप्त हुई हो तो उसकी जानकारी शीघ्र पहुँचायें।

आप अपनी सामग्री निम्न पते पर शीघ्र भेजकर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर गुरुसेवा का पुण्यार्जन करें।

यदि आपके यहां आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज अथवा संघ के किसी भी साधु के सान्निध्य में पंचकल्याणक हुआ है तो उसकी निम्न जानकारी भेजे । साधु, सान्निध्य, प्रतिष्ठाचारित्व, सौधर्म इन्द्र, ब्राह्म सुन्दरी तथा दिनांक हिन्दी महिने सहित।

ब्र. जिनेश मलैया
संपादक- सस्कार सागर
श्री दिग. जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड,
इन्दौर - 4520 10 (म.प्र.)
मो. : 8989505108, 6232967108
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

अभिनंदन सांधेलीय
पत्रकार
बाजार वार्ड, पाटन
जि. जबलपुर (म.प्र.) 483113
मो. : 94258 63244
7987208243
e-mail : abhinandan.sandheliya@gmail.com

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : नवम्बर 2020

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. उपाध्यायश्री अभिनंदनसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
02. उपाध्यायश्री आदीशसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
03. उपाध्यायश्री आत्मसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
04. उपाध्यायश्री श्रेयसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
05. उपाध्यायश्री गुप्तिसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
06. उपाध्यायश्री मयंकसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
07. उपाध्यायश्री रविनंदीजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
08. उपाध्यायश्री ऊर्जयंतसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
09. उपाध्यायश्री विप्रणतसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
10. बालाचार्यश्री सुव्रतसागरजी महाराज का चातुर्मास कहा हुआ ?
11. मुनिश्री चन्द्रसागरजी महाराज(गुरु आ. श्री विद्यासागरजी महाराज)का चातुर्मास कहा हुआ ?
12. मुनिश्री चंद्रप्रभसागरजी महाराज (गुरु आ. श्री विद्यासागरजी महाराज)का चातुर्मास कहा हुआ ?
13. गणिनी आर्यिकाश्री भरतेश्वरमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
14. गणिनी आर्यिकाश्री क्षेमश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
15. गणिनी आर्यिकाश्री क्षमाश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
16. गणिनी आर्यिकाश्री धर्मेश्वरीमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
17. गणिनी आर्यिकाश्री दृष्टिभूषण माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
18. आर्यिकाश्री दुर्लभमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
19. गणिनी आर्यिकाश्री गुरुनंदनीमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
20. गणिनी आर्यिकाश्री गौरवमती माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
21. गणिनी आर्यिकाश्री जिनदेवी माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
22. गणिनी आर्यिकाश्री मुक्तिलक्ष्मी माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
23. गणिनी आर्यिकाश्री लक्ष्मीभूषण माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
24. गणिनी आर्यिकाश्री सरस्वती माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
25. गणिनी आर्यिकाश्री शांतिमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
26. गणिनी आर्यिकाश्री सरस्वतीभूषण माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?

27. गणिनी आर्यिकाश्री सृष्टिभूषणमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
28. गणिनी आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषणमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
29. आर्यिकाश्री भावनामति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
30. गणिनी आर्यिकाश्री संगममति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
31. गणिनी आर्यिकाश्री सौभाग्यमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
32. गणिनी आर्यिकाश्री सौहार्दमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
33. गणिनी आर्यिकाश्री मुक्तिभूषण माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
34. गणिनी आर्यिकाश्री सुविधिमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
35. गणिनी आर्यिकाश्री श्रेयमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
36. गणिनी आर्यिकाश्री शुभमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
37. गणिनी आर्यिकाश्री सिद्धांतमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
38. ग. आर्यिकाश्री सम्मेदशिखर माताजी का (गुरु आ.श्री कुंथुसागरजी) चातुर्मास कहां हुआ ?
39. गणिनी आर्यिकाश्री सुप्रकाशमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
40. गणिनी आर्यिकाश्री सुभूषणमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
41. गणिनी आर्यिकाश्री सरस्वती माताजी (गुरु आ.श्री सन्मतिसागरजी) का चातुर्मास कहां हुआ ?
42. गणिनी आर्यिकाश्री सुविश्वासमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
43. गणिनी आर्यिकाश्री सोहार्दमति माताजी (गुरु गणिनी आर्यिका सुभूषणमति माताजी) का चातुर्मास कहां हुआ ?
44. गणिनी आर्यिकाश्री समतामति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
45. गणिनी आर्यिकाश्री समर्थमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
46. गणिनी आर्यिकाश्री सिद्धांतमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
44. गणिनी आर्यिकाश्री संस्कारमति (गुरु आ.श्री विद्यासागरजी) माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
44. गणिनी आर्यिकाश्री संस्कारमति (गुरु आ.श्री सिद्धांतसागरजी) माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
45. आर्यिकाश्री विशुद्धमति माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
46. गणिनी आर्यिकाश्री विमलप्रभा माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
47. गणिनी आर्यिकाश्री विद्याश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
48. गणिनी आर्यिकाश्री विशाश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
49. गणिनी आर्यिकाश्री विभाश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?
50. गणिनी आर्यिकाश्री विंध्यश्री माताजी का चातुर्मास कहां हुआ ?

50 प्रश्न संस्कार सागर अगस्त 2020 चातुर्मास विशेषांक से लिये गये हैं।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः नवम्बर 2020

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम ....स्थान ....

उम्र ....सदस्यता क्र. ....

पूर्ण पता ....

पिन कोड .... फोन नं..................... (एस.टी.डी.) ....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम .... हस्ताक्षर

नियम :– .... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 255

1	2		3	4	5		6	7
8		■	9			■	10	
11		12	■		■	13	■	
■	■	14		■	15		16	
17	18		■	19		■		■
20		■	21	■	22	23	■	24
	■	25		26	■	27	28	
29					■	30		
	■	31		■	32			■

ऊपर से नीचे

1. पांच नक्षत्रों का समूह जिस शुभ वर्जित हो -3
2. बातचीत, वार्ता -3
3. प्रवाह, एक सी गती -2
4. युगल जोड़ा एक शब्द अलंकार -3
5. शरीर का काला निशान -2
6. दिवस, वार -2
7. रक्षक, पहरेदार -4
13. लेसन -2
16. टहनी, डाली -2
17. गढ़ाकोटा के जैन अमर शहीद -5
18. अपावन, अपवित्र, अशुचि वस्तु -2
21. ग्वालियर के पास का शहर, मोक्षपुरी -4
23. जागरूकता -4
24. गिरावट, गिरना -3
25. महीन, बारीक -3
26. पुरूष -2
28. आभूषण -3

बाये से दाये

1. इंदौर शहर का एक मंदिर जहाँ से संस्कार सागर निकलती है। -9
8. चलने वाला, चैतन्य वस्तु -2
9. जोड़ा, युगल -3
10. नाखून -2
11. कचरिया, एक सब्जी -3
12. जलती हुई लकड़ी -1
14. हाथी, 36 इंच का टुकड़ा -2
15. स्कूल, शिक्षण संस्था -4
17. समुद्र, म.प्र. का एक जिला -3
19. ध्वनि नाद -2
20. राजस्थान का प्राचीन एक शहर, नुक्ती -2
22. रग रक्त वाहनी -2
25. वायु का पर्यायवाची -3
27. दुनिया विश्व संसार -3
29. उ.प्र. का एक जिला जिसमे देवगढ़ तीर्थ हो -5
30. गम्भीर, उदार -3
31. ठेला गाड़ी, माल ढोने वाली गाड़ी -2
32. पीड़ित करना, दुख देना, मारना, पीटना -3

वर्ग पहेली 254 का हल

1 अ	2 भि	म	3 न्यू	■	4 आ	स	5 मा	6 न
7 सा	ला	■	8 ज	9 रा	यु	■	10 ल	त
11 ता	ई	■	■	य	■	12 स	खा	■
■	■	13 गि	न्नी	■	■	14 गु	ना	15 ह
16 यो	17 ज	न	■	18 आ	19 न	न	■	नु
20 ग	ल	ना	■	■	ग	■	21 उ	मा
22 नि	ज	■	23 य	24 श	■	25 स	र	ल
रो	■	26 पा	म	र	■	27 ज	ग	■
28 ध	र	नी	■	29 म	ह	ल	■	30 सः

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

बादलों के बीच

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।

२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।

३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.

४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

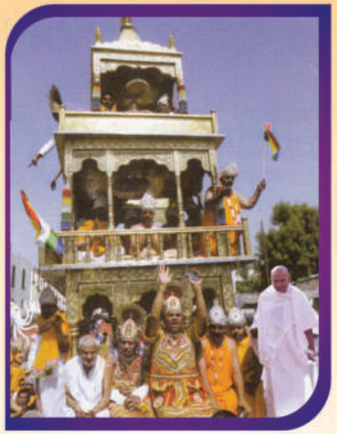

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/10/2020, पोस्टिंग दिनांक : 03/11/2020